ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक– १४०
सम्पादक एवं नियामक :
लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series Title No 140

SANT-VINOD

(*Anthology of Quotes*)

NARAYANPRASAD JAIN

Bharatiya Jnanpith
Publication

Second Edition 1966
Price Rs 2 50

प्रधान कार्यालय
६, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता–२७
प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी–५
विक्रय केन्द्र
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
द्वितीय संस्करण १९६६
मूल्य २ ५०

सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी–५

परम पूज्य

स्वामी श्री बालकृष्णदासजी साहबको

सादर और सप्रेम

प्रकाश-पुंज

सन्त अर्थात् मूर्तिमन्त आनन्द, विनोदमय विभूति। सन्तके शब्द जन-मनके लिए संगीत और सुगन्ध होते हैं। उनकी वाणीके मर्मका अन्तिम स्वरूप और लक्षण भी अखण्ड विनोद ही है। उस विनोदमय मर्मका सम्यक् ज्ञान ही सन्त-पद-प्राप्तिका रहस्य है। यानी आनन्द ही मंजिल है और आनन्द ही मार्ग है। यह सन्त-विनोद ऐसी ही विनोदमय सन्त-वाणीकी मन्दाकिनी है जो हमारे चित्तको शुद्ध, बुद्ध, संस्कृत और प्रमुदित करती जाती है।

उच्च संस्कृति दो प्रकारकी है—भद्र संस्कृति और सन्त संस्कृति। पहलीमें नीति-नियमका शासन मान्य होता है, तो दूसरीमें शुद्ध हृदयके अन्तर्नादका। एक प्रणालिकाकी प्रतिष्ठा बढ़ाकर लोगोंको नेकीकी ओर आकर्षित करती है, दूसरी स्पर्शमणिकी तरह हमारे अन्तरंगको स्वर्णिम बनाती है। भद्र-संस्कृति सौन्दर्यका परिचय कराती है, सन्त-संस्कृति सौन्दर्य-रूप बनाती है। शब्दमें छन्द मिल जानेपर शब्दको काव्यत्व प्राप्त होता है, पर शब्दमें तपके मिल जानेपर शब्दमें मन्त्रत्व प्रकट होता है। यह मन्त्रत्व ही परिवर्तक स्पर्शमणि है। यहाँ ऐसे मन्त्रत्व-प्राप्त विनोदको शब्द रूपमें प्रवाहित किया गया है। सन्त-विनोद सात्त्विकतासे ओत-प्रोत है, वह मानो मुक्त-हस्त तेजकण बखेरती हुई फुलझड़ी है। प्रकाशका हास्य फैलाते हुए इन तेजकणोंमें-से प्रत्येकमें समग्र पृथ्वीको हिला देनेका अमोघ सामर्थ्य है। यह वह प्रकाश है जिसके लिए मानव युगोंसे स्पष्ट-अस्पष्ट रीतिसे सिर पटकता आया है। इसकी क्वचित् झलकने भी उसे अपनी निगूढ़ गहराइयोंका दर्शन कराकर उसे 'घर आने' के लिए विह्वल बनाया

है, आसमानमें भगवान्‌को ढूंढती हुई नजरोंको दिलकी तरफ झुकाया है। वहाँ नया मार्ग दर्शाकर, मानो किसी गुफामे आता हुआ, गहरा नाद उससे कहता है

एष तव पन्थाः।

सन्त-विनोद मानो प्रकाशका जुलूस—'प्रोसेशन ऑफ लाइट' है। इसमे एकके वाद एक ज्योतिर्धर आत्मिक शुद्धता और पवित्रताके सादा और सरल जीवनकी सौन्दर्य-ज्योति हाथमें लिये नजरसे गुजरकर हृदयमें प्रवेश करते जाते है।

आकाशसे पृथ्वीपर खेलने आये हुए कौन हैं ये ज्योतिर्धर सितारे? जरा इनका दर्शन कर लें। अरे, यह तो कालातीत एकको समग्रमें विस्तारनेवाले और समग्रको एकमें समाहित कर लेनेवाले सर्वयुगीन महात्माओंकी कतार है!—वशिष्ठ विश्वामित्र, व्यास-शुकदेव, कृष्ण-अर्जुन, जनक एवं भीष्मके साथ बुद्ध, महावीर, शकराचार्य, श्रीमद्‌राजचन्द्र, गान्धीजी, विनोबा, रवीन्द्रनाथ टागोर, खलील जिब्रान, रामकृष्ण परमहंस और रमण महर्षि कृपा बरसा रहे हैं, सन्त ज्ञानेश्वर, नानक, एकनाथ, नामदेव और तुकारामके साथ सन्त वायजीद, हुसेन, ग़ज्जाली, मंसूर, हज़रत ग़ौसुल, हाजी मुहम्मद और सादिक़ भी शीतल चाँदनी फैला रहे हैं। आइन्स्टाइन, रामतीर्थ, विनोदी बर्नार्ड शॉ, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दयानन्द, रामशास्त्री और रानडे भी इस सन्त-समूहमे गुरु गोविन्द सिंह, उडिया बाबा और रविशकर महाराजके साथ स्मिति प्रसारित कर रहे हैं। इनके अलावा तत्त्वज्ञानके अन्य फव्वारे— सुकरात, डायोजिनीज, कन्फ्यूशियस और लाओत्से भी क्या इस क़तारमें नहो हैं? इन सबके दर्मियान प्रेमदीवानी मीरा और प्रणयमस्त रबिया प्रेमकी एक सर्वांग-सुन्दर संगीत-लहरी बनकर बह रही है। अरे, इस सन्त-मालामें तो दूर-दूरके सौदागर, बडे-बड़े खलीफा, भोज, जेम्स और हारूँ रशीद-जैसे बादशाहोंके

साथ माइकेल ऐंजेलो-जैसे कलाकार भी शोभायमान है, जीवन्मुक्तोंके साथ भक्त और भटकते भिखारी तक अभिनव रोशनी फेंक रहे हैं। और खूबी-की बात तो यह है कि इस प्रकाश-जुलूसकी पगडण्डीपर हिरन, बकरे, हंस, भौंरे, कुत्ते, बिल्ली, साँप, मेंढक और गर्दभ तक सन्तवाणीके माध्यम बने हुए हैं।

महज एक सौ अड़तीस पन्नोंके लघुपटमें इतने बड़े प्रकाश-जुलूसके विशाल विस्तारको समा लेना कोई मामूली काम नहीं है।

सन्देश? प्रकाशका सन्देश? उसे वाचा कैसी? वहाँ तो झलक होती है और हृदय उसे हृदयंगम कर लेता है। सन्त-विनोद की यह विनोद-प्रसादी भी उस झलकको हृदयंगम करनेका आमन्त्रण देती है। सूत्र-शैली-वालोंके लिए तो सन्तोंने सारी हकीकतको 'श्लोकार्ध' में भी कह दिया है। सत्यका सार तो यहाँ 'आखिरी उपदेश' (पृ० ६८), 'सात अवसर' (पृ० ५७), 'दो दोस्त' (पृ० ७०), 'सुख' (पृ० ८१) और 'दुनिया' (पृ० १३६) पर नज़र डालते ही मिल जायेगा। परन्तु ऐसे संक्षिप्त ज्ञानमें ही आनन्दकी पर्याप्ति होती तो 'एकोऽहं बहु स्याम्' की इच्छा ही क्यों जन्मती? इस सृष्टिकी लीला ही किसलिए होती? मौन या श्लोकार्ध-द्वारा प्रकटाये हुए परम तत्त्वके रहस्यको ही यहाँ आनन्दलीलाके तौरपर विभिन्न सन्दर्भोंमें, विभिन्न रूपोंमें, उद्घाटित किया गया है। इन्द्रधनुषके समान एक रंगीन ड्रामा इस सन्त-विनोद के मंचपर निहारा जा सकता है। यहाँ अनेकानेक तत्त्व जनगण समक्ष हाजिर होते हैं, अपना अभिनय दिखाते हैं और आखिर अपने महास्वरूपमें विलीन हो जाते हैं।

आइए, अब हम यहाँ झिलमिलाते हुए विषय-तारकोंकी प्रकाश-लिपि समझनेकी कोशिश करें।

सबसे पहले इस सन्तकी सुनिए जो एक श्वानके साथ बैठकर एक ग्रास उसे खिलाता और एक स्वयं खाता जा रहा है—

"तुम क्यों हँसते हो ? विष्णु विष्णुके पास बैठा है, विष्णु विष्णुको खिला रहा है। तुम क्यों हँसते हो विष्णु ? जो कुछ है विष्णु है।" (पृ०–२५)। साईं बाबा भी कह रहे हैं "कुत्ते और शूद्र—सबमें—परमात्माका वास है। भगवान् घट-घटमें परिव्याप्त है। उन्हें जानो" (पृ० १०३)। सबसे पहला सत्य यह है कि यह जगत् विष्णुमय है। लेकिन जब एक चोर चोरीके अपकृत्यके स्वार्थपूर्ण बचावके लिए उस सत्यका यूँ दुरुपयोग करता है कि 'मैंने तो भगवान्की प्रेरणासे ही, उसकी इच्छासे ही, चोरी की है,' तो उसे न्यायाधीश "उसी भगवान्की प्रेरणासे" सजा देता है (पृ०१३७)। इससे स्पष्ट है कि यह सर्वव्यापी विष्णुतत्त्व निःस्वार्थता, समता, मैत्री और प्रेमके पक्षमें है। स्वार्थ, अहंकार, द्वेष, संकुचितता, चालाकी या ढोंगकी परछाईं भी उसे सहन नहीं होती।

हाजी मुहम्मद तो एक बड़े साधु थे। लेकिन एक बार उन्होंने किसी नवागन्तुक धर्म-जिज्ञासुको दिखलानेके लिए ज्यादा देर तक नमाज पढ़ी। इस दिखलावेसे उनकी साठ वर्षोंकी नमाजका फल नष्ट हो गया (पृ० ११३)। परम सत्यको प्रदर्शनप्रियता लवलेश प्रिय नहीं है। पानीपर चलनेकी सिद्धि चमत्कारपूर्ण हो सकती है, परन्तु उसके लिए किया गया तप, परमात्माके लिए न होनेके कारण, भ्रामक बनकर रह जाता है (पृ० ११७)। छह खण्ड फ़तह करके भरत चक्रवर्ती अपना नाम वृषभाचल पर्वतपर सगर्व लिखने जाता है, लेकिन वहाँ इतने चक्रवर्तियोंके नाम लिखे हुए देखता है कि अपने नामके तीन अक्षर लिखनेकी भी जगह नहीं पाता। इससे उसका सारा गर्व खण्डित हो जाता है (पृ० १२८)। चक्रवर्तियोंके भी अभिमानके साथ सत्यकी ताल नहीं मिलती। मानकी तरह ही क्रोधको भी जीते बग़ैर भजनका अधिकार नहीं मिलता (पृ० ७१)। उसके लिए तो सदा सावधान रहना चाहिए। तभी 'समर्थ' बना जा सकता है (पृ० ८४)। रामके भक्तके लिए सीताके राम-विहीन रत्नजटित हारकी भी क्या कीमत है ? (पृ० ४३)। वैराग्यभाव ही परिवर्तक रसायन है :—

जम्बूकुमारको भरी जवानीमें अतुल सम्पत्ति और अनुपम सुन्दरी आठ रानियोंको त्यागते देखकर विद्युच्चर डाकू भी अपने पाँच सौ साथियों समेत साधु बन जाता है (पृ० ४८)।

इस प्रकारकी तीव्र अनासक्ति और वैराग्यके पीछे प्रभुका प्रेम अपना जादू दिखला रहा होता है। और जहाँ प्रेम है वहाँ अद्भुत शक्ति प्रकट होती है। देखिए, छह वर्षकी एक लड़की अपनी गोदमें अपने छोटे भाईको लिये पहाड़ीपर चढ़ रही है। कोई पूछता है—"यह लड़का तो तेरे लिए बहुत भारी है!" तो बोली—"बिल्कुल भारी नहीं है, यह तो मेरा भाई है" (पृ० ३९)। है न प्रेमका जादू! मीरा तो प्रेम दीवानी थी ही। उसी-जैसी प्रेमोन्मादिनी थी रबिया। उससे पैगम्बर पूछते हैं. 'रबिया, तू मुझसे प्रेम करती है?" और वह मदमाती जवाब देती है 'ओ खुदाके पैगम्बर, आपसे कौन प्रेम नहीं करता? लेकिन मैं ईश-प्रेमसे इतनी सरशार रहती हूँ कि किसी औरकी मुहब्बतके लिए गुंजाइश ही कहाँ?' (पृ०४५)। सुकरातको प्रेमपर बोलता सुनिए—"प्रेम ईश्वरीय सौन्दर्यकी भूख है, प्रेमी प्रेमके द्वारा अमरत्वकी तरफ बढ़ता है, विद्या, पुण्य, यश, उत्साह, शौर्य, न्याय, श्रद्धा और विश्वास ये सब उस सौन्दर्यके ही रूप हैं। आत्मिक सौन्दर्य ही परम सत्य है। और सत्य वह मार्ग है जो परमेश्वर तक पहुँचा देता है" (पृ० १०६)। अफलातून इस व्याख्याको सुनकर सुकरातका दीवाना हो गया। ऐसे उत्कट प्रेमसे प्रेरित व्यक्तिको कोई त्याग करते वक्त न तो कोई तैयारी करनी पड़ती है न कोई दुःख होता है (पृ०१४)। ऐसी सच्ची प्रेम दृष्टिको क्रियाकाण्ड (formalities) की परवा नहीं होती। इसीलिए नामदेवने भगवान्‌के अभिषेक-जलको प्यासे गधेको पिला दिया! जिसके हृदयमें दयाभाव और सहानुभूति नहीं है उसे अभिषेकसे क्या मिलनेवाला है? सहानुभूतिपूर्ण प्रेम ही स्वपर-कल्याणकारी होता है। वृक्षकी छाल उतारनेमें क्या दुःख होता है यह जाननेके लिए अपनी चमड़ी उतारकर देखनेवाला नामू, इस उत्कट सहानुभूतिके प्रतापसे, सन्त

नामदेव हो जाता है (पृ० १०९)। पुत्र कार्तिकेय-द्वारा बिल्लीके शरीर-पर की हुई लकीरका माता पार्वतीके गालपर उभर आना भी सर्वव्यापी जगदम्बाकी अनन्त महानुभूतिका ही द्योतक है (पृ० २४)।

जो बिल्लीका वदन है वही माताका गाल है, जो वृक्षकी छाल है वही अपनी चमडी है, जिस भगवान्के अभिषेकके लिए त्रिवेणी-जल सुरक्षित रखा है वह भगवान् ही प्याससे तडपता हुआ गर्दभ है, भूखा कुत्ता और शूद्र ही स्वयं साई बाबा है (पृ० १०२)। ऐसी समतायुक्त दृष्टि-द्वारा ही सहानुभूति विकसित होती है, प्रेम प्रकट होता है और उसकी मस्ती रोम-रोममें व्याप्त हो जाती है। और तब तो आत्मानन्दके 'घीके लोटे' के सामने देह सुखका 'छाछका लोटा' तुच्छ लगने लगता है (पृ० २०)। हाथ फैलाकर प्रभुसे भिक्षा माँगता हुआ सम्राट् भी तब एक भिखारीको भी अपने-जैसा भिखारी ही प्रतीत होता है (पृ० १२)। यह समता तो ठीक ही है, परन्तु साधुसे तो एक और दिव्यतर समताकी अपेक्षा रखी जाती है—उसके लिए 'मिला तो खा लिया, न मिला तो सन्तोष कर लिया' इतना ही काफी नहीं है, बल्कि यह कि 'मिला तो बाँटकर खाया, न मिला तो उसे तपस्याका अवसर बना दिया' (पृ० ११३)।

पर ऐसी शुद्ध बुद्धि आवे कैसे ? भीष्म-जैसी हस्तीकी भी बुद्धिकी शुद्धि तब हुई जब दुर्योधनके अन्नसे बना हुआ तमाम दूषित रक्त अर्जुनके बाणों-द्वारा निकल गया (पृ० ७८)। गुबरीला जबतक अपने गलेमें ठुसी हुई मलकी घुण्डीको उगल नहीं देता तबतक उसे फूलोंकी खुशबू आ कैसे सकती है ? (पृ० २२)। सत्संगकी पवित्रताके सस्पर्शसे अशुद्धता और क्षुद्रताके दूर हो जानेपर मनुष्यको प्रकाश और विशालता प्राप्त होती है। तब वह प्रभुका बनता है, प्रभुमय बनता है और उसका संगीत प्रभुके लिए प्रयोजित होता है जिसकी बदौलत हरिदासोंके गलोंमें ऐसा अनुपम माधुर्य प्रकट होता है जो बादशाहोंके लिए गानेवाले तानसेनोंको कभी नसीब नहीं हो सकता (पृ० १२)।

श्री नारायणप्रसादजीने, जो कि इससे पूर्व ज्ञानगंगा की दो धाराएँ प्रवाहित कर चुके हैं, ऐसे परम प्रेमानन्दकी मस्तीका विविधरंगी दर्शन इस सन्त-विनोदमे कराया है। 'विष्णुमय जगत्' (पृ० २५) में ब्रह्ममय जगत्की और 'मायावी ससार' (पृ० ९१) की रूपकथा-द्वारा भ्रममय जगत्की छवि दिखलाकर उसकी बन्धनमूलक अर्वाचीन सभ्यताके भी दर्शन कराये है (पृ० ९२) और यूँ मुक्तात्माओके मुक्तानन्दको यहाँ मुक्त रूपसे प्रवाहित किया है और साथ ही खलील जिब्रानके इस महान् वचन-को सार्थक कर दिखाया है कि—

"The fresh song comes not through bars and wires"

जनसुख निवास,
कांदीवली, बम्बई

—(आचार्य) चिमन भाई दवे

विषय-क्रम

सन्त-विनोद

●

उम्र

किसीने संत वायजीदसे पूछा—'आपकी उम्र क्या है?'

आपने जवाब दिया—'चार साल'।

वह आदमी चुप हो गया। वायजीदने समझाया—'मेरी जिन्दगीके सत्तर साल दुनियवी प्रपंचमें गुज़र गये। सिर्फ चार बरससे उस प्रभुकी तरफ देख रहा हूँ। ज़िन्दगीका जितना वक्त उसके नज़दीक बीता है वही जीवन-काल है।'

सावधान !

संत हुसेनने एक बदमस्त शराबीसे कहा—

'भाई! क़दम सँभाल-सँभालकर रखो, वर्ना गिर जाओगे।'

शराबी बोला—'मुझे क्या, आप अपनेको समझाइए। सब जानते हैं कि मैं पीता हूँ और बेख़बर भी हो जाता हूँ। गिर जाऊँगा तो नहाकर साफ हो जाऊँगा। मगर कहीं आपके पैर डगमगाये तो आप कहीके नहीं रहेंगे।'

सुनकर हुसेन सावधान हो गये।

सुरक्षा

एक सौदागरके पास बडी ही खूबसूरत दासी थी। एक बार उसे बाहर दौरेपर जाना था। पर यह नहीं तय कर पा रहा था कि दासीको किसके यहाँ छोड जाये। एक सज्जनने मशवरा दिया कि उसे सन्त यूसुफ-के पास छोड जाये।

जब वह सन्त यूसुफ़के नगर पहुँचा तो उसने वहाँके निवासियोसे उनके चरित्रके खिलाफ़ बहुत-सी बातें सुनी। इसलिए वह निराश होकर अपने गाँव लौट आया। पर उसी सज्जनने सन्त यूसुफके निर्मल आचरणकी तारीफ करके उन्हें ही सर्वोत्तम व्यक्ति बतलाया। लाचार वह फिर वहीं पहुँचा। लोगोंने सन्तकी निन्दा करके उसे फिर बरगलाया। मगर वह दृढतापूर्वक सन्तकी कुटियापर जा पहुँचा। वहाँ उनसे धर्मोपदेश सुनकर वह बडा प्रभावित हुआ। बोला—'आपका ज्ञान-वैराग्य विलक्षण है, मगर आप यह बोतल और प्याला क्यो रखते है? इनसे लोग आपके शराबी होनेकी कल्पना करके बदनामी करते हैं।'

यूसुफने कहा—'मेरे पास पानीके लिए कोई बरतन नहीं था, इसलिए यह बोतल और प्याला रख लिया है।'

'पर बदनामी तो इसीसे होती है!'

'इसीलिए तो मैंने यह बोतल और प्याला रख छोडा है। बदनामीकी वजहसे ही कोई मेरे पास नहीं आता। बेफ़िक्रीसे खुदाकी इबादतमें लगा रहता हूँ। अगर मैं मशहूर हो जाऊँ तो मेरे पास कोई सौदागर अपनी सुन्दर दासी न रख दे? देखा कितने फ़ायदेमें हूँ!'

अक्रोध

एक बार किसी गृहस्थके यहाँ एक स्याहपोश अतिथि आया।

गृहस्थने नाखुशीसे पूछा—'तुमने ये काले कपडे क्यो पहन रखे है?'

'मेरे काम, क्रोध आदि मित्रोंकी मृत्यु हो गयी है। उन्हींके शोकमें ये काले वस्त्र धारण किये हैं,' अतिथिने जवाब दिया।

गृहस्थने अपने नौकरको हुक्म दिया कि इस अतिथिको घरसे बाहर निकाल दो। नौकरने फौरन् आज्ञाका पालन किया।

थोड़ी देर बाद उसने अतिथिको वापस बुलवाया। मगर पास आने-पर फिर निकलवा दिया। इस तरह सत्तर बार अपमान करके उसे निकलवाया। लेकिन अतिथिकी शक्लपर गुस्से या रंजकी कोई अलामत नमूदार नहीं हुई।

अन्तमें गृहस्थने अतिथिकी वन्दना की, और विनयपूर्वक कहा—'आप सचमुच क्षमावान् हैं। मैंने आपको गुस्सा दिलानेकी बहुत कोशिशें की, मगर आप बिलकुल शान्त रहे। आपने सचमुच क्रोधपर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है ''।'

अतिथि बोला—'बस करो, बस करो। ज्यादा तारीफ न करो। मुझसे ज्यादा क्षमाशील तो कुत्ते होते हैं जो हजारों बार बुलाने और दुत्कारनेपर भी बराबर आते-जाते रहते हैं। कुत्ते भी जिसका पालन कर सकें उसमें प्रशंसाकी कौन-सी बात है?'

सुलतान

बादशाह बननेके बाद किसीने हसनसे पूछा—'आपके पास न तो काफी धन था न सेना, फिर आप सुलतान कैसे हो गये?'

हसनने जवाब दिया—'मित्रोंके प्रति सच्चा प्रेम, शत्रुके प्रति भी उदारता और हर एकके प्रति सद्भाव क्या सुलतान बननेके लिए काफी नहीं है?'

संगीत

अकबर तानसेनके गुरु श्री हरिदासका गाना सुननेके लिए बड़ा उत्सुक था, लेकिन उनके दिल्ली आनेकी उम्मीद तो थी ही नहीं और न यह उम्मीद थी कि वृन्दावनमें भी वह अकबरके सामने गायेंगे। तानसेनने एक रास्ता निकाला, बादशाह साधारण वेशमें वृन्दावन पहुँचे और हरिदासजीकी कुटियाके बाहर छिपकर बैठ गये। तानसेन अन्दर जाकर अपने गुरुके सामने गाने लगे। तानसेनने गानेमें कहीं जान-बूझकर भूल कर दी। शिष्यकी भूल सुधारनेके लिए हरिदास गाने लगे। इस तरह सम्राट् अकबरकी इच्छा पूरी हुई।

उसके बाद एक बार दिल्लीमें तानसेनके गानेपर अकबरने कहा—'तानसेन, तुम अपने गुरुके समान क्यों नहीं गा सकते? उनका स्वर-सौन्दर्य तो कुछ और ही था!'

तानसेन नम्रतापूर्वक बोले—'जहाँपनाह! इसकी वजह यह है कि मैं हिन्दुस्तानके बादशाहके लिए गाता हूँ और वे गाते हैं सारी दुनियाके मालिकके लिए।'

भिखारी

एक फकीर बादशाह अकबरके पास आया। देखा कि नमाजके बाद बादशाह दुआ माँग रहा है—'या खुदा! मुझपर रहम कर। मेरा खजाना भरा रहे।' फकीर यह सुनकर चल पड़ा। तभी बादशाह-की दुआ खत्म हुई, उसने लौटते हुए फकीरको बुलवाया और आकर यूँ ही चल देनेकी वजह पूछी। फकीर बोला—

'मैं तुझसे कुछ माँगने आया था। मगर देखता हूँ कि तू भी किसीसे माँगता है। जिससे तू माँगता है उसीसे मैं भी माँग लूँगा। तुझ भिखारी-से क्या लूँ?'

प्रजा-सेवक

बगदादका एक खलीफा राज-कार्य और प्रजाकी सेवाके बदलेमें हर रोज शामको सिर्फ तीन दिरम ले लिया करता था। हालाँकि और राज-कर्मचारियोंका वेतन इससे कहीं ज्यादा था, मगर खलीफा अपने लिए तीन दिरम ही काफी समझते थे।

एक बार उनकी बेगमने उनसे प्रार्थना की—'अगर आप मुझे तीन दिनकी तनख्वाह पेशगी दे दें तो मैं ईदपर बच्चोंके लिए नये कपडे बना लूँ।'

खलीफा बोले—'अगर मैं तीन दिन जीता न रहा तो यह कर्ज़ा कौन चुकायेगा ? तुम खुदासे मेरी ज़िन्दगीके तीन दिनका पट्टा ला दो तो मैं खज़ानेसे तीन दिनकी तनख्वाह पेशगी उठा लूँ।'

धोखेबाजी

नावेर नामक एक अरब सज्जनके पास एक बढिया घोडा था। दाहर नामके एक आदमीने उन्हें कई ऊँट देकर बदलेमें घोडा लेना चाहा, लेकिन नावेरको वह घोडा बहुत प्यारा था, इसलिए उन्होंने उसे देनेसे इनकार कर दिया। दाहरके मन घोडा बहुत चढ गया था, इसलिए उसने उसे हथियानेकी एक तरकीब सोची। वह रोगी फकीरका भेस बनाकर नावेरके रास्तेमें बैठ गया। जब नावेर अपने घोडेपर सवार होकर उधरसे गुज़रे तो उन्हें फकीरकी हालतपर दया आयी। अगले गाँव तकके लिए उसे घोडेपर चढ जाने दिया और खुद पैदल चलने लगे। घोडेपर सवार होते ही दाहरने चाबुक मारकर घोडेको दौडाते हुए कहा—'तुमने खुशीसे घोड़ा नही दिया तो मैंने चतुराईसे ले लिया!'

नावेरने पुकारकर उससे कहा—'खुदाकी मर्ज़ीसे तुमने मेरा घोडा इस तरह ले लिया है तो जाओ ले जाओ। इसकी खूब सार-सँभाल

रखना। पर अपनी इस धोखेबाजीकी बात किसीसे न कहना। वर्ना लोग जरूरतसे ज्यादा चौकन्ने हो जायेंगे और जरूरतमन्दोकी मदद करनेमें हिचकने लगेंगे और इससे बहुत-से दीन-दुखियोको मदद न मिल पायेगी।'

नावेरको इस बातसे वह बहुत शरमाया और उसी वक्त लौटकर उन्हें घोडा लौटा दिया और उनसे सदाके लिए दोस्ती कर ली।

लंगोटी

कस्तूरबाने किसी गाँवमें किसान औरतोको रोज अपने कपडे धोने और सफाई रखनेका उपदेश दिया। एक गरीब किसानकी औरत, जिसके कपडे निहायत गन्दे थे, कस्तूरबाको अपनी झोपडीमें ले गयी और बोली—'माताजी, देखिए मेरे घरमें कुछ नहीं है। बस, मेरी देहपर यह एक ही धोती है। अब आप ही बताइए मैं क्या पहनकर इसे धोऊँ?'

कस्तूरबाने इसका जिक्र गान्धीजीसे किया। उनपर इसका बडा प्रभाव पडा। बोले—'इस तरहकी तो देशमें लाखो बहने होगी। जब उनके पास तन ढकनेको कपडे नहीं हैं तो फिर मुझे कुरता, धोती, चादर रखनेका क्या हक़ है?'

बस, तभीसे उन्होने सिर्फ लगोटी पहननी शुरू कर दी।

वैराग्य

एक स्त्रीको मालूम हुआ कि उसका भाई कुछ दिनों बाद दीक्षा ले लेना चाहता है, इसलिए वह अपनी सम्पत्तिकी व्यवस्था करनेमें लगा हुआ है। उसने अत्यन्त चिन्तित होकर पतिको यह हाल सुनाया।

पति हँसकर बोला—'फिक्र न करो, तुम्हारा भाई दीक्षा नही लेगा।'

स्त्री बोली—'आप तो हँसते है, मुझे यह रंज खाये जा रहा है कि उसके चले जानेपर उसकी कच्ची गृहस्थीका क्या होगा !'

पति—'भई ! त्याग-वैराग्यकी लम्बी तैयारी नही करनी पडती, वह तो सहज और एकदम होता है। देख ! इस तरह—' यह कहते हुए वह सब कुछ छोडकर सीधा वनको चला गया और फिर कभी न लौटा।

शोभा

रामशास्त्री पेशवा माधवरावके गुरु थे, मन्त्री थे और राज्यके प्रधान न्यायाधीश थे। फिर भी निहायत सादगीसे एक मामूली घरमें रहते थे।

किसी पर्वके समय उनकी पत्नी राजभवनमें गयी। उनकी अत्यन्त साधारण वेषभूषा देखकर रानी चकित रह गयी। रानीने उन्हे वेशकीमती कपडे और रत्नजटित गहने पहनाये।

विदाके वक्त उन्हे पालकीमें भेजा। पालकी रामशास्त्रीके घर पहुँची। कहारोने दरवाजा खटखटाया। द्वार खुला और फौरन् बन्द हो गया। कहार बोले—'शास्त्रीजी, आपकी धर्मपत्नी आयी है, दरवाजा खोलिए।'

शास्त्रीजी बोले—'वस्त्राभूषणोसे सजी हुई ये कोई और देवी हैं। मेरी ब्राह्मणी ऐसे कपडे और गहने नहीं पहन सकती। तुम लोग भूलसे यहाँ चले आये हो।'

शास्त्रीजीकी पत्नी अपने पतिदेवके स्वभावको जानती थी। उन्होने कहारोंसे लौट चलनेके लिए कहा। रनवासमें आकर रानीसे कहा—'इन वस्त्र और आभूषणोने तो मेरे घरका ही द्वार मेरे लिए बन्द करा दिया।'

सब कपडे, गहने उतारकर और अपनी साडी पहनकर पैदल घर लौटी।

शास्त्रीजी बोले—'कीमती गहने और कपडे या तो राजपुरुष शोभाके लिए पहनते है या मूर्ख अपनी मूर्खता छिपानेके लिए पहनते हैं। सत्पुरुषोकी शोभा तो सादगीसे ही है।'

क्रोध

एक साधुजी किसी भंगीसे छू गये। चिल्लाये—'अन्धा हो गया है, देखकर नहीं चलता, अब मुझे फिर स्नान करना पड़ेगा !'

भंगी हाथ जोड़कर बोला—'महाराज ! स्नान तो मुझे करना पड़ेगा।'

'तुझे क्यों स्नान करना पड़ेगा ?'

'सबसे अपवित्र चाण्डाल तो क्रोध है। उसने आपके अन्दर घुसकर मुझे छू दिया है। इसलिए मुझे नहाकर पवित्र होना पड़ेगा।'

साधुजी शर्मसे पानी-पानी हो गये।

कुसंग

रोमके एक चित्रकारने एक बालकका चित्र बनाया ! उससे सरलता, सौम्यता और शान्ति बरसी पड़ती थी। चित्रका सर्वत्र स्वागत हुआ और चित्रकारकी बड़ी ख्याति फैली।

अब उसने एक ऐसे व्यक्तिका चित्र बनाना चाहा जो कि धूर्त, क्रूर और स्वार्थी हो। बड़ी तलाशके बाद उसे ऐसा भी एक आदमी मिल गया। और चित्र बन गया।

एक रोज एक शख्स इन दोनों चित्रोंको कहीं एक साथ देखकर ज़ार-ज़ार रोने लगा। किसीने पूछा—'भाई, रोते क्यों हो ?'

उसने जवाब दिया—'ये दोनों चित्र मेरे ही हैं ! पूर्व अवस्थामें मेरा वह दिव्य रूप था, कुसंगने मुझे इस दुरवस्थाको पहुँचा दिया !'

दुनिया

एक बूढ़ा और उसका लड़का अपने गधेको साथ लिये किसी गाँवको जा रहे थे।

रास्तेमें कुछ आदमी मिले। उनमें-से एक अपने साथियोंसे कहने लगा—'देखा ? ये लोग कैसे वेवकूफ हैं—गधा साथ है मगर दोनो पैदल जा रहे हैं"

यह सुनकर वूढा गधेपर सवार हो गया।

कुछ दूर गये होंगे कि कोई राहगीर वोला—'इस वुड्ढेको देखो ! खुद तो सवार है, लडका पैदल चल रहा है !'

यह सुनकर वूढा उतर पडा और उसने लडकेको गधेपर बैठ जानेके लिए कहा। लडका सवार हो गया।

रास्तेमें फिर किसीने कहा—'इस लडकेको देखो कैसा वदतमीज है ! खुद सवारी गाँठे हुए है और वूढा पैदल घसिट रहा है !'

यह सुनकर दोनो गधेपर सवार हो लिये। फिर कोई पथिक मिला वह बोला—'ये कैसे क्रूर हैं ! दुर्वल मूक पशुपर दो-दो लाशें सवार हैं ! इन्हें जरा भी दया नहीं है।'

अव उन्होने गधेके आगे-पीछेके पैर वांधे और एक डण्डेकी मददसे उसे अपने कन्धोपर लेकर आगे चले। रास्तेमें वे एक नदीके पुलपर-से गुजरे। पुलपर आने-जानेवाली गाडियोकी भीड थी। किसीका धक्का जो लगा कि तीनो नदीमें जा पडे और इस तरह उनकी जलसमाधि हो गयी।

सारी दुनिया और उसके वापको भी खुश करनेकी कोशिश करनेवालोकी यही दशा होती है।

पर-दु:ख

एक राजकुमारकी शिक्षा पूरी हो गयी थी। महाराज उसे गुरुके आश्रमसे लिवा ले जाने स्वयं आये।

गुरुने कहा—'राजन् ! इसकी शिक्षा पूरी हो गयी है, सिर्फ एक सबक देना वाकी है। वह अभी पूरा हुआ जाता है।'

यह कहकर गुरुजीने एक कोडा लिया और राजकुमारकी पीठपर सडाक-सडाक दो जड दिये और बोले—'जाओ वत्स, तुम्हारा कल्याण हो।'

राजाने आचार्यसे पूछा—'अपराध क्षमा हो, मगर राजकुमारका यह ताडन मेरी समझमे नही आया, गुरुदेव।'

गुरु बोले—'इसे शासक बनना है। दूसरोको दण्ड भी देगा। इसे मालूम होना चाहिए कि मारकी तकलीफ कैसी होती है।'

दया

एक आदमी किसी जंगलमें-से जा रहा था। वहाँ उसे एक हिरनी और उसका बच्चा दिखाई दिया। वह उनके पीछे पडा। हिरनी तो भाग गयी, पर बच्चा पकड लिया गया। वह उसे लेकर चला। हिरनी भी आकर ममतावश रोती हुई उसके पीछे-पीछे चलने लगी। आदमीको दया आ गयी, उसने बच्चेको छोड दिया। बच्चा छूटते ही छलांग मारता हुआ माँके पास पहुँचा। हिरनी मूक आशीर्वाद देती हुई खुशी-खुशी बच्चेके साथ लौट आयी।

रातको उस आदमीने सपनेमें देखा—कोई उससे कह रहा है, 'इस दयाके लिए तुम्हें बादशाही मिलेगी।' वह आगे चलकर गजनीका बादशाह हुआ।

रिश्तेदार

एक महात्माने एक सत्संगी युवकको समझाया—'केवल परमात्मा ही अपना है। दुनियामें और कोई किसीका नहीं। माँ-बापकी सेवा और बीवी-बच्चोंका पालन-पोषण कर्तव्य समझकर करना चाहिए। मगर मोहवश उनमें आसक्ति रखना उचित नहीं।'

युवक बोला—'परन्तु भगवन्! मेरे माता-पिता मुझे इतना स्नेह करते हैं कि एक दिन घर न जाऊँ तो उनकी भूख-प्यास उड जाती है, नींद हराम हो जाती है। और मेरी पत्नी तो मेरे बगैर जिन्दा ही नही रह सकती।

महात्माने उसे परीक्षा करके देखनेकी युक्ति बतलायी।

वह घर जाकर पलँगपर चुपचाप लेट गया। प्राणवायु मस्तकमें चढाकर वह निश्चेष्ट हो गया। घरवाले उसे मरा समझकर रोने-पीटने लगे। लोग जमा हो गये।

उसी समय महात्माजी आ पहुँचे। उन्होने कहा—'मै इसे जिन्दा कर सकता हूँ। एक कटोरी पानी लाओ।'

घरके लोग साधुके चरणोमे लोटने लगे। पानी लेकर महात्माजीने कुछ मन्त्र पढे और कटोरीको युवकके ऊपर घुमाकर बोले—'अब इस पानीको कोई पी जाये। पीनेवाला मर जायेगा और युवक जी जायेगा।'

मरे कौन? सब एक दूसरेका मुँह देखने लगे। पडोसी और दोस्त वगैरह धीरे-धीरे खिसक गये।

पिता, माता और पत्नीने लम्बे-चौडे बहाने बना दिये। 'तो मै पी लूँ यह पानी?' साधुने पूछा।

सब घरवाले बोल उठे—'आप धन्य हैं। महात्माओका जीवन तो परोपकारके लिए ही होता है। आप कृपा करें। आप तो मुक्तात्मा हैं। आपके लिए तो जीवन-मरण समान है।'

युवकको अब कुछ देखना-सुनना नही था। उसने प्राणायाम समाप्त कर दिया। बोला—'भगवन्! आपके लिए पानी पीना जरूरी नही है। आपने आज मुझे सचमुच जीवन दे दिया है—प्रबुद्ध जीवन।'

तोशा

एक भौंरा किसी गुबरीलेसे बोला—

'तुम देखनेमें मुझ-जैसे लगते हो, तुम्हें गोबरका आहार-विहार करते देख मुझे कष्ट होता है। मेरे बागमें चलो। वहाँ फूलोकी खुशबूसे तुम्हारा दिमाग मुअत्तर हो जायेगा। फिर तुम इस गोबरकी दुनियाका कभी नाम भी न लोगे। इस नरकको छोड़ो। चलो, मैं तुम्हें अपने स्वर्गमें ले चलूँ।'

गुबरीला सशंक होकर बोला—'ना भाई! इस मोहनभोगसे बढकर भी क्या कहीं कोई दिव्यतर पदार्थ हो सकता है? मुझे बेवकूफ न बनाओ। जाओ अपना काम देखो।'

भौंरेने करुणावश उससे बहुत अनुरोध किया। आखिर गुबरीला रजामन्द हो गया। उसने तोशा लिया, और यह सोचकर कि गुलशन पसन्द तो क्या आनेवाला है आखिर लौट तो आना ही है, भौंरेके साथ हो लिया।

भौंरेने अपने पुष्पोद्यानमें पहुँचकर रंग-बिरंगे, सुन्दर-सुन्दर, तरह-तरहकी ख़ुशबूवाले फूलोंकी सैर करायी। मगर गुबरीलेका उदास चेहरा प्रसन्न न हुआ।

भौंरेको इसकी वजह समझते देर न लगी। आखिर बोला—'भाई! तुमने अपने गलेमें जो गोबरकी घुण्डी दबा रखी है, पहले उसे उगल दो, तभी फूलोंकी ख़ुशबू ले सकोगे।'

समता

एक आदमी सन्त मेकेरियसके पास आकर विनयपूर्वक बोला—'महाराज, मुझे मुक्तिका मार्ग बताइए।'

सन्त—'कबरिस्तानमें जा और सब कबरोको गाली देकर आ।'

आदमीने वैसा ही किया। दूसरे दिन सन्तने उसे सब कबरोकी स्तुति कर आनेके लिए कहा। आदमीने इस आज्ञाका भी पालन किया। तब सन्तने उससे पूछा—'किसीने तेरी गाली या स्तुतिके जवाबमें कुछ कहा?'

'किसीने कुछ नही भगवन्!'

'तू मरणशील भी सब लोगोके बीच मान-अपमानसे अलिप्त रह। यही मुक्तिमार्ग है।'—सन्त बोले।

दोष-दर्शन

गान्धीजीके किसी आश्रमवासीसे कभी कोई दुराचार हो गया। किसी दूसरेने इसकी शिकायत गुमनाम पत्र लिखकर गान्धीजीसे की।

उस दिन प्रार्थनाके बाद गान्धीजी गम्भीर होकर बोले—'एक तो ऐसे विषयमें गुमनाम खत लिखना गलत है। दोयम, किसीके पापकी ओर अँगुली उठाते वक्त याद रखना चाहिए कि बाकीकी तीन अँगुलियाँ अपने दिलकी तरफ होती हैं।'

आनन्द-प्राप्ति

एक धनिक अमेरिकन स्त्री स्वामी रामतीर्थके पास आकर बोली—'महाराज! मेरा इकलौता बेटा मर गया है। मै घोर दुःखी रहती हूँ। कृपया मुझे आनन्द-प्राप्तिका मार्ग बताइए।'

स्वामी राम—'आनन्द मिल जायेगा, मगर तुम्हें उसकी कीमत अदा करनी पडेगी।'

स्त्री—'पैसेकी मेरे पास कमी नही। आप जो कीमत कहें मै अदा करनेको तैयार हूँ।'

बापूकी उदारता

चम्पारनके एक गाँवमें एक दिन देवीको भेंटके लिए एक बकरेको फूल-मालाओंसे सजाकर जुलूसमें निकाला जा रहा था। भाग्यसे उस रोज गान्धीजी भी उसी गाँवमें थे। जब जुलूस गान्धीजीके निवास-स्थानके पाससे गुजरा तो गान्धीजी कुतूहलवश देखने बाहर निकले। यह सब देखकर पूछने लगे—

'इस बकरेको क्यों लाये हो?'

'देवीको भोग चढाने।'

'देवीको बकरेका भोग क्यों चढाते हो?'

देवीको प्रसन्न करनेके लिए।'

'बकरेसे आदमी अच्छा है न?'

'हाँ जी।'

'तो अगर हम आदमीका भोग चढायेंगे तो देवी ज्यादा खुश होगी न? है कोई आप लोगोंमें देवीको प्रसन्न करनेके लिए तैयार? अगर कोई न हो तो मैं तैयार हूँ।'

लोग एक दूसरेके मुँहकी तरफ देखने लगे। क्या जवाब दें कुछ सूझ नहीं पड़ रहा था।

गान्धीजी अपना दुःख दिखलाते हुए बोले—'बेजबान प्राणीके खूनसे देवी खुश नही होती। ऐसे अधर्मसे तो वो नाराज होती है। उसे प्रसन्न करना हो तो सच्चाईपर चलो, सब प्राणियोपर दया दिखलाओ। इस बकरेको छोड दो। देवी तुमपर पहलेसे ज्यादा खुश होगी।'

इसका चमत्कारिक असर हुआ। लोग बकरेको छोडकर चल दिये।

कल्याण

श्रीमद् राजचन्द्र—'अगर तुम एक हाथमें घीका भरा लोटा और

दूसरे हाथमें छाछका भरा लोटा लिये जा रहे हो और रास्तेमें किसीका धक्का लगे तो तुम किस लोटेको सँभालोगे ?'

मुमुक्षु—'घीका लोटा ही सँभालेंगे !'

श्रीमद्—'यह देह छाछकी तरह है, इसे आदमी सँभालता है, आत्मा घीकी तरह है, पर उसे गिरने देता है। ऐसा नादान यह इनसान है !'

हजरत अली

खलीफा हजरत अली राजकीय कागज़ात देख रहे थे, कि कुछ सरदार उनसे निजी कार्यके लिए मिलने आये।

हज़रत अली जिस चिरागकी रोशनीमें काम कर रहे थे उसे बुझाकर और दूसरा जलाकर उनसे बात करने लगे। सरदारोकी बातें खत्म होनेपर वे दूसरे चिरागको बुझाकर और पहलेको जलाकर फिर कार्यव्यस्त हो गये।

सरदारोने यह माजरा देखा तो अपना कुतूहल न रोक सके। हज़रत-से इसका कारण पूछा। खलीफा बोले—'जब तुम आये मैं सरकारी काम कर रहा था। लेकिन निजी बातोमें सरकारी तेल कैसे जलाया जा सकता है ?'

इब्राहीम

एक रईसके यहाँ कुछ प्रतिष्ठित मेहमान आये। रईसने अपने बागके रखवाले इब्राहीमको कुछ बढिया फल तोडकर लानेका हुक्म दिया। मगर खाते वक्त मालूम हुआ कि उसमें-से अधिकाश फल खट्टे है। मालिकने इब्राहीमको झिडकते हुए कहा—'तू ऐसे खट्टे फल कैसे ले आया। इतने दिनोसे बागमें रहता है तुझे यह भी नही मालूम कि मीठे फल कौन-से हैं !'

इब्राहीम—'हुजूर, मै तो आपके बागकी रखवालीके लिए रखा गया हूँ। मुझे यह कैसे मालूम हो कि कौन-से फल मीठे है, कौन-से खट्टे ?'

ये ही इब्राहीम आगे चलकर मुसलमानोके एक महान् सन्त हुए।

स्वामी—'वाई ! आनन्दके राज्यमें सोने-चाँदीके सिक्के नहीं चलते।' यह कहते हुए स्वामीजीने उसे एक हठी अनाथ बालक देते हुए कहा—'लो इसे अपने पुत्रकी तरह पालना।'

वाई—'यह तो वडा मुश्किल काम है। मुझसे यह न हो सकेगा।'

स्वामीजी—'तो आनन्द पाना भी वडा मुश्किल है। मैं तुम्हें उसकी प्राप्ति नहीं करा सकता।'

मातृ-दृष्टि

शिवके पुत्र कार्तिकेयने एक बार अपने नाखूनसे एक बिल्लीके जिस्म-पर लाइन बना दी। घर जाकर उन्होंने देखा कि उनकी माँ पार्वतीके गालपर खसोटनेका निशान है। पूछा—'माँ, तुम्हारे गालपर यह भद्दी लकीर कैसी है?' जगदम्बा बोली—'बेटा, तूने ही अपने नाखूनसे इसे बनाया है।'

'मैंने ? मुझे तो याद नहीं आता कि मैंने ऐसा कभी किया हो !'

'तूने आज बिल्लीको नहीं खसोटा ?'

'हाँ, पर वह निशान तुम्हारे गालपर कैसे ?' माँ बोली—'मेरे प्यारे बच्चे ! सारी सृष्टि मैं ही हूँ। मेरे सिवाय संसारमें और कुछ है ही नहीं। अगर तुम किसीकी हिंसा करते हो तो मेरी ही हिंसा करते हो।'

कार्तिकेय यह सुनकर दंग रह गये और तबसे हर एकको मातृ-दृष्टिसे देखने लगे। इसीलिए उन्होंने शादी भी नहीं की।

उसकी हँसी

ईश्वर दो मौक़ोंपर हँसता है। जब वैद्य रोगीकी माँसे कहता है—'डरो मत, माँ, मैं तुम्हारे लड़केको जरूर अच्छा कर दूँगा।' ईश्वर

हँसकर मनमें कहता है—'मैं तो इसकी जान ले लेनेवाला हूँ और यह शख्स कहता है कि उसे बचा लेगा!' ईश्वर फिर एक बार तब हँसता है जब दो भाई अपनी जमीनको रस्सीसे बाँटकर एक-दूसरेसे कहते हैं—'इधरकी मेरी है, उधरकी तुम्हारी।' ईश्वर हँसकर मनमें कहता है—'सारा विश्व तो मेरा है, लेकिन ये लोग इस हिस्से या उस हिस्सेको अपना बता रहे हैं!'

विष्णुमय जगत्

एक साधु आनन्दमें निरन्तर मस्त रहता था। लोग उसे पागल समझते थे। एक रोज़ वह गाँवसे कुछ खाना लाया और एक कुत्तेके पास बैठकर खाने लगा। एक निवाला कुत्तेको खिलाता एक खुद खाता। दोनोंको यूँ खाते देख लोगोंकी भीड़ लग गयी। कुछ लोग उसे पागल कहकर हँसने लगे। इसपर वह बोला—

'तुम हँसते क्यों हो? विष्णु विष्णुके पास बैठा है। विष्णु विष्णुको खिला रहा है। तुम क्यों हँसते हो विष्णु? जो कुछ है, विष्णु है।'

याचना

एक सन्तको बड़ी तीव्र भूख लगने लगी, मगर खानेको कुछ नहीं था। मनने कहा—'प्रभुसे माँग लो।' अन्तरात्मा बोला—'विश्वासी आदमीका यह काम नहीं है।'

मन—'खाना न माँगो, पर धीरज तो माँग लो।'

अन्तरात्मा—'हाँ, धीरज माँगा जा सकता है।''

इसपर उन्हें अपने अन्दर भगवान्‌की दिव्य वाणी सुनाई दी—'धीरजका

समुद्र, मैं, तो सदा तेरे साथ हूँ। तू याचना करके अपने विश्वासको क्यों खो रहा है ? क्या मैं बिना माँगे नहीं देता ? भक्तके योग-क्षेमका सारा भार उठानेकी तो मैंने घोषणा कर रखी है।'

सन्त—'सच है ! मैं भूला था प्रभो !'

निन्दा

शेख़ सादी अपने पिताके साथ मक्का जा रहे थे। क़ाफिलेका नियम था—आधी रातको उठकर प्रार्थना करना। एक दिन आधी रातको सादीने प्रार्थनाके बाद दूसरे लोगोंको सोते देख अपने पितासे कहा—'देखिए, ये लोग कितने आलसी हैं, न उठते हैं, न प्रार्थना करते हैं !'

पिताने कड़े शब्दोंमें कहा—'अरे सादी ! बेटा ! तू भी न उठता तो अच्छा होता। जल्दी उठकर दूसरोंकी निन्दा करनेसे तो न उठना ही ठीक था।'

जानकार

सन्त मन्सूरको सूलीपर चढ़ानेसे पहले लोगोंने उन्हें घेर लिया और पत्थर बरसाने लगे। मौलाना रूमको लगा कि इस वक्त लोगोंका साथ देना फ़र्ज़ आ गया है। चुनाँचे उन्होंने भी एक फूल मन्सूरपर मारा। मन्सूर बोले—'तुम्हारे इस फूलसे मुझे वज्रसे भी ज्यादा आघात पहुँचा है।'

मौलाना—'और इन लोगोंके पत्थरोंसे कुछ नहीं ?'

मन्सूर—'ये तो अनजान हैं, पर तुम तो मुझे जानते थे।'

स्वधर्म-परधर्म

एक धोबीके यहाँ एक गधा था और एक कुत्ता। कुत्तेने देखा कि मालिक उसे गधेसे कम खाना देता है, इसलिए वह मालिकसे ख़फ़ा रहने लगा।

एक रात धोबीके यहाँ चोर आये और सारा सामान बाँधकर ले जाने लगे, मगर कुत्ता नहीं भौंका। गधेने उसे बार-बार समझाया कि इस वक्त भौंककर मालिकको जगाना तेरा फर्ज है। मगर नाराजीके मारे कुत्ता चुप ही रहा। गधेने उसकी गैर-वफादारी देखकर खुद ही रेंकना स्वधर्म समझा। मालिक चिढा कि कमबख्तने बेवक्त रेंक-रेंककर नींद उडा दी। उसने तावमें आकर डण्डा उठाया और गधेको पीटना शुरू कर दिया। उसे इतना मारा कि वह मर गया। इसके बाद धोबीकी घरपर नजर पडी तो देखा कि घर खाली है! उसने सोचा कि चोर आये मगर यह हरामी कुत्ता भौंका ही नहीं! उसने उसी डण्डेके एक ही वारसे कुत्तेकी खोपडी चकना-चूर कर दी।

यह स्वधर्म पालन न करनेके कारण मारा गया, वह परधर्ममें पडनेके कारण।

सेज

एक दासी रोज अपनी रानीकी सेज बिछाया करती, खूब सजाकर। एक दिन उसकी इच्छा हुई कि खुद उसपर लेटकर देखें। लेटनेपर उसे नींद आ गयी। इसी बीच रानी आ गयी। वह दासीको सेजपर सोयी देख आग-बबूला हो गयी। दासीको झकझोरकर जगाया। वह बेचारी डरसे थर-थर काँपने लगी। रानीने उसे कोड़े लगाने शुरू किये। दासी पहले तो रोयी-चिल्लायी। बादमें जोरसे हँसने लगी। रानीको इससे बडा ताज्जुब हुआ। उसने उससे हँसनेका सबब पूछा। दासी बोली—'रानीजी, मैं एक दिन थोडी देरके लिए इस पलगपर सो गयी तो मुझपर ऐसे कोडे पड रहे हैं, लेकिन इसपर रोज सोनेवालेकी न जाने क्या हालत होगी—यही सोचकर मुझे हँसी आ गयी।'

साधुता

जाफर सादिक एक मशहूर सन्त थे। एक वार किसी आदमीके रुपयोंकी थैली चोरी चली गयी। भ्रमवश उसने उन्हे पकड़ लिया।

आपने पूछा—'थैलीमे कितने रुपये थे?'

'एक हज़ार,' उसने वताया।

आपने अपनी तरफसे उसे एक हजार रुपये दे दिये।

कुछ दिनो वाद असली चोर पकडा गया। रुपयोका मालिक घवराया! वह एक हज़ार रुपये लेकर सन्तके पास पहुँचा और उनके चरणोपर रखकर क्षमा-प्रार्थनाएँ करने लगा।

सन्त वडी नम्रता और मृदुतासे वोले—

'दी हुई चीज़ मैं वापस नहीं लेता।'

अशोभन

वादशाह हारूँ रशीदके एक लडकेने एक दिन आकर अपने पितासे कहा कि, 'फलाँ सेनापतिके लडकेने मुझे माँकी गाली दी है।' पूछनेपर मन्त्रियोंमें-से किसीने कहा—'उसे देश-निकाला दे देना चाहिए।' कोई वोला—'उसकी जवान खिचवा लेनी चाहिए।' किसीने मशवरा दिया—'उसे फौरन् सूलीपर चढा देना चाहिए।'

आखिर हारूँने कहा—'वेटा, अगर तू अपराधीको क्षमा कर सके तब तो सवसे अच्छी वात है। क्रोधका कारण मौजूद होनेपर भी जो शान्त रह सकता है वही सच्चा वीर है। और अगर तुझमें इतनी शक्ति न हो तो तू भी उसे वही गाली दे सकता है, लेकिन यह क्या तुझे शोभा देगा?'

कपटी

तपस्वी मलिक दिनार अत्यन्त सरल और पवित्र हृदयके महात्मा थे। एक दिन एक स्त्रीने उन्हें 'कपटी' कहकर पुकारा। अत्यन्त आदर और विनयपूर्वक उन्होंने फौरन् कहा—'बहन! इतने दिनोंमें मेरा सच्चा नाम लेकर पुकारनेवाली सिर्फ तुम ही मिली हो। तुमने मुझे ठीक पहचाना!'

मूर्ख शिष्य

शंकराचार्य महान्‌का एक मूर्ख शिष्य था। वह हर बातमें उनकी नक़ल किया करता था। शंकर 'शिवोऽहं' कहते तो वह भी 'शिवोऽहं' कहता। शंकरने उसकी यह बेवकूफी दूर करनी चाही। एक रोज़ एक लुहारकी दुकानपर उन्होंने एक पात्रमें पिघला लोहा लिया और पी डाला। शिष्यसे बोले—'तू भी पी।' शिष्य भला यह कहाँ कर सकता था। तबसे उसने 'शिवोऽहं' कहना छोड दिया।

रामनामकी शक्ति

एक राजासे ब्रह्म-हत्या हो गयी। इस घोर पापके प्रायश्चित्तके लिए वह एक ऋषिके आश्रममें गया। ऋषि तो बाहर गये हुए थे, लेकिन उनका लडका वहाँ था। राजाकी बात सुनकर उसने कहा—'रामका नाम तीन बार लो, तुम्हारे दोषका प्रक्षालन हो जायेगा।'

जब ऋषिने लौटकर प्रायश्चित्त-विधानकी बात सुनी तो रुष्ट होकर बोले—'भगवान्‌का नाम केवल एक बार लेनेसे असख्य जन्मोंके पाप कट जाते हैं। तेरा विश्वास कितना कच्चा है कि तूने तीन बार नाम लेनेके लिए कहा!'

अभेद

शुकदेव ब्रह्मज्ञान सीखनेके लिए जनकके पास गये। जनक बोले—'गुरुदक्षिणा पहले दे दो। ब्रह्मज्ञान प्राप्त करनेके बाद तुम गुरुदक्षिणा नही दोगे, क्योंकि ब्रह्मज्ञानी गुरु और शिष्यमें भेद नही देखता।'

सन्त तुकाराम

सन्त तुकाराम अत्यन्त निर्धन थे। परन्तु अपने बडे परिवारके भरण-पोषणका सारा बोझ उन्हींपर था और इधर तुकाराम संसारी आदमी थे ही नही!

एक बार खेतमें गन्ने तैयार हुए। तुकारामजीने गन्ने काटे और बाँधकर सिरपर रखे, गन्ने बिकें तो घरवालोंके मुँहमें अन्न जाये। लेकिन रास्तेमें बच्चे इनके पीछे लगकर गन्ने माँगने लगे। जो सबमें अपने प्रभुको ही देखते हो, कैसे मना कर दें? गन्ने बच्चोंको बाँट दिये। सिर्फ एक गन्ना बचा जिसे लेकर वे घर पहुँचे।

उनकी पहली स्त्री रखुमाई बडे चिडचिडे स्वभावकी थी। जब पति-देवको केवल एक गन्ना लाते देखा तो सारी कैफियत समझ गयी। क्रोधसे आगबबूला हो गयी। उसने तुकारामके हाथसे गन्ना छीनकर उसे उनकी पीठपर जोरसे मारा। टूटकर गन्नेके दो टुकडे हो गये।

तुकारामके मुखपर क्रोधके बदले हँसी आ गयी। बोले—'हम दोनोंके लिए गन्नेके दो टुकडे मुझे करने ही पडते। तुमने बिना कहे ही यह काम कर दिया। कैसी साध्वी हो तुम!'

बुलन्दी

कवीन्द्र रवीन्द्रकी बढती हुई ख्यातिसे कुछ लोग बेहद जलने लगे। उन्होंने अपने हृदयकी कलुषता पत्र-पत्रिकाओंमें बखेरनी शुरू कर दी। लेकिन टैगोर समभावसे सब सहन करते रहे।

शरच्चन्द्रसे जब ये कटु आलोचनाएँ न सुनी गयी तो उन्होंने विश्व-कविसे कहा कि वे इन आलोचकोंका मुँह बन्द करनेका कुछ उपाय करें। टैगोर शान्तभावसे बोले—

'उपाय क्या है शरत् बाबू? जिस शस्त्रको लेकर वे लोग लड़ाई करते हैं, उस शस्त्रको मैं हाथसे छू भी नही सकता।'

कृष्णकी पसन्द

धर्मराज युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें कृष्ण भी गये थे। कहने लगे—'मुझे भी काम दो।' धर्मराजने कहा, 'आपको क्या काम दें! आप तो हमारे लिए आदरणीय है। आपके लायक हमारे पास कोई काम नही है।' भगवान्ने कहा कि, 'मैं आदरणीय हूँ तो क्या अयोग्य भी हूँ? मैं भी काम कर सकता हूँ।' धर्मराज बोले—'आप ही अपना काम ढूँढ लीजिए।' तो भगवान्ने क्या काम लिया?—जूँठी पत्तलें उठानेका और लीपनेका!

—विनोबा

नमककी गुड़िया

एक बार एक नमककी गुडिया समन्दरकी थाह लेने गयी ताकि औरोंको पानीकी गहराई बता सके। लेकिन समन्दरमें पहुँचकर वह खुद ही घुलकर खत्म हो गयी।

ब्रह्मका अनुभव करनेवाले भी उसमें इसी तरह गर्क हो जाते हैं। समाधिमें होनेवाली ब्रह्मानुभूति मन और वाणीसे परे है, इसलिए उसका वर्णन नहीं हो सकता।

अपरम्पार लीला

भीष्म अपनी शर-शय्यापर पड़े हुए थे। पाण्डव और कृष्ण उनके पास खड़े थे। उन्होंने भीष्मकी आँखोंसे आँसू निकलते देखे। अर्जुनने कृष्णसे पूछा—'विचित्र बात है कि भीष्मपितामह-सरीखे ज्ञानी और संयमी वीरात्मा भी मायावश मृत्युके समय रो रहे हैं!' श्रीकृष्णने भीष्मसे इसका कारण पूछा। भीष्म बोले—'कृष्ण! तुम भलीभाँति जानते हो कि यह मेरे रोनेका कारण नहीं है। मुझे खयाल आया कि स्वयं भगवान् जिन पाण्डवोंके सारथी हैं उनकी विपदाओंका अन्त ही नहीं है। इससे मुझे लगा कि मैं ईश्वरकी लीलाको कुछ भी न समझ सका, इसीलिए मेरे आँसू बहने लगे।'

शिक्षण

किसीने लुक़मानसे पूछा—'आपने तमीज किससे सीखी?' उसने जवाब दिया—'बदतमीज़ोंसे। क्योंकि मैंने उन लोगोंमें जो कुछ बुरी बात देखी उससे परहेज किया। अक्लमन्द खेलसे भी शिक्षा प्राप्त कर लेता है। बेवकूफ़ हिकमतकी सौ बात सुन लेनेपर भी खेल और बेवकूफ़ी ही सीखता है।'

धर्मवेशी लुटेरे

एक सुनारने जवाहिरातकी दुकान खोल रखी थी। देखनेमें वह बड़ा धर्मात्मा लगता था—माथेपर तिलक, गलेमें माला, हाथमें सुमिरनी। इस

लिए लोग विश्वास करते कि वह धोखा नही दे सकता। लेकिन जब कभी ग्राहक उसकी दुकानपर आते तो उसकी सहायक-मण्डलीमे-से एक कहता—'केशव ! केशव !' कुछ देरमें दूसरा कहता—'गोपाल ! गोपाल !' तब तीसरा बोलता—'हरि ! हरि'। अन्तमें एक कहता 'हर ! हर !' ईश्वरके इन नामोका उच्चार होते देख ग्राहकोंका उसकी प्रामाणिकतापर विश्वास और भी दृढ हो जाता। लेकिन ईश्वरके ये नाम उस धूर्त सुनार-द्वारा सांकेतिक शब्दों (Code words) के तौरपर इस्तेमाल किये जाते थे। जो आदमी 'केशव, केशव' कहता उसका तात्पर्य यह पूछनेका था कि 'ये ग्राहक कैसे हैं ?' जो 'गोपाल, गोपाल' कहता वह जतलाता कि 'ये लोग बिलकुल बैल हैं।' यह अनुमान वह उनसे थोडी देरकी बात-चीतमें ही लगा लेता था। 'हरि, हरि' कहनेवाला पूछता—'तो क्या हम इन्हें लूटें ?' इसका जवाब 'हर, हर' कहनेवाला देता—'इन बैलोको जरूर लूट लो।'

भक्त

एक बार अर्जुनको यह अहंकार हुआ कि मैं भगवान्‌का सबसे बडा भक्त हूँ। श्रीकृष्णने उसके दिलकी यह बात जान ली। वे उसे टहलाने ले गये। रास्तेमें उन्होंने एक अजीब ब्राह्मण देखा। वह सूखी घास खा रहा था, फिर भी उसकी कमरसे तलवार लटकी हुई थी।

अर्जुनने उससे कहा—'आप तो अत्यन्त अहिंसक मालूम होते है कि जीवहिंसाके डरसे सूखी घास खाते है। फिर भी हिंसाका उपकरण, तलवार, क्यो लिये हुए हैं ?'

ब्राह्मण बोला—'यह चार व्यक्तियोको दण्ड देनेके लिए है। अगर वे मुझे मिल जायें तो उनके सिर उडा दूँ।'

अर्जुन—'कौन है वे ?'

ब्राह्मण—'एक तो है बदमाश नारद। मेरे प्रभुके आरामका खयाल रखे बगैर सदा भजन-कीर्तनसे उन्हें जाग्रत रखता है! दूसरी है धृष्ट द्रौपदी—उसने मेरे प्रभुको ठीक उस वक्त पुकारा जब कि वे भोजन करने बैठे ही थे। उन्हे खाना छोडकर तत्काल दुर्वासा ऋपिके शापसे पाण्डवोंको बचाने जाना पडा! उसकी धृष्टता यहाँतक बढी कि उसने अपना बचा-खुचा जूठा खाना भगवान्को खिलाया! तीसरा है हृदयहीन प्रह्लाद—उस निर्दयने मेरे भगवान्को गरम तेलके कडाहमें प्रविष्ट कराया, हाथीके पैरोके नीचे कुचलवाया और खम्भेमें-से प्रकट होनेके लिए विवश किया! चौथा है बदमाश अर्जुन। उसकी गुस्ताखी देखो! उसने मेरे प्रिय भगवान्को अपने रथका सारथी बना डाला!'

अर्जुन उस ब्राह्मणकी भक्ति और प्रेमको देखकर दंग रह गया। उसे यह गरूर फिर कभी न हुआ कि मैं ही भगवान्का सबसे बडा भक्त हूँ।

रावणकी रामभक्ति

मन्दोदरी अपने पति रावणसे बोली—'अगर तुम्हें सीताको अपनी रानी बनानेकी इतनी तीव्र इच्छा है तो तुम उसके पास रामका रूप रखकर क्यो नही जाते?'

'क्या बकती है!' रावण बोला। 'रामका पवित्र रूप धारण करके क्या मैं इन्द्रिय-भोगोमें लिप्त हो सकता हूँ?—उस दिव्य रूपका तो ध्यान आते ही मैं ऐसे अनिर्वचनीय आनन्द और धन्यतासे ओतप्रोत हो जाता हूँ कि वैकुण्ठ भी तुच्छ नज़र आने लगता है!'

गुरु गोविन्दसिंह

एक बार गुरु गोविन्दसिंह जमुनाके किनारे बैठे हुए थे। उस वक्त उनका एक धनवान् भक्त आया और उनके आगे दो रत्नजटित सोनेकी चूडियाँ रखकर उन्हें स्वीकार करनेकी प्रार्थना करने लगा।

गुरुकी नजरमें सोना और मिट्टी समान थे। वे उनमें-से एकको उठाकर उँगलीपर फिराने लगे। फिरते-फिरते वह जमुनामें जा गिरी। भेंट देनेवाला फौरन् नदीमें कूद पडा, लेकिन उसे चूडी नही मिली। जब वह खाली हाथ लौटा तो गुरु गोविन्दसिंहने दूसरी चूडीको भी फेंकते हुए बताया—'देख, चूडी वहाँ पडी है।'

आज़ादी

दो भाई थे, एक तो राजाकी नौकरी करता था, दूसरा शारीरिक परिश्रमसे अपनी रोजी कमाता था। एक बार अमीर भाईने गरीब भाईसे कहा—'तुम नौकरी क्यो नही कर लेते जिससे परिश्रमके कष्टसे छुटकारा पा जाओ?'

'तुम मेहनत क्यो नही करते जिससे चाकरीके अपमानसे छूट जाओ?' दूसरेने तडाकसे जवाब दिया।

स्वात्माभिमान

हातिमताईसे पूछा गया—'क्या आपने किसीको अपनेसे भी ज्यादा स्वात्माभिमानी देखा है?'

हातिम बोला—'हाँ। एक दिन हमारे यहाँ बहुत बडा भोज हो रहा था। उसमें मैंने एक लकडहारेको देखा जो पीठपर गट्ठर रखे हुए था। मैंने उससे पूछा—तुम हातिमकी दावतमें क्यो नहीं गये? आज उसके दस्तरख्वानपर बहुत-से लोग जमा हुए हैं। उसने जवाब दिया—जो अपने हाथकी कमायी रोटी खाता है वह हातिमताईका अहसान न लेगा।

उस शख्सको मैंने आत्म-गौरवमें अपनेसे बढकर माना।'

—शेख सादी

अमरता

नौशेरवाँके पास कोई खबर लाया कि, 'खुदाके फज्लसे आपका फलाँ दुश्मन मर गया।' बादशाहने कहा—'क्या तुमने सुना है कि खुदा किसी तदवीरसे मेरी जान बचा सकेगा ? अपने दुश्मनकी मौतसे मुझे कोई खुशी नही हो सकती, क्योंकि खुद मेरी ही जिन्दगी जाविदानी (अनन्त-कालीन) नही है।'

याद

किसी बादशाहने एक महात्मासे पूछा—'क्या आपको कभी मेरी भी याद आती है ?' उसने जवाब दिया, 'हाँ, जब मै ईश्वरको भूल जाता हूँ।'

भावना

दो दोस्त तफरीहके लिए बाहर निकले, एकने कहा—'चलो यार, भागवतकी कथा सुनने चलें।' पर दूसरेको कथामें विशेष रस नही आया इसलिए वह अपने मित्रसे कहकर किसी मुजरेमें चला गया। पर वहाँ शीघ्र ही उसकी तबीयत ऊब गयी, कहने लगा–'मेरे मित्रको देखो, धर्म-श्रवणका आनन्द ले रहा होगा और मैं इस गलीज जगहमें फँसा हुआ हूँ !' लेकिन जो भागवत सुन रहा था वह भी जल्दी ही उकता गया, सोचने लगा—'कहाँ फँस गया ! इससे तो मेरा दोस्त ही अच्छा रहा, मजे लूट रहा होगा।'

जब वे मरे, तो भागवत सुननेवाला नरक गया और वेश्याके यहाँ जानेवाला स्वर्ग गया।

सचमुच, मनुष्यकी गति भावोंके अनुसार होती है।

बड़ी मार पड़ेगी !

एक सेठजी अपनी विशाल हवेलीकी आकाशीपर बैठे हुए फल-फलादि खा रहे थे और छिलके नीचे फेंकते जाते थे। वहांसे निकलता हुआ एक पागल-सा आदमी छिलकोंको खाने लगा। यह देखकर सेठके नौकरोंने उसे डपटकर चले जानेको कहा। मगर पागलने उसे गनकारा नही, इसलिए नौकरोंने उसे मारना शुरू कर दिया। मगर जितनी ज्यादा मार पडती गयी उतनी ही बुलन्द आवाजसे वह हँसता गया। इतनेमें सेठजीकी नजर उसपर पडी। देखकर सख्त ताज्जुब हुआ। बुलाया और उससे हँसनेका कारण पूछा। वह बोला—'सेठजी ! इसमें ताज्जुब करनेकी कोई बात नही। मैं यह हँस रहा था कि छिलके खानेवालेपर इतनी मार पडती है तो गूदा खानेवालोंपर कितनी मार पडेगी !'

सेठजी यह जवाब सुनकर सन्न रह गये और क्षमा माँगने लगे।

तीसरे महायुद्धके बाद

एक सुबह, जब सारी दुनिया तीसरे महायुद्धके कारण मौतके मुँहमे समा चुकी थी, एक बन्दर एक तहखानेसे बाहर निकला। जब उसने अपनी नजरें चारो ओर दौडायी तो हर तरफ बरबादी और तबाहीका ही क्रूर दृश्य देखकर वह काँप उठा ! सन्तप्त हो वह सामनेके ऊँचे पहाड़की चोटीपर चढ गया और कूदकर जान देने ही वाला था कि पीछे एक आहट सुनाई पडी। घूमकर उसने देखा—एक दूसरे तहखानेसे एक बँदरिया बाहर निकलकर उसकी ओर देख रही थी। बन्दर मरनेका खयाल छोडकर उसके पास पहुँच गया और बडी परेशानीके साथ बोला—'खुदा खैर करे ! क्या हम लोगोंको अब फिरसे सृष्टिकी रचना करनी होगी ?'

—नोबल पुरस्कार विजेता, विलियम फ़ाकनर

अहिंसा

किसी जंगलमें एक भयानक साँप रहता था। एक बार एक सन्त उसके पाससे गुजरे। साँप उनके क़दमोंमें लोटकर अपने उद्धारकी प्रार्थना करने लगा। सन्त बोले—'किसीको काटा मत कर, तेरा भला होगा।'

साँपने काटना छोड दिया। उसके इस परिवर्तनकी चर्चा दूर-दूर तक फैल गयी। नतीजा यह हुआ कि दुष्ट जन उसे लकडी, पत्थर आदिसे मार-मारकर सताने लगे।

एक बार वही सन्त फिर उधरसे निकले। साँपने अपनी दु ख-गाथा बयान की—'महाराज, आपने अच्छा उपदेश दिया, मेरा तो जीना ही मुहाल हो गया!'

सन्त बोले—'भाई! मैंने तुझसे काटनेके लिए मना किया था, यह कब कहा था कि तू फुफकारना भी मत?'

शान्ति चाहिए तो फिर लड़ते क्यों है?

[एक पुरानी जर्मन दन्त-कथा]

एक मूर्ख रास्तेमें खडा हथियारबन्द फौज आती हुई देख रहा था।

उसने पूछा—'ये लोग कहाँसे आ रहे हैं?'

'शान्तिमें-से।'

'कहाँ जा रहे हैं?'

'युद्धमें।'

'युद्धमें ये क्या करते हैं?'

'दुश्मनोंको मारते हैं, उनके शहरोंको जलाते हैं, ..'

'ऐसा क्यो करते हैं ?'

'शान्तिको पा जानेके लिए।'

मूर्ख बोला--'मैं समझ नही पा रहा हूँ कि इन सब लोगोको शान्तिमें-से युद्धमें क्यो जाना पडता है ? ये लोग अपनी पहलीवाली शान्तिमें ही क्यो नहीं रहते ?'

साधुओकी उदारता

एक दिन रामदास स्वामी अपने शिष्योके साथ एक गन्नेके खेतके सामनेसे गुजर रहे थे। उनमें-से एक शिष्यने गन्ना तोडकर खाया। इस तरह बिना पूछे गन्ना खाता देखकर एकाएक कहीसे खेतका मालिक आ धमका और उसने स्वामी रामदासको सबका सरदार समझकर खूब पीटा।

शिवाजीको जब इस बातकी खबर पडी तो उसने खेतके मालिकको बुलवाया। उसने आकर देखा कि रामदास स्वामी सिंहासनपर बैठे हैं और शिवाजी नीचे। यह देखकर वह थरथर कांपने लगा।

शिवाजीने कहा--

'स्वामीजी, आप जो कहें सो सज़ा इसे दूँ।'

'जो कहूँगा सो करोगे ?'

'स्वामीजी, क्या मैं आपकी आज्ञाका पालन न करूँगा ?'

'यह गरीब है, गन्ना कम हो जानेसे आघात लगना स्वाभाविक है। इसका दारिद्र्य दूर करनेके लिए इसे कोई जागीर दे दो।'

प्यार

एक पादरी एक पहाडीपर चढ रहा था। उसी समय एक छह-सात वर्षकी लडकी भी अपने दो वर्षके भाईको गोदीमें लिये चढ रही थी और हाँपती जाती थी।

पादरीने कहा—'अरे, यह लडका तो तेरे लिए वहुत भारी है!'

लडकीने जवाव दिया—'विलकुल भारी नहीं है, यह तो मेरा भाई है।'

जहाँ प्रेम होता है, वहाँ भारी-से-भारी चीज़ भी फूलसे भी हलकी वन जाती है।

जंगखोर

प्रोफेसर मौलिनौस्की अफ़रीकाके एक नरभक्षीसे मिले।

आदमखोर वोला कि, 'पिछले महायुद्धकी एक वात मैं अभीतक नही समझ पाया। तुम लोगोंने इतने आदमी मार डाले, पर उन सवको खा कैसे गये होगे?'

प्रोफेसर—'उन्हें खानेके लिए थोडे ही मारा था!' आदमखोर अत्यन्त घृणा भावसे वोला—'जंगखोर भी आदमखोरसे किस क़दर वदतर होता है कि विला वजह आदमियोको मारता है!'

आनन्दका रहस्य

विदर्भ देशका एक राजा वडा उदास और दुखी रहता था। उसे प्रसन्नचित्त वनानेके वडे-वडे उपाय किये गये मगर सव व्यर्थ। आखिरकार एक दार्शनिकने उसे आश्वासन दिया कि अगर वह किसी सचमुच सुखी आदमीका पहरन मँगा ले तो पूर्ण आनन्द प्राप्ति हो सकती है।

राजाके लोग सव दिशाओंमें भेजे गये—वडी तलाशके वाद उन्हे किसी जगलमें भेड़ चराता हुआ एक गडेरिया मिला जो वास्तवमें आनन्द-स्वरूप था। राजाको यह जानकर वडी खुशी हुई। लेकिन जव दरवारमें लाकर उससे उसका पहरन माँगा गया तो वह वोला, 'मैं तो कभी कोई पहरन रखता ही नहीं!'

मान-दान

एक वार एक दिग्विजयी विद्वान् भारतके भिन्न-भिन्न नगरोंमे अनेकों पण्डितोंको परास्त करता काशीमें आया। उस समय काशीमें एक महात्मा सबसे बडे विद्वान् समझे जाते थे। उनके यहाँ हजारों शिष्य थे। दिग्विजयीने उनके पास जाकर कहा कि यदि आप मुझे पराजय-पत्र लिखकर दे दें तो अनायास ही मैं महान् कीर्तिमान् वन सकता हूँ। महात्माजीने बिना किसी प्रकारकी आपत्ति किये उसे पराजय-पत्र दे दिया। तब वह अपनी विजय घोषित करता हुआ बाजे-गाजेके साथ काशीके राजमार्गसे निकला। इसी समय उसे उन महात्माजीके कुछ शिष्य मिले। उन्होंने सारे समाचार जानकर उसे शास्त्रार्थके लिए आमन्त्रित किया और थोडी ही देरमें एक शिष्यने उसे परास्त कर दिया। इससे उसका बडा तिरस्कार हुआ और उसे वहीं अपनी सवारी छोडनी पडी। जब महात्माजीको ज्ञात हुआ, तो खेद प्रकट करते हुए यह कहकर कि 'इस प्रकारके वेदान्त-श्रवणसे क्या लाभ है?' आजन्म मौन धारण कर लिया।

—श्री उडिया बाबा

महान् कौन ?

ग्रीस देशमें डायोजिनीज नामक एक महान् सन्त रहता था। सिकन्दर उसकी शोहरत सुनकर उससे मिलने गया। सन्त किसी जगलमें अपनी मिट्टीकी नांदमें नंगधडंग बैठा हुआ धूप खा रहा था।

सिकन्दरने कुछ देर स्वागतकी प्रतीक्षा की, आखिरश चिढकर-बोला—'देखो! मैं सिकन्दर महान् हूँ।'

'देखो! मैं डायोजिनीज महान् हूँ' सन्तने वीरतापूर्वक जवाब दिया।

सिकन्दर हतप्रभ होकर बोला—'आपके नामकी तो बडी धूम मची हुई है। कहिए मैं आपकी क्या सेवा करूँ।'

शान्त गौरवके साथ सन्त बोला—'सिर्फ हटकर खडे हो जाओ और सूरजकी धूप मेरे ऊपर आने दो।'

पापी कौन ?

एक बार आदमीके शरीर और आत्मामें बहस छिड गयी। शरीर तमक-कर बोला—'मैं तो जड हूँ—मिट्टीका पिण्ड ! मोह पैदा करनेवाली चीज़ो-को देख भी नही सकता। फिर भला मैं पाप कैसे कर सकता हूँ ?'

आत्मा कैसे चुप रहती ? बोली—'मेरे पास पाप करनेके साधन ही नहीं है, मैं पाप कैसे कर सकती हूँ ? इन्द्रियोके बिना भी कोई काम हो सकता है क्या ?'

भगवान्ने सुना तो मुसकरा पडे और बोले—'सचमुच तुम दोनो बराबर ज़िम्मेदार हो ! शरीरके कन्धोपर जब आत्मा आ बैठती है, तब दोनोंके सहकारसे ही पापका जन्म होता है।'

—टॉलस्टॉय

ताकत

'ईश्वरकी ताक़त ज्यादा है या शैतानकी ?'

'ईश्वरकी।'

'अगर ईश्वरकी ताक़त ज्यादा है तो शैतान ईश्वरकी हर चीज़ बिगाड कैसे देता है ?'

'एक अच्छी मूर्ति बनानेमें कितना वक्त लगता है ? मगर उसे तोडनेमें ? एक महात्मा किसी आदमीको दस वर्षमें जितना सुधार पायेगा, एक दुरात्मा दस दिनमें उसे उससे ज्यादा भ्रष्ट कर देगा, किसीकी ताकत-का अन्दाज़ा बिगाडनेसे नही, बनानेसे लगता है।'

—सत्यभक्त

दान

मैं जब गाँवमें घर-घर भीख माँगने निकला हुआ था, तब तेरा स्वर्ण-रथ एक सुनहले सपनेकी तरह दूर दिखाई दिया। मैं ताज्जुब करने लगा कि यह सम्राटोंका महिमामय सम्राट् कौन है? मुझे उम्मीद बँधी कि मेरे बुरे दिनोंका अन्त होनेवाला है, मैं बिना माँगे दानकी प्रतीक्षामें खडा रहा—उस ऐश्वर्यके लिए भी जो धूलमें सब तरफ बिखरा पडा है। जहाँ मैं खडा था, वहाँ तेरा रथ आकर रुका, तेरी नजर मुझपर पडी और तू मुसकराते हुए नीचे उतर आया, मैंने अनुभव किया कि मेरे जीवनका सौभाग्य आखिर लौट आया है। तब यकायक तूने अपना दायाँ हाथ बाहर निकालकर मुझसे कहा, 'क्या दोगे?'

ओफ! यह कितना बडा मजाक था। एक भिखारीके आगे अपने हाथ फैलाना! मैं बडी उलझनमें पड गया, मैंने तब अपने झोलेमें-से आहिस्तासे अन्नका एक छोटा दाना निकाला और तुझे दे दिया। लेकिन मेरे आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा, जब सूरज-छिपे मैंने ज़मीनपर अपने झोलेको खाली किया तो एक सोनेका दाना उसपर आ गिरा, मैं ज़ार-ज़ार रोता हुआ सोचने लगा कि काश, मैंने अपना सर्वस्व तुझे दे डाला होता!

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

भौतिक सम्पत्ति

राम जब सीताको रावणके चगुलसे छुडाकर अयोध्या आये, तो उन्होंने अपने सब सहयोगियोंको पुरस्कृत किया, मगर हनुमान्के अहसानोंका ऋणी ही रहना मुनासिब समझा।

सीता बोली—'आपने सबको दिया, पर हनुमान्को तो कुछ दिया ही नहीं।'

राम—'उसे तुम जो चाहे सो दे सकती हो, तुम भी तो लक्ष्मीकी अवतार हो।'

सीताने उसी वक्त अपना बेशकीमती हार गलेसे उतारकर हनुमान्को दे दिया।

हनुमान्ने उसके रत्नोको दांतोसे तोडकर देखा और फेंक दिया। बोले—'इसमे कही राम तो है ही नही, मैं इसका क्या करूंगा।'

दृष्टि

एक चोर सारी रात कोशिश करनेपर भी किसी मकानमें घुस सकनेमें असफल रहा। आखिर थककर लबे-सड़क एक पेडके नीचे सो गया।

एक और चोर उधरसे गुज़रा। देखकर बोला—'यह तो मेरा ही कोई भाई-बन्धु है। बेचारा कामयाब न होनेपर थककर सो गया है।'

इसके बाद एक शराबी वहाँसे होकर निकला। बोला—'उफ़! इतनी पी गया है कि तन-बदनका भी होश नही है।'

फिर एक योगी वहाँ आये। सोते हुए चोरको देखकर बोले—'ज़रूर ये कोई समाधिस्थ साधु हैं। धन्य है ये!'

माँका हृदय

बहेलियेके तीरसे मरती हुई हिरनी आँखोसे आँसू बहाती हुई बोली—'मेरे स्तनोंके अलावा मेरे सारे शरीरका मास लेकर मुझे छोड दो। इतनी मेहरबानी करो। मेरा बेटा, जो अभी घास खाना नही जानता, मेरी बाट देखता होगा।'

मन्त्री-पद

१९२० में एक शख्सको मन्त्री बननेके लिए कहा गया। उसने कहा कि मैं बहुत होशियार आदमी होनेका फख्र तो नही करता, मगर मैं अपनेको मामूली समझदार और औसत दर्जेके लोगोसे कुछ ज्यादा ही समझदार समझता हूँ, और मेरा खयाल है कि ऐसी मेरी शुहरत भी है। क्या सरकार चाहती है कि मैं मन्त्री-पद मंजूर कर लूँ और दुनियामें अपनेको सख्त बेवक़ूफ ज़ाहिर करूँ ?

—'मेरी कहानी' (जवाहरलाल नेहरू)

काम

एक बार एक प्रकाण्ड विद्वान् महात्मा गान्धीसे मिलने गये। उन्होने अपनी बडी आत्म-प्रशसा की। गान्धीजी शान्तिपूर्वक सुनते रहे। आखिरमें वह सज्जन बोले—

'मेरे लायक कुछ काम हो तो बताइए।'

'आपको वक़्त है ?'

'हाँ, हाँ।'

'गेहूँ पीसनेमें हमारी मदद कर सकेंगे ?'

ईश-प्रेम

'तू सर्वशक्तिमान् ईश्वरसे प्रेम करती है ?'

'हाँ।'

'और क्या तू शैतानसे नफरत करती है ?'

'नही,' रबिया बोली, 'मेरे ईश-प्रेममें किसीसे घृणा करनेकी गुंजाइश ही नही है।'

मैंने पैगम्बरको ख्वाबमें देखा। वो बोले—'रबिया, तू मुझसे प्रेम करती है?' मैंने कहा—'ओ खुदाके पैगम्बर, आपसे कौन प्रेम नही करता? लेकिन मै ईश-प्रेमसे इतनी सरशार रहती हूँ कि मेरे दिलमें किसी और चीज़के लिए मुहव्बत या नफ़रत बाकी नही रही।'

—रबिया

धरती

'हे धरती! तू बडी कजूम है। सख्त मेहनत और एडी-चोटीका पसीना एक हो जानेके बाद ही तू हमे अन्न देती है। बिना मेहनत ही अगर तू हमें अन्न दे दिया करे, तो तेरा क्या घट जाये?'

धरती मुसकरायी—'मेरी तो इसमें शान बढेगी ही, लेकिन तेरी शान बिलकुल खत्म हो जायेगी।'

—रवीन्द्रनाथ टैगोर।

भक्त राँका-बाँका

भक्त राँका कंगाल और बे-पढे होनेपर भी तीव्र वैरागी थे। राँकाजी बडे रक थे, इसीसे शायद उनका नाम राँका पड गया था। उनकी स्त्रीका नाम बाँका था। वे बडी साध्वी, पतिव्रता और भक्तिपरायणा थी। वैराग्यमें तो वे राँकाजीसे भी बढकर थी।

दोनों जगलसे सूखी लकडियाँ बीन कर लाते और उन्हें बेचकर जो कुछ भी मिलता उससे भगवान्‌का भोग लगाकर प्रसाद पाते।

राँकाजीको स्त्री-समेत दु ख भोगते देखकर सिद्ध भक्त नामदेवजीको बडा दु.ख हुआ। उन्होने भगवान्‌से प्रार्थना की कि राँकाजीको धन मिले।

नामदेवजीको उत्तर मिला कि राँका कुछ भी लेना नही चाहता; तुम्हें देखना है तो कल सुवह वनके रास्तेपर छिपकर देखना।

दूसरे दिन राँकाने जंगलके रास्तेपर मुहरोसे भरी थैली जो देखी तो उसपर धूल डालने लगे। इतनेमें उनकी स्त्री भी आ गयी। उसने पूछा, 'किस चीज़को धूलसे ढँक रहे हो?' राँकाने कहा—'यहाँ एक मुहरोकी थैली पड़ी है, मैंने सोचा कि तुम पीछेसे आ रही हो, कही मुहरोके लिए लोभ पैदा हो गया तो साधनामें विघ्न होगा, इसीलिए उसे धूलसे ढँक रहा था।'

परम वैराग्यवती स्त्री इस वातको सुनकर बोली—'सोने और धूलमे फ़र्क़ ही क्या है? आप धूलसे धूलको क्या ढँक रहे हैं?' ऐसे वाँके वैराग्यके कारण ही उसका नाम 'बाँका' पडा था। नामदेवजी राँका-वाँकाके वैराग्यको देखकर अपनेको भी तुच्छ मानने लगे।

भक्त-वत्सल भगवान्‌ने उस दिन राँका-बाँकाके लिए जंगलकी सारी सूखी लकडियोंके बोझे वाँधकर रख दिये। राँका-वाँकाने समझा कि किसी औरके होगे। परायी चीज़ छूना पाप समझकर उन्होने उस तरफ ताका तक नही, और सूखी लकडियाँ न मिलनेसे दोनो खाली हाथ वापस आ गये। उस दिन दोनोको उपवास करना पडा। वे सोचने लगे कि यह तो मुहरें आँखसे देखनेका फल है, हाथ लगानेपर तो न मालूम क्या होता!

हज़रत गौसुल

हजरत गौसुल एक बडे साधु थे। उन्हे बचपनसे विद्याका शौक था। उन दिनो बग़दाद शहर विद्याओ और कलाओका बडा केन्द्र था। गौसुलने विद्याभ्यासके लिए बगदाद जानेकी अपनी माँसे आज्ञा माँगी। माताने अपने पुत्रका विद्या-प्रेम देखकर ख़ुशीसे इजाजत दे दी और चालीस

अशर्फ़ियाँ लडकेके कुरतेमें बगलके नीचे होशियारीसे सी दीं, जिससे जरूरतके वक्त काम आवें। चलते वक्त माँने उपदेश दिया—'बेटा जा, तुझे ईश्वर-को सौंपा। देख, सदा सच बोलना और ईश्वरको कभी मत भूलना।'

हज़रत गौसुल एक क़ाफिलेके साथ हो लिये। रास्तेमें डाकुओंके एक गिरोहने काफिलेको लूट लिया। एक डाकू उनके पास आकर बोला—'ओ लडके, तेरे पास कुछ है कि नही? बता!' इन्होंने जवाब दिया—'मेरे पास चालीस अशर्फियाँ है।' डाकूने पूछा—'कहाँ हैं?' जवाब मिला—'कुरतेमें बगलके नीचे सिली हुई है।'

डाकू इसे मज़ाक समझकर चल दिया। थोडी देरमें दूसरा डाकू आया। उसे भी वही जवाब मिला। डाकू उन्हें अपने सरदारके पास ले गया, और सारा हाल कह सुनाया। सरदारने कहा—'अच्छा, इसकी अशर्फियाँ निकालो।' बतायी हुई जगहसे ठीक चालीस चमकती हुई अशर्फियाँ निकली।

सरदार हैरतमें आकर बोला—'लडके, तू अजब तरहका आदमी है। तूने चोरोंको भी अपना माल बता दिया!' हज़रतने सिर झुकाकर कहा—'मेरी माँने चलते वक्त मुझे नसीहत दी थी कि सदा सच बोलना और ईश्वरको कभी मत भूलना। मैंने अपनी माताकी आज्ञानुसार काम किया है, और कुछ नही।'

डाकुओंके सरदारके मनपर इसका बडा असर पड़ा। वह बडा पछताया। उसने सारा माल वापस कर दिया, और लूटमार छोडकर भले रास्ते लगा।

विद्युच्चर

विद्युच्चर एक राजकुमार था, लेकिन बुरी सुहबतके असरसे वह डाकू बन गया। उसके गिरोहमें ५०० डाकू थे! पिताने दुखी होकर उसे

घरसे निकाल दिया। वह अपने गिरोहके साथ घूमता-फिरता एक नगरके पास पहुँचा। नगरके बाहर, घने जगलमें पडाव डाल दिया गया और विद्युच्चर किसी मालदार असामीकी खोजमें नगरके अन्दर दाखिल हुआ।

उसने देखा कि नगरी खूब सजी हुई है और नगरवासी किसीके स्वागतकी तैयारीमें लगे हुए हैं। पूछनेपर मालूम हुआ कि नगरसेठके पुत्र जम्बुकुमार लडाई जीतकर आ रहे हैं, उन्हीके स्वागतकी तैयारियाँ हो रही हैं। कुछ देरमें जम्बुकुमारकी सवारी आ पहुँची। विद्युच्चर डाकूकी नज़र उनके गलेमें झूलते हुए बेशकीमती जवाहरातपर पडी। डाकूने अपने शिकारको भाँपा और मन-ही-मन उसके घर डाका डालनेका सकल्प करता हुआ अपने पडावकी ओर चला।

जम्बुकुमार अभी अविवाहित थे। बचपनसे ही उनका झुकाव वैराग्यकी तरफ़ था। घरमें रहते ज़रूर थे और दुनियादारीके फ़र्ज़ोंको भी पूरा करते थे लेकिन थे बिलकुल अनासक्त। उन्होंने कई बार घरबार छोडकर साधु बन जानेका इरादा किया, मगर माँ-बापने मजबूर कर दिया। उनके पिताने यह सोचकर, कि ससारमें फँस जानेपर अपना पुत्र वैरागी न रह सकेगा, उनके विवाहका इन्तज़ाम किया। आठ रूपवती कन्याएँ चुनी गयी। जम्बुकुमारने उन कन्याओंके पिताके पास खबर भेज दी कि 'विवाह होनेके दूसरे ही दिन मैं घरबार छोडकर साधु बन जाऊँगा। इसलिए मेरे साथ अपनी कन्याओंको न व्याहें।' लेकिन कन्याओंने अब सरा पति वरण करना स्वीकार न किया।

धूमधामसे विवाह हो गया।

जब जम्बुकुमार अपनी आठो स्त्रियोंके साथ अपने मकानमें मौजूद थे, विद्युच्चर डाकू कमन्दके ज़रिये खिडकीपर पहुँचा और बातचीतकी आवाज़ सुनकर वही ठिठक गया। जम्बुकुमार अपनी पत्नियोंको धर्मोपदेश

दे रहे थे और कह रहे थे कि सूरज निकलते ही मैं दीक्षा ले लूँगा। जम्बुकुमारके सदुपदेश और भरी जवानीमें अपार दौलत और वेहद खूबसूरत आठ युवतियोंके त्यागनेकी वातने खिड़कीपर बैठे हुए डाकूके दिलकी आँखे खोल दी।

जब सुबह हुई और जम्बुकुमार घर-बार छोडकर वनकी ओर चले, तब विद्युच्चर भी उनके पीछे पीछे हो लिया। जम्बुकुमार मुनि हुए। और अपने पाँच सौ साथियो समेत विद्युच्चर भी अपने दुष्कर्मोका प्रायश्चित्त करनेके लिए उनकी शरणमें जाकर साधु बन गया।

सन्त सादिक

अरब देशमें सादिक नामके एक बहुत बडे साधु थे। सब उनको आदर और प्रेमकी नज़रसे देखते थे। उस मुल्कका राजा मंसूर उनकी अक्ल और इज्जत देखकर मन-ही-मन जला करता था। उसने अपने मन्त्रीको हुक्म दिया—'जाओ, सादिकको पकडकर लाओ। मुझे आज उसका खून करना है।' ऐसा हुक्म सुनकर वजीर दग रह गया। उसने मसूरसे कहा—'जो आदमी बिलकुल एकान्तमे रहता है। सारा वक्त तप करनेमें गुज़ारता है, जो दुनियाकी कोई चीज़ नही चाहता, उसके लिए ऐसा हुक्म ?'

राजा बोला—'नहीं, उसे फौरन लाकर हाज़िर करो।' मन्त्रीने बहुत समझाया मगर राजा न माना। आखिर मजबूर होकर वह उसे बुलाने गया।

राजाने अपने नौकरसे कह रखा था कि सादिकके आ जानेपर जब मैं अपने सरसे ताज उतारूँ तब तुम उसे कत्ल कर देना।

जब सादिक मंसूरके पास पहुँचे तब वह विनीत भावसे उनका स्वागत करने सामने आया। बडे आदरसे उन्हे तख्तपर बिठाया और

खुद नम्रतासे नीचे बैठा। नौकरको यह देखकर ताज्जुब हुआ। मंसूरने सादिकसे पूछा—'बोलिए आपकी क्या इच्छा है?' सादिक बोले—'मै बस यही चाहता हूँ कि अब फिर मुझे बुलाकर मेरी तपस्यामें विघ्न न डालना!'

मसूरने उनकी यह माँग मजूर की और उन्हे इज्जतके साथ विदा किया। उनको विदा करके मसूर थर-थर काँपने लगा और बेहोश होकर गिर पडा। जब मसूरको होश आया तो वजीरने पूछा—'तुम्हे यह कैसे हुआ?' मसूर बोला—'जब सादिक मेरे कमरेके दरवाजेके आगे आकर खडे हुए तब उनके साथ मैंने एक भयानक साँप देखा। वह साँप अपना फन उठाकर मुझसे कहने लगा—'अगर तूने सादिकका कुछ किया तो मैं तुझे काट खाऊँगा।' साँपको देखकर मैं डरके मारे सारी सीटी-पटाख भूल गया। मैंने उनसे माफी माँगी और बेहोश होकर जा पडा।'

एक दिन सादिक निहायत उम्दा मलमलका कुरता पहनकर जा रहे थे। किसीने कहा—'आप-सरीखे महान् साधुको ऐसा बारीक और कोमल कपडा शोभा नही देता।' सादिक़ने उस आदमीका हाथ पकडकर अपने कुरतेकी बाँहके अन्दर डाला। कुरतेके नीचेके मोटे चुभीले कपडेपर उसका हाथ फिराते हुए सादिक़ने कहा—'मै एक कपडा लोगोको दिखलानेके लिए पहनता हूँ और दूसरा खुदाके वास्ते पहनता हूँ।'

मजहबी झगडा

सुलतान हैदरअली बिलकुल अपढ था। धर्मके नामपर होनेवाले झगडोसे उसे सख्त चिढ थी।

एक बार शिया-सुन्नियोमें झगडा हो गया। लडाई तक नौबत पहुँची। बात हैदरअलीके कानोमे पडी। उसने दोनो पक्षोको बुलाकर पूछा—

'तुम लोग एक दूसरेसे कुत्तोकी तरह क्यो लडते हो ?'

हजरत मुहम्मदके उन अनुयायियोने अपनी-अपनी बात कही ।

हैदरने पूछा—'जिस शख्सके लिए तुम लडते हो, क्या वो जिन्दा हैं ?'

'नही ।'

'जो मर गया, उसके लिए झगडना निहायत बेवकूफी है । आइन्दा ऐसी हिमाकत करके राज्यका वक्त बिगाडोगे तो तुम्हें सख्त सजा दी जायेगी'

समदर्शन

एक दफा सन्त नामदेव खाना बना रहे थे । रोटियाँ बन चुकनेपर आप जरा कामसे कुछ देरके लिए कही चले गये । इतनेमें एक कुत्ता आया और रोटियाँ मुँहमें उठाकर भागा । उसी वक्त नामदेव आ गये । और घीकी कटोरी हाथमें लेकर यह कहते हुए कुत्तेके पीछे दौड़े कि, "भगवन् ! रोटियाँ रूखी हैं, अभी चुपडी नही है, घी लगा लेने दीजिए फिर भोग लगाइए ।'

अहंकार

एक आस्तिकका एक नास्तिक दोस्त था । एक दिन नास्तिक बोला—'तुम्हारा त्याग सचमुच बहुत बडा है । ईश्वरकी खातिर तुमने दुनिया छोड रखी है ।' आस्तिकने जवाब दिया—'भाई, तुम्हारा त्याग उससे भी बडा है । तुमने तो दुनियाकी खातिर ईश्वर तकको छोड दिया है ।'

हककी रोटी

एक राजाके यहाँ एक सन्त आये और हक्की रोटी माँगी । राजाने पूछा—हककी रोटी कैसी होती है ? महात्माने बतलाया कि 'आपके नगरमें एक बुढिया फलाँ मुहल्लेमें रहती है वह हककी रोटीका मतलब बतावेगी ।'

राजा उस वुढियाके पास पहुँचे और बोले, 'माता मुझे हककी रोटा चाहिए।'

वुढियाने कहा, राजन्, मेरे पास एक रोटो है, उसमे आधो हककी है और आधी वेहककी।'

राजाने पूछा—'आधी वेहककी कैसे ?'

वुढियाने बताया—'एक दिन मैं चरखा कात रही थी। शामका वक्त था अँधेरा हो चला था। इरनेमें एक जुलूस उधरसे निकला। उसमें मशालें जल रही थी। मैं अलग चिराग न जला, उन्हीकी रोशनीमें काततो रही और आधी पौनी कात ली, आधी पौनी पहलेकी कती थी। उस पौनीसे आटा लाकर रोटी बनायी, इसलिए आधी रोटी हककी है, आधी वेहक्रकी। आधीपर जुलूसवालेका हक है।'

राजाने सुनकर वुढियाको सर झुकाया।

सच्चा ज्ञानी

एक वार एक पहुँचे पुरुष रानी-रासरमणिके कालीजीके मन्दिरमे आये, जहाँ परमहंस रामकृष्ण रहा करते थे। एक दिन उनको कहीसे भाजन न मिला। यद्यपि उनको वडी भूख लग रही थी, उन्होने किसीसे भी भोजनके लिए नही कहा। थोडी दूरपर एक कुत्ता जूठी रोटीके टुकडे खा रहा था। वे चट दौड़कर उसके पास गये, उसको छातीसे लगाकर वोले—'भैया ! तुम मुझे बिना खिलाये क्यो खा रहे हो ?' फिर उसीके साथ खाने लगे। भोजनके अनन्तर वे फिर कालीजीके मन्दिरमे चले आये, इतनी भक्तिसे माताको स्तुति करने लगे कि सारे मन्दिरमें सन्नाटा छा गया। जव वे जाने लगे तो रामकृष्ण परमहंसने अपने भतीजे हृदय मुकर्जीसे कहा—'वच्चा ! इस साधुके पीछे-पीछे जाओ और जो वह कहे, मुझसे आकर कहो।' हृदय उसके पीछे-पीछे जाने लगा। साधुने घूमकर

उससे पूछा कि 'मेरे पीछे-पीछे क्यों आ रहा है ?' हृदयने कहा—'महात्मा-जी ! मुझे कुछ शिक्षा दीजिए ।' साधुने उत्तर दिया—'जब तू इस गन्दे घड़ेके पानीको और गंगाजलको समान समझेगा और जब इस बाँसुरीकी आवाज़ और इस जन-समूहकी कर्कश आवाज़ तेरे कानोंको समान मधुर लगेंगी, तब तू सच्चा ज्ञानी बन सकेगा ।'

हृदयने लौटकर श्री रामकृष्ण परमहंससे कहा । श्री परमहंस बोले—'उस साधुको वास्तवमें ज्ञान और भक्तिकी कुंजी मिल चुकी है । पहुँचे हुए साधु समदर्शी होते हैं ।'

भय !

एक बार गुरु मच्छिन्द्रनाथ अपने शिष्य गोरखनाथके साथ कहीं जा रहे थे । रास्तेमें गुरुने अपनी झोली शिष्यको ले चलनेके लिए दे दी । गोरखनाथको वह झोली भारी-भारी लगी । चुपकेसे देखा तो सोनेकी ईंटें !

आगे चलकर गुरुने मुड़कर शिष्यसे पूछा—'बेटा, हमें इस निर्जन वनमें-से होकर जाना है, रास्तेमें कुछ भय तो नहीं है ?'

गोरखनाथ बोले—'गुरुजी, भयको तो मैं कभीका रास्तेमें फेंक आया हूँ, आप निश्चिन्त होकर चले चलिए ।'

सहनशीलता

पुराने जमानेमें किसी शहरमें एक वृद्ध महात्माको किसी झूठे इलज़ाम-में पकड़कर कोड़े लगाये जा रहे थे । लेकिन महात्मा शान्त और अविचल भावसे सहन किये जा रहे थे ।

एक सज्जनने यह दृश्य देखा । पास जाकर पूछा—'महाराज ! आप तो इतने वृद्ध और दुर्बल हैं फिर भी ऐसी सख्त मारको शान्त भावसे कैसे सह रहे हैं ?'

महात्मा बोले—'विपत्तिको आत्मशक्तिसे सहा जाता है, शरीर-बलसे नहीं ।'

प्रार्थना

हे प्रभो, मेरी यह प्रार्थना नही है कि सकटके समय मेरी रक्षा करो, मैं तो केवल यह चाहता हूँ कि सकटोसे डरकर भागूँ नही। मैं यह नही चाहता कि दु.ख-सन्तापसे मेरा चित्त व्यथित हो जाये तो तुम मुझे सान्त्वना दो, बल्कि यह कि मुझे दु खोपर विजय प्राप्त करनेकी शक्ति दो।

आवश्यक सहायता न मिलनेपर हिम्मत न हारूँ, मेरा बल क्षीण न हो जाये, बस यही चाहता हूँ।

व्यवहारमें हानि उठानी पडे, या लोग मुझे लूट लें, इसकी मुझे परवाह नहीं, लेकिन हिम्मत हारकर मैं यह कहते हुए रोने न बैठूँ कि 'हाय मेरा सर्वस्व जाता रहा, अब मैं क्या करूँ?' बस इतना ही चाहता हूँ।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

जैसी भावना वैसी सिद्धि

भगवान बुद्धका कथन था कि जैसी भावना रखोगे वैसे बनोगे।

उनके पास दो आदमी आये। एकने पूछा—'महाराज, मेरे इस साथीको क्या गति होगी। यह कुत्ता-सरीखे विचार और कर्म किया करता है। क्या अगले जन्ममें यह कुत्ता नही होगा?'

दूसरा बोला—'यह बिलकुल बिल्ली-सरीखा है। क्या अगले जन्ममें यह बिल्ली नही होगा?'

बुद्ध बोले—'भाइयो! जैसे तुम्हारे सस्कार होगे वैसा फल मिलेगा। जो किसीको कुत्ता समझता है वह स्वय कुत्ता बनेगा, जो किसीको बिल्ली समझता है वह स्वयं बिल्ली बनेगा।'

वेतन-वृद्धि!

एक बार श्री रविशंकर महाराजको खबर हुई कि शिक्षकोंमें उग्र असन्तोष फैल रहा है और यदि उनके वेतनमें वृद्धि न हुई तो वे मनोयोगपूर्वक काम नहीं करनेवाले। इसलिए उन्होने आश्रमके सब शिक्षकोको

वुलाकर कहा—"आज मैं आप लोगोको एक खुशखवर सुनाता हूँ। कलसे आपका वेतन दस रुपया वढ जानेवाला है। शिक्षक सुनकर गद्‌गद हो गये और आनन्दमे तालियाँ वजाने लगे। फिर महाराजने पूछा—'वताइए आपमें-से कितने वीडी पीते हैं ?' लगभग सवने हाथ ऊँचा कर दिया। आगे पूछा—'रोज़ कितनी वीडी पीते हैं ?' जवाव मिला–'दो-चार आनेकी।'

महाराजने कहा—'अच्छा। और चाय कौन-कौन पीते हैं ?'

'सव ही !'

'तो अगर आप सव चाय और वीडी छोड दें तो आपका वेतन दस रुपया वढ जाता है या नही ? और इस प्रकार आप सुसंस्कारी भी वनेंगे और वालकोंको वुरी आदतोंसे दूर भी रख सकेंगे।'

यश-तृष्णा

राजा भोजके दरवारमें एक धनपाल नामक जैन पण्डित थे। कहा जाता है कि वर्षोंके परिश्रमके वाद उन्होने वाणकी कादम्वरीका प्राकृतमे अनुवाद किया था। राजाने धनपालसे कहा—'इस ग्रन्थके साथ मेरा नाम जोड दो तो यथेच्छ स्वर्णमुद्राएँ दूँ।' धनपाल धर्माचारी थे। उन्होंने नम्र दृढता पूर्वक राजाकी वात माननेसे इनकार कर दिया।

अपना ही आश्रित पण्डित ऐसी गुस्ताखी करे ! राजाने आगववूला होकर सारा अनुवाद जला दिया ! धनपालको वड़ा दारुण दु ख हुआ। खाना-पीना तक छूट गया। यूँ उन्हें उदासीन देखकर उनकी पुत्रीने पूछा–'पिताजी, शोकमग्न क्यों रहा करते हैं ? मुझे तो वताइए।'

धनपालने सारा किस्सा सुना दिया। पुत्री वोली—'अरे, इसमें क्या है ! आपकी पाण्डुलिपि अल्पविराम सहित मुखाग्र है मुझे। आप लिखिए, मैं वोलती जाती हूँ।'

कादम्वरी प्राकृतमें तैयार हो गयी। पुत्रीकी इस अद्‌भुत शक्तिसे

धनपाल इतने मुग्ध हुए कि उसीके नामपर उस पुस्तकका नाम 'तिलक-मंजरी' रख दिया ।

आनन्द

न्यायमूर्ति रानाडेको कलमी आम बहुत पसन्द थे । एक बार आमोंकी टोकरी आयी । रमाबाईने आम काटकर न्यायमूर्तिके सामने तश्तरीमें रखे । उन्होंने उनमें-से एक-दो फांक खायी । कुछ देर बाद रमाबाईने आकर देखा तो आमकी फांकें रखी हुई हैं । उन्हें अच्छा नहीं लगा । वे बोलीं—'आपको आम पसन्द है, इसलिए मैं इन्हें काटकर लायी । आप खाते क्यों नहीं ?'

रानाडे बोले—'आम अच्छे लगते हैं इसके क्या ये मानी हैं कि आम ही खाता रहूँ । एक फांक खा ली । जीवनमें दूसरे आनन्द भी तो हैं ।'

सात अवसर

सात मौकोंपर मैंने अपनेको क्षुद्र बनते देखा—

१. जब मैं आदमीके आगे नम्र रंक बना, इस आशासे कि इससे दुनियामें बुलन्दी-मर्तबा हासिल करूँगा ।

२ जब मैं कमजोरोंके सामने घमण्डसे अकडकर चलने लगा । मानो मेरी शक्ति मेरे विकासका एक अंश न होकर दुर्बलोपर रौब जमानेका एक जरिया हो ।

३. कठिनाइयोंसे भरे कर्तव्य-क्षेत्र और सुगम रस्ते सुखमें-से एकको चुननेका अवसर आनेपर जब मैंने सरलतासे मिलनेवाला सस्ता सुख चुना ।

४ जब मैंने अपराध करके उसका पश्चात्ताप और परिमार्जन करनेके बजाय उसका समर्थन करते हुए कहा—'ऐसा तो चला ही करता है । दूसरे भी तो यही करते हैं ।'

५. जब अपनी कमजोरीको मैंने बरदाश्त कर लिया। इतना ही नही—उसीमे भक्ति मान ली।

६ जब मैंने कुरूप चेहरेकी ओर नफरत-भरी नजरसे देखा, मगर यह नही जाना कि नफरतका ही एक परदा यह कुरूपता है।

७ जब किसीसे अपनी तारीफ सुनकर मैंने समझा कि सचमुच मैंने अच्छा काम किया है। दूसरोकी तारीफ़को अच्छाईकी कसौटी मान लेना—यह तो हद हो गयी !

इस तरह सात अवसरोपर मैंने अपनेको क्षुद्र बनते देखा।

सूफ़ी सन्त गज़्ज़ाली

सूफियोमें सबसे बडा दार्शनिक ग़ज़्ज़ाली हुआ है। एक दिन उसे लगा कि सारी सम्पत्तिको तिलाजलि दे देनी चाहिए। वह कहता है—'मैंने कर्मोपर ध्यान दिया तो मुझे मालूम हुआ कि सबसे मुख्य विद्यादान और अध्यापन कर्म हैं, लेकिन जिस वक्त मुझे यह मालूम हुआ कि मैं कुछ ऐसी विद्याओंको पढ रहा हूँ जो मोक्षकी दृष्टिसे सार-रहित हैं तो मेरे आश्चर्यकी सीमा न रही। जब मैंने यह विचार किया कि दूसरोको किस लिए उपदेश देता हूँ तो जाना कि दर असल ईश्वरीय कर्म करनेके बजाय मैं अबतक नामवरी और वाह-वाहीकी निरर्थक कामनासे प्रेरित था। एक ओर सांसारिक तृष्णा मुझे झमेलेमें डालना चाहती थी, दूसरी ओर धर्मकी ध्वनि मेरे कानोमें कह रही थी—'उठो उठो! तुम्हारे जीवनका अन्त निकट आ रहा है और तुम्हें अभी लम्बी यात्रा करनी है। तुम्हारे कल्पित दानका अहकार मिथ्या है। अगर तुम आज बन्धन काटना नही चाहते तो कब काटोगे ?'

गज़्ज़ालीके मनपर इन विचारोका ऐसा प्रभाव पडा कि उसने धर्माचार्यका उच्चपद त्याग दिया और सीरिया चला गया। वहाँ उसने दो

वर्ष तक आत्मिक ज्ञान प्राप्त करनेका प्रयत्न किया, लेकिन उसका प्रयास निष्फल हुआ। अन्तमें उसने सूफियोंका आश्रय लिया और मनोवाछित फल पाया। सूफियोंसे उसने मनकी शुद्धि और ईश्वराराधनके मार्ग सीखे।

जिस समय गज्ज़ाली मरने लगा तो उसने अपना कफन मँगवाया, उसको दोनों हाथोंमें लेकर चूमा, अपनी आँखोंसे लगाया और अन्तमें अपने पैर फैलाकर लेट रहा।

गज्ज़ाली लिखता है कि 'सूफियोंके जीवनसे अधिक सुन्दर, उनके सद्व्यवहारसे अधिक श्लाघनीय और उनके सदाचारसे अधिक पवित्र कोई वस्तु नहीं है। उनका उद्देश्य विषयोंके कठोर बन्धनसे मनको मुक्त करना और बुरी वासनाओं और संकल्प-विकल्पोंसे मनको बचाना है, ताकि शुद्ध हृदयमें केवल परमात्माके वास और उसके आराधनके लिए स्थान हो सके।'

सूफियोंकी ज़िन्दगी सत् चित् और आनन्दकी खोजमें बीतती है। वह इस सिद्धान्तमें अटल विश्वास रखते हैं कि—'यहाँ भी तू वहाँ भी तू, ज़मीं तेरी फलक तेरा।' मीराके समान सूफी तपस्विनी रबिया कहती है कि, 'ईश्वरके प्रति भक्ति मुझे शैतानके प्रति घृणा करनेका अवकाश नहीं देती।'

दावत

एक बार सुकरातने कुछ धनी लोगोंको भोजनपर बुलाया। उनकी पत्नीने कहा—'मुझे तो ऐसा मामूली खाना खिलानेमें लज्जा आयेगी।'

सुकरात बोले—'इसमें लज्जाकी कोई बात नहीं। महमान अगर समझदार होंगे तो उन्हें खाना अरुचिकर नहीं लगेगा; अगर अरुचिकर लगा भी तो वह सहन कर लेंगे। और अगर वह बेवकूफ होंगे तो हमें शर्मिन्दा होनेकी ज़रूरत नहीं।'

वर्षण

एक दिन सुकरातकी कर्कशा स्त्री उनसे झगड पडी। बडा गर्जन-तर्जन किया। लडाईकी पूर्णाहुति स्वरूप उसने सुकरातपर गन्दा पानी डाल दिया। सुकरात मुसकराते हुए बोले—'मै जानता था तुम गरजनेके बाद बरसोगी भी।'

साधना

एक बार सुकरातकी पत्नीने गुस्सेमें आकर उनका कोट फाड डाला। मगर वे शान्त रहे और पूर्ववत् मुसकराते रहे। उनका एक दोस्त, जो उनसे मिलने आया था, यह सब देखकर बोला—'आपने इनसे कुछ कहा क्यो नही?' सुकरात बोले—'जैसे सईस बिगडैल घोडेको साधता है, मैं इसे सुधारनेकी कोशिश करता हूँ। दूसरे, इसकी बदमिज़ाजी झेलकर दुनियाका दुर्व्यवहार सहना सीखता हूँ।'

कैसी गुजरी

एक बादशाहने एक फकीरको बे-अदब समझकर पकड़वा लिया। उसे रात-भर तालाबमें खडा रखा। और खुद रनवासमे रागरगमें मस्त रहा। सुबह होनेपर उसने फकीरको दरबारमें बुलवाकर पूछा—'कहो उस्ताद! कैसी गुजरी?'

फकीर बोला—'कुछ तेरी-सी गुजरी, कुछ तेरेसे अच्छी गुजरी!'

ब्रह्मर्षि

परम प्रतापी क्षत्रिय नरेश तपस्वी विश्वामित्र 'राजर्षि' तो थे ही, 'ब्रह्मर्षि' बनना चाहते थे।

महर्षि वशिष्ठके 'ब्रह्मर्षि' मान लेनेपर उन्हे 'ब्रह्मर्षि' को पदवी मिल सकती थी।

विश्वामित्रने बड़ी तपस्या की, परन्तु वशिष्ठ उन्हे 'राजर्षि' ही कहते रहे।

विश्वामित्रका क्रोध जाग उठा। उन्होने वशिष्ठजीके सभी पुत्रोको मरवा डाला। परन्तु यह सब देखते हुए भी वशिष्ठ शान्त रहे। इधर विश्वामित्रने वशिष्ठको भी समाप्त कर देनेका सकल्प कर लिया।

सामनेके मुकाबलेमें तो विश्वामित्र कई बार मुँहकी खा चुके थे। इसलिए वशिष्ठकी हत्या करनेके इरादेसे वे रातको उनके आश्रममे पहुँचे।

पूर्णिमाकी रात्रि थी। निर्मल आकाश, चारो ओर शान्ति छायी हुई थी। महर्षि वशिष्ठ अपनी पत्नी अरुन्धतीके साथ कुटियासे बाहर एक वेदिकापर विराजमान थे।

'कितनी साफ कितनी निर्मल चाँदनी है!' अरुन्धतीने कहा।

'ऐसी उजली जैसे विश्वामित्रकी तपस्याका तेज!'

वृक्षोकी झुरमुटमें छिपे हुए विश्वामित्र यह सुनकर चौंक पडे—'एकान्तमें अपनी पत्नीसे अपने शत्रुकी, अपने पुत्रोके हत्यारेकी, प्रशसा करनेवाले यह महापुरुष! और इनकी हत्याका सकल्प लेकर रातमें चोरकी तरह आनेवाला मैं नरपिशाच!'

महात्मा वशिष्ठके हृदयकी विशाल उदारताको देखकर विश्वामित्रका अन्तरग बदल गया। उन्होने अपने तमाम अस्त्र-शस्त्र फेंक दिये और दौडकर वशिष्ठके सन्मुख जमीनपर जा पडे—'मुझ अधमको क्षमा करें।'

पहचाने हुए स्वरको सुनकर अरुन्धती चकित हो गयी। महर्षि वशिष्ठ वेदीसे कूदे और चरणोमें पडे हुए व्यक्तिको उठानेके लिए झुकते हुए स्नेहपूर्ण कण्ठसे बोले—'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र।'

उसको दे मौला

लखनऊका नवाब आसिफुद्दौला बडा दानी था। उसके यहाँसे कोई खाली हाथ नहीं आता था। एक बार वह दरबारमें बैठा हुआ था कि उसके कानमें किसी फकीरके ये शब्द पडे—

जिसको न दे मौला ।
उसको दे आसिफुद्दौला ॥

नवावने फकीरको वुलाया और उसे एक तरवूज भेंट दिया। वड़ी आशासे आया हुआ फकीर इस क्षुद्र दानसे असन्तुष्ट रहा। पर क्या करता, तरवूज लेकर चल दिया। रास्तेमें उसे एक और फ़कीर मिला। तरवूज़ देखकर उसके मुँहमें पानी छूटने लगा। उसने कहा—'तरवूज़ वेचोगे क्या ?' पहला फ़क़ीर तैयार हो गया और उसने दो पैसेमें वह तरवूज़ वेच डाला।

दूसरे फकीरने घर आकर तरवूज़ तराशा तो उसमें-से हीरा, मोती और माणिक निकले।

कुछ दिनों वाद पहला फकीर फिर नवावके दरवारमें आया और फिर वह सदा लगायी—

'जिसको न दे मौला, उसको दे आसिफुद्दौला।'

'क्यों, वह तरवूज़ खाया था क्या ?' नवावने पूछा।

'नहीं, उसे तो मैंने दो पैसेमें वेच दिया था।'

'अरे, अरे ! तुम वडे कमनसीव हो ! उसमें जवाहिरात भरे थे !'

सुनकर फकीरको वेहद पश्चात्ताप हुआ। नवावने कहा—'आइन्दा यह झूठी सदा न लगाना, वल्कि कहा करना कि—

'जिसको न दे मौला,
उसको न दे आसिफुद्दौला।
जिसको न दे आसिफुद्दौला,
उसको दे मौला ॥'

निर्माता

जव नदीका पुल वन चुका तो उसके एक खम्भेपर खुदवाया गया—
'यह पुल नवाव यूसुफ़यारजंगने वनवाया।'

एक शाम एक सिलविल आदमी वहाँ आया। उसने उस लिखावटको कोलतारसे पोतकर लिखा—'इस पुलके पत्थरोंको गधे ढोकर लाये थे। वे ही इसके बनानेवाले हैं। इस पुलपर चलनेवाले उन्हींका आभार मानें।'

लोगोंने जब यह पढा तो कोई कहकहे लगाने लगे, कोई ताज्जुब करने लगे, कोई लिखनेवालेको खब्ती बताने लगे।

लेकिन एक गधा, हँसकर, दूसरेसे बोला—'तुम्हें याद है न कि पत्थरोंको तो हमी लाये थे। फिर भी अबतक यही कहा जाता रहा कि इस पुलको नवाब यूसुफयारजंगने बनवाया।'

पागल

एक पागलखानेके बाग़में मुझे एक युवक मिला जिसके खूबसूरत और जर्द चहरेसे हैरतके आसार नुमायाँ थे।

मैं बेंचपर उसके पास बैठ गया और उससे पूछा—'आप यहाँ कैसे आये?'

उसने मुझे साश्चर्य देखा, और बोला—'यह एक अशोभन प्रश्न है, फिर भी मैं इसका जवाब देता हूँ। मेरे पिता मुझे अपनी प्रतिमूर्ति बनाना चाहते थे, मेरे चाचा भी। मेरी माँ मुझे अपने मशहूर पिताके समान बनाना चाहती थी। मेरी बहन चाहती थी कि मैं उसके जहाजी पतिके पूर्ण आदर्शका अनुगमन करूँ। मेरे भाईका खयाल है कि मैं उस-जैसा अच्छा पहलवान बनूँ।

मेरे शिक्षक—दर्शनशास्त्री, संगीताचार्य, तर्कतीर्थ—भी निश्चित-मत थे कि मैं हूबहू उनके मानिन्द ही बनूँ।

इसलिए मैं इस जगह चला आया। यहाँ जरा समझदारीका वातावरण है। यहाँ कमसे कम, मैं अपनेपनमें तो रह सकता हूँ।'

तब एकाएक वह मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर पूछने लगा—'अब आप बताइए, क्या आपको भी नसीहत और नेकसलाहने खदेडकर यहाँ पहुँचा दिया ?'

'ना, मैं तो दर्शक हूँ ।'

वह बोला—'अच्छा, तो आप उन लोगोंमे-से हैं जो इस दीवारके दूसरी तरफवाले पागलखानेमें रहते हैं ।'

कपडे

एक रोज़ सुरूपता और कुरूपता किसी समन्दरके किनारे मिली । और एक दूसरीसे बोली—'आओ समन्दरमें नहायें ।'

उन्होंने कपडे उतार दिये और पानीमें तैरने लगीं । कुछ देर बाद कुरूपता किनारेपर लौट आयी और सुरूपताके कपडे पहनकर चलती बनी ।

सुरूपता भी समन्दरसे निकली । देखा कि उसके कपडे ग़ायब हैं । मगर वह शर्मके मारे नंगी तो रह नहीं सकती थी, इसलिए उसने कुरूपताके कपडे पहने और चल दी ।

अब आज तक लोग कुरूपताको सुरूपता और सुरूपताको कुरूपता समझते हैं ।

लेकिन कुछ ऐसे हैं जिन्होंने सुरूपताके चेहरेको देखा है और वे उसे उसके बदले हुए कपडोंमें भी जान जाते हैं । और कुछ ऐसे भी हैं जो कुरूपताके चहरेको जानते हैं और उसके कपडोंमें भी उसे देख लेते हैं ।

ज्ञान और अर्ध-ज्ञान

एक नदीके किनारे तैरते हुए लट्ठेपर चार मेंढक बैठे हुए थे । एकाएक लट्ठा धारामें बह चला । मेंढक आनन्दसे मस्त हो गये । क्योंकि उन्होंने ऐसी जलयात्रा पहले कभी नहीं की थी ।

बहुत देर बाद पहला मेंढक बोला—'सचमुच यह बडा ही अजीब लट्ठा है। यह तो जिन्दोकी तरह चलता है। ऐसा लट्ठा पहले किसीने नही देखा।'

तब दूसरा मेंढक बोला—'नहीं, मेरे दोस्त, यह लट्ठा और लट्ठों-जैसा ही है। यह नही चल रहा। चल तो नदी रही है समन्दरकी ओर, और हमें और लट्ठेको अपने साथ लिये जा रही है।'

तीसरा मेंढक बोला—'न तो लट्ठा चल रहा है और न नदी। गति तो हमारी विचारकतामें है। क्योंकि विचारके बगैर कोई चीज नही चलती।'

तीनो मेंढक इस बातपर झगडने लगे कि चल दरअसल कौन-सी चीज रही है। झगडा अधिकाधिक गरमी और जोर पकडता गया, लेकिन वे सहमत न हो सके।

तब उन्होंने चौथे मेंढककी ओर देखा जो कि अबतक ध्यानसे सब सुन रहा था मगर शान्त था और उन्होंने उसकी राय माँगी।

चौथा मेंढक बोला—'तुममें-से हर एक ठीक है, ग़लत कोई नही। गति लट्ठेमें है और पानीमें है और हमारे विचारमें भी है।'

इसपर तीनो मेंढकोंको बडा गुस्सा चढा, क्योंकि कोई यह बात मानने-के लिए तैयार नही था कि उसीकी बात पूर्ण सत्य नही है और यह कि बाकी दोनोंकी बात सर्वथा मिथ्या नही है।

तब अजीब बात हुई तीनो मेंढक मिल गये और उन्होंने चौथे मेंढकको ढकेलकर नदीमें गिरा दिया।

शेरकी बेटी

एक बूढी रानी अपने सिंहासनपर सोयी हुई थी। चार गुलाम खडे हुए उसे पखा झल रहे थे और वह खुर्राटे ले रही थी। रानीकी गोदमें एक बिल्ली पडी लापरवाहीसे गुलामोंकी तरफ घूर रही थी।

पहला गुलाम बोला—'यह औरत सोती हुई कैसी बदशक्ल लगती है। इसका मुँह देखो कैसा लटका हुआ है, सांस तो ऐसे ले रही है मानो शैतान उसका हलक़ दबोच रहा हो।'

इसपर बिल्ली बोली—'यह सोती हुई इतनी बदशक्ल नहीं लगती जितने तुम जगे हुए गुलाम लगते हो।'

दूसरा गुलाम बोला—'कोई बुरा ख्वाब देख रही मालूम होती है।'

बिल्ली बोली—'क्या ही अच्छा हो कि तुम भी सोकर अपनी आजादी-के ख्वाब देखो।'

तीसरा गुलाम बोला—'शायद अपने कत्ल किये हुए लोगोका जुलूस देख रही है।'

बिल्ली बोली—'हाँ, तुम्हारे पुरखो और तुम्हारी सन्ततिका जुलूस देख रही है।'

चौथा गुलाम बोला—'इसकी चर्चा करते हुए भी, मुझे तो खड़े-खड़े पंखा झलनेमे कटाला आता है।'

बिल्ली बोली—'क़यामत तक तुम तो पखा ही झलते रहोगे, क्योकि जैसा यह लोक वैसा ही वह लोक है।'

इस वक्त रानीका सिर हिला, और उसका ताज ज़मीनपर गिर पड़ा।

एक गुलाम बोला—'यह तो अपशकुन है।'

बिल्ली बोली—'एकका अपशकुन दूसरेका शुभ शकुन।'

दूसरा गुलाम बोला—'अगर यह जाग गयी और अपने ताजको गिरा हुआ देख लिया, तो हमें मार ही डालेगी।'

बिल्ली बोली—'तुम्हारे जन्मसे ही वह तुम्हें रोज़ मारती आ रही है और तुम्हें इसकी खबर भी नही।'

तीसरा गुलाम बोला—'हमे मार डालेगी और कहेगी कि देवताओको बलि चढ़ा दी।'

बिल्ली बोली—'केवल दुर्बलोकी ही बलि दी जाया करती है।'

चौथे गुलामने सबको चुप करके धीमेसे ताज उठाया और बिना उसे जगाये, बूढी रानीके सिरपर रख दिया।

बिल्ली बोली—'सिर्फ गुलाम ही गिरे हुए ताजको फिर उठाकर रखता है।'

कुछ देर बाद रानी जगी, अपने चारो तरफ देखा और जम्हाई ली। तब बोली—'मै सपना-सा देख रही थी, कि किसी पुराने शाहबलूतके पेड-के तनेपर चार केचुए जा रहे है और एक बिच्छू उनके पीछे चक्कर काट रहा है। मुझे अपना सपना अच्छा नही लगा।'

उसने आँखें बन्द कर ली और फिर सो गयी और खुर्राटे भरने लगी और गुलाम उसे पंखा झलते रहे।

बिल्ली बोली—'झले जाओ, झले जाओ, अहमको। तुम उस आगको पंखा झल रहे हो जो तुम्हें भस्म कर रही है।'

न्यायाधीश

दिल्लीका बादशाह गयासुद्दीन मुहम्मद एक बार तीरन्दाजीकी मश्क कर रहा था कि एक तीर किसी लडकेको लगा और वह मर गया।

लडकेकी माँने काजीके यहाँ फरियाद की।

काजीने हुक्म निकाल दिया कि बादशाह एक मुज़रिमके तौरपर अदालतमें हाज़िर हो।

बादशाद अदालतमें हाजिर हुआ और मुज़रिमके कठघरेमें खडा कर दिया गया।

काजी—'इस शिकायतके खिलाफ तुम्हें कुछ कहना है?'

बादशाह—'नही। मैं अपना जुर्म कबूल करता हूँ। और मुआवज़ेके तौरपर अपनी जान तक देनेके लिए तैयार हूँ।'

यह सुनकर फरियादी औरत बोल उठी—'काज़ी साहब, मुझे न्याय मिल गया। मुझे अब कुछ नही चाहिए।'

अदालत बरखास्त हो गयी।

रास्तेमें बादशाह बोला—'काजी साहब, अगर आज आपने इन्साफ न दिया होता तो मैं इस तलवारसे''' ' '।'

क़ाज़ी फौरन् अपना डण्डा दिखाकर बोला—'और और आपने अपने जुर्मका इकबाल न किया होता तो मैं आपकी हड्डियाँ तोड देता।'

उपाधियाँ

इंग्लैण्डका बादशाह जेम्स अपना खज़ाना भरनेके लिए उपाधियाँ बेचा करता था। वह जानता था कि किसी उपाधि या लकबसे कोई महान् नही बन जाता, महान् बननेके लिए तो सद्गुण चाहिए। मगर वह मूर्ख लोगोकी तुच्छ अहकार-वृत्तिका पोषण करके फायदा उठाता था।

एक रोज एक मान चाहनेवाला उसके दरबारमे आया।

'आपको कौन-सी उपाधि चाहिए ?''

'मुझे 'सज्जन' बना दीजिए।'

'मैं आपको लॉर्ड, ड्यूक, वग़ैरह बना सकता हूँ, लेकिन सज्जन बना सकना मेरी ताकतसे बाहर है।'

आखिरी उपदेश

यूनानके महात्मा अफलातूनने मरते वक्त अपने सब बालकोको बुला-कर कहा—

१ क्षमा—किसीने तुम्हारे खिलाफ कुछ कहा हो या किया हो उसे भूल जाना।

२. निरहंकार—अपने किये उपकारको भूल जाना।

३ विश्वास—यह बात दिलकी दीवारपर लिखकर रखना कि कोई भला-बुरा नही कर सकता, जो करता है सो सिरजनहार करता है।

४. वैराग्य—एक दिन सबको मरना है यह हमेशा याद रखना।

भूखा भगवान्

नारदने भगवान्से पूछा—'भगवन्! आप संसारके समस्त ऐश्वर्यके स्वामी होकर भी भर पेट भोजन क्यो नही करते ?'

भगवान् बोले—'नारद! अगर मै पेट भरकर खाऊँ तो दुनियामें भूखो मरते लोगोका दु ख न जान सकूँ, इसलिए मैं पेट भरकर नही जीमता।'

अज्ञात सेवा

मूर युद्धमें सेनापति सिडनी घायल होकर ढह पडा।

उसी वक्त वहाँ एक सिपाही आ पहुँचा। प्रतिपक्षी सैनिकोने उसका तलवारोसे मुकाबला किया। सिपाहीने वीरतापूर्वक उनके प्रहारोका जवाब दिया और सिडनीको उठाकर घोडेपर बिठाकर दुश्मनोके वारोका मुकाबला करता हुआ छावनीपर पहुँच गया।

अशक्त सिडनीने धीमेसे पूछा—'सिपाही, तेरा नाम क्या है ?'

साहसी सैनिकने विनयपूर्वक जवाब दिया—'माफ करें साहब, मैंने नाम या इनामके लिए यह काम नहीं किया।'

यह कहकर वह सेनापतिको तम्बूमें सुलाकर सरीता हुआ चला गया।

बादमें सिडनीने उस सिपाहीकी बडी तलाश की, मगर उसका पता न लगा।

विशाल दृष्टि

चू प्रदेशके राजकुमारका धनुष खो गया। सिपाहियोंने कहा—'अगर हुजूरका हुक्म हो तो हम उसे पातालसे भी ढूँढकर ले आयें।'

राजकुमारने कहा, 'ऐसा करनेकी क्या ज़रूरत है? आखिर मेरा धनुष चू प्रदेशके ही किसी बाशिन्देके पास होगा न? भले ही देशकी चीज़ देशवासीके पास रहे।'

यह बात जब महात्मा कन्फ्यूशियसने सुनी तो वे बोले—'राजकुमारकी दृष्टि संकुचित है, वर्ना वे कहते कि, 'भले ही आदमीकी चीज़ आदमीके पास रहे।'

दो दोस्त

दो दोस्त अर्सेके बाद बुढापेमें मिले।
'तुम्हारी उम्र कितनी हो गयी?'
'खुदाका शुक्र है कि मैं बिलकुल तन्दुरुस्त हूँ।'
'संसार-व्यवहार ठीक चल रहा है?'
'खुदाका शुक्र है कि मैं किसीका देनदार नहीं।'
'किसी क़िस्मकी फ़िक्र तो नहीं रहती?'
'खुदाका शुक्र है कि मेरे कोई छोटे बच्चे नहीं हैं।'
'कोई दुश्मन तो नहीं है?'
'खुदाका शुक्र है कि मेरा कोई नज़दीकी रिश्तेदार नहीं है।'

—'अरेबियन विज़डम'

एकान्त और एकाग्रता

माइकेल एंजेलोसे एक मित्रने पूछा—'तुम ऐसा एकान्त जीवन क्यों गुजारते हो ?' उस कला-विधायकने जवाब दिया कि, 'कला और असाधारणता ईर्ष्यालु प्रिया है। वह मनुष्यका अनन्य प्रेम चाहती है।'

डिज़राइलीके कथनानुसार जब वह सिस्टाइन मन्दिरपर काम करता था तब उसने घरके भी किसी आदमीसे न मिलनेका नियम रखा था।

लात

सुकरात बड़े सत्यभक्त और स्पष्टवक्ता थे। सत्य अप्रिय होता है। और अप्रिय सत्यके कहनेवाले और सुननेवाले दुर्लभ होते हैं। एक बार सुक़रातकी साफगोईपर किसीने उन्हें पीट दिया। मगर सुकरातकी पेशानीपर शिकन तक न आयी। एक मित्र चकित होकर बोला—'आप मार खाकर भी चुप रह गये !'

सुक़रात—'अगर मुझे गधा लात मारे तो क्या मैं भी उसके लात मारूँ ?'

भजनका अधिकार

एक युवक विरक्त होकर एक सन्तके पास पहुँचा। भगवद्भजनकी प्रबल इच्छा थी।

सन्तने कहा—'तुम स्नान करके शुद्ध होकर आओ।'

युवक स्नान करने गया, और सन्तने आश्रमके पास झाड़ू देती हुई भगिनको बुलाया। वे बोले—'यह युवक जब स्नान करके लौटे तब तुम इस तरह झाड़ू लगाना कि उसपर धूल उड़कर आये। लेकिन ज़रा सावधान रहना वह मारने दौड़ सकता है।'

जब युवक लौटा तो भंगिन जान-बूझकर जोरसे झाड़ू लगाने लगी। धूल उडकर युवकपर आने लगी। उसने गुस्सेमें आकर पत्थर उठाया और भगिनको मारने झपटा। भंगिन असावधान नही थी। झाड़ू फेंककर दूर भाग गयी। युवक जो मुँहमें आया बकता रहा।

दुवारा स्नान करके वह महात्माके पास आया। सन्तने उससे कहा—'तुम तो पशुकी तरह मारने दौडते हो। अभी तुम भजनके लायक नहीं। एक वर्ष बाद आना। एक वर्ष तक नाम-जप करते रहो।'

वर्ष पूरा करके युवक फिर सन्तके सामने हाज़िर हुआ। साधुने उससे फिर स्नान कर आनेके लिए कहा। और उधर भगिनसे बुलाकर कहा कि, 'इस बार इसके लौटनेपर इस तरह झाड़ू देना कि झाड़ू इससे छू जाये। डरना मत। मारेगा नही। कुछ कहे तो चुपचाप सुन लेना।'

भगिनने आज्ञाका पालन किया। युवकको गुस्सा तो बहुत आया, मगर सिर्फ कुछ कठोर वचन कहकर फिर स्नान करने चला गया।

जब वह सन्तके पास पहुँचा तो वे बोले—'अभी भी तुम भूँकते हो। एक वर्ष और नाम-जप करो, तब आना।'

एक वर्ष और बिताकर युवक सन्तके पास आया। पहलेकी तरह फिर स्नान करके आनेकी आज्ञा मिली। और भगिनको आदेश दिया कि 'इस बार कूडेकी टोकरी उलट देना उसपर।'

भगिनके कूडा डालनेपर युवक न केवल शान्त रहा बल्कि भगिनके सामने जमीनपर मस्तक टेककर हाथ जोडकर बोला—'देवी! तुम मेरी गुरु हो। तुम्हारी ही कृपासे मैं अहकार और क्रोधको जीत सका!'

दुबारा स्नान करके जब युवक सन्तके पास पहुँचा तो उन्होने उसे हृदयसे लगा लिया। बोले—'अब तुम भजनके अधिकारी हुए।'

आनन्दका मूल्य

‘स्वामीजी, मैं बहुत दुःखी हूँ, मुझे आनन्दका मूलमन्त्र बताइए । नही तो मैं अपनी ज़िन्दगीको खत्म कर दूँगी ।’ न्यूयार्ककी एक धनी महिलाने, जिसके एक-पर-एक तीन पुत्र मर गये थे, शोकार्त वाणीमें स्वामी रामतीर्थ-से निवेदन किया और घुटने टेक स्वामीजीके सामने बैठ गयी ।

उन दिनो स्वामी रामतीर्थ अमेरिकामे अद्वैत दर्शनपर भाषण कर रहे थे । उनके भाषण और आचरणसे प्रभावित अमेरिकावासी उन्हे ‘मूर्तिमन्त आनन्द’ और ‘जीवित ईसामसीह’ कहते थे ।

स्वामीजी बोले—‘राम तुम्हें आनन्दका मन्त्र जरूर देगा, मगर उसके लिए तुम्हें माकूल कीमत अदा करनी होगी ।’

महिला आशान्वित होकर बोली—‘मेरे पास धन-दौलतकी कमी नही, आप जो फरमायेंगे दूँगी ।’

‘रामके परमानन्दमय साम्राज्यमें इस फानी दौलतकी कुछ कीमत नही, राम इससे भी बडी कीमत तुमसे माँगता है !’

‘स्वामीजी, आप कहिए तो मैं हर कीमतपर वह आनन्द प्राप्त करना चाहती हूँ ।’

‘तो फिर, रामके साम्राज्यमें भी आनन्दका क्या अभाव है !’ कहते हुए स्वामीजीने एक अनाथ हब्शी बालक महिलाको देते हुए कहा—‘लो, इसे पुत्रवत् पालना । यह स्वयं रामका आत्म-स्वरूप है ।’

महिला यह सुनकर काँप गयी । बोली—‘स्वामीजी, यह तो बडा हीन काम है ! यह मैं कैसे कर सकूँगी ?’

‘तो फिर आनन्दकी प्राप्ति भी तुम्हारे लिए कैसे मुमकिन हो सकती है !’ स्वामीजीने सरल भावसे कहा ।

नास्तिक

एक नास्तिक हमेशा किसी-न-किसी बातपर ईश्वरको कोसा करता। एक बार उसके खेतमें आलूकी फसल बहुत अच्छी हुई। लोगोंने सोचा इस बार उसे खुदाके खिलाफ शिकायतकी कोई वजह न मिल सकेगी। लेकिन अपने किसी दोस्तके सवालके जवाबमे नास्तिकने कहा—'यह परमात्मा भी कितना निर्दयी है! हाय! मेरी समझमें नही आ रहा है कि इस बार अपने सूअरोको खिलानेके लिए सडे आलू कहाँसे लाऊँगा!'

तीसरा विश्वयुद्ध

मान लेता हूँ कि तीसरा विश्वयुद्ध होगा, मगर मैं यह नही बता सकता कि उसमें किन हथियारोका उपयोग किया जायेगा। हाँ, चौथे विश्वयुद्धके बारेमें निश्चय-पूर्वक यह कह सकता हूँ कि वह 'पत्थरकी गदा' से लडा जायेगा।

—अलबर्ट आइस्टीन

कौन जोता ?

कोशल देशके राजा बड़े दानेश्वरी थे। उनकी दान-शीलताका यश दूर-दूर तक फैला हुआ था। दु खी लोग उन्हे अपना माँ-बाप समझकर दौडे आते।

कौशलराजकी यह कीर्ति महाराजा काशीराजको सहन न हुई। उन्होंने कौशलपर चढाई कर दी। कौशलराज हारकर जगलमे भाग गये।

लोगोंमें हाहाकार मच गया। सब कहने लगे, राहु चन्द्रको निगल गया। लक्ष्मीने भी बलवान्को पसन्द किया, धर्मात्माकी तरफ न देखा। हमारा शिर-छत्र चला गया।'

काशीराज यह सुन-सुनकर और जले। उन्होने ढिढोरा पिटवा दिया कि जो कोई कौशलराजको जिन्दा या मरा हुआ लायेगा उसे हजार अशर्फियाँ इनाम दी जायेंगी।

कौशलराज फटेहाल जगल-जंगल मारे फिर रहे थे। एक दिन एक दुर्दशाग्रस्त वणिक्-पथिकने उनसे कौशल देशका रास्ता पूछा।

राजाने पूछा—'उस अभागे देशमे क्यो जा रहा है, भाई ?'

वणिक्की धनहानिकी दु खगाथा सुनकर राजा सजल-नेत्र हो गये। वोले—'चल तेरी मनोकामना-पूर्तिका मार्ग बताऊँ ?'

जटाजूट राजा उसे काशीराजके दरबारमें ले गये। कहा—'काशी-राज ! मैं कौशलराज हूँ। मुझे पकडकर लानेवालेके लिए आपने जो इनाम घोषित किया है वह मेरे इस साथीको प्रदान कराइए।'

सारी सभामें सन्नाटा छा गया। काशीराज भी स्तम्भित रह गये ! कुछ क्षण बाद शान्त स्वरोमें बोले—'कौशलराज, तुम धन्य हो ! मै तुम्हे तुम्हारा सारा राज्य देता हूँ और अपना हृदय भी। अब इसी सिहासनपर बैठकर राज्य-भण्डारमें-से इस वणिक्को जितना चाहो धन दे दो।'

यह कहकर उन्होने उन्हें सिहासनपर बिठाकर राजमुकुट पहनाया।

सारी सभा हर्षित हो जय-जयकार करने लगी।

—टैगोरकी एक कहानीके आधारपर

वैराग्य

श्री शुकदेवजी जन्मते ही वनको चलने लगे। यह देखकर उनके पिता श्री व्यासजी बोले—'बेटा ! कुछ दिन ठहरो। मैं तुम्हारे कुछ सस्कार तो कर दूँ।'

इसपर शुकदेवजीने कहा—'अबतक जन्म-जन्मान्तरोमें मेरे असख्य सस्कार हो चुके हैं। उन्होने ही मुझे भव-वनमें भटका रखा है। इसलिए अब मैं उनसे कोई सरोकार नही रखना चाहता।'

व्यासदेव—'तुम्हें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रममें प्रवेश करना चाहिए। तभी मोक्ष प्राप्त हो सकेगा।'

शुकदेव—'अगर ब्रह्मचर्यसे मोक्ष होता हो तब तो नपुंसकोंको वह सदा ही प्राप्त रहता होगा। अगर गृहस्थ आश्रमसे मोक्ष मिलता हो तब तो सारी दुनिया ही मुक्त हो गयी होती। अगर वानप्रस्थोंको मोक्ष होता हो तो सभी पशु-पक्षी मुक्त हो जायें। अगर संन्याससे मोक्ष मिला करता हो तो सब दरिद्रोंको वह फौरन् मिल जाना चाहिए।'

व्यासदेव—'सद्गृहस्थोंके लिए लोक-परलोक दोनों सुखद होते हैं। गृहस्थका संग्रह हमेशा सुखदायक होता है।'

शुकदेव—'यह तो हो सकता है कि सूरजसे बर्फ गिरने लगे, चन्द्रमासे ताप निकलने लग जायें, लेकिन परिग्रहसे कोई सुखी हो जाये यह तो त्रिकालमें भी सम्भव नहीं है।'

व्यासदेव—'बालक जब धूलमें लिपटा, तेज़ चलता और तोतली वाणी बोलता है तब वह सबको अपार आनन्द देता है।'

शुकदेव—'धूलिमें लोटते हुए अपवित्र शिशुसे सुख या सन्तोषकी प्राप्ति सर्वथा अज्ञानमूलक है। उसमें सुख माननेवाले अज्ञानी हैं।'

व्यासदेव—'पुत्रहीन आदमी नरक जाता है।'

शुकदेव—'अगर पुत्रसे ही स्वर्ग मिल जाया करता तो सूअरों, कुत्तों और टिड्डियोंको तो वह खास तौरसे मिलता।'

व्यासदेव—'पुत्रके दर्शनसे मनुष्य पितृ-ऋणसे मुक्त हो जाता है। पौत्र-दर्शनसे देव-ऋणसे मुक्त हो जाता है और प्रपौत्रके दर्शनसे उसे स्वर्ग-की प्राप्ति होती है।'

शुकदेव—'गीधोंकी बड़ी लम्बी उम्र होती है। वे अपनी कई पीढ़ियाँ देखते हैं। पौत्र, प्रपौत्र तो मामूली चीज़ें हैं उनके लिए। पर पता नहीं उनमें-से अबतक कितनोंको मोक्ष मिला।'

यह कहते हुए शुकदेवजी वनमें चले गये।

आश्चर्य

यक्ष—'सबसे बडा आश्चर्य क्या है ?'

युधिष्ठिर—'यही कि रोज बेशुमार लोग मरते चले जा रहे हैं, फिर भी जीनेवालाको यह नहीं लगता कि एक रोज हमें भी मरना होगा।'

कल

धर्मराज युधिष्ठिरके पास कोई भिखारी आया। वे उस समय काममें लगे हुए थे, नम्रतापूर्वक बोले—'भगवन्, आप कल आइए, आपको इच्छित वस्तु दे दी जायेगी।'

भिखारी चला गया। लेकिन भीम उठकर दुन्दुभि बजाने लगे। सेवकोंको भी मंगलवाद्य बजानेकी आज्ञा दे दी। धर्मराजने पूछा—'आज इस वक्त खुशीके बाजे क्यो बज रहे हैं ?'

भीम—'इसलिए कि महाराजने कालको जीत लिया !'

युधिष्ठिर (चकित होकर)—'मैंने कालको जीत लिया ?'

भीम—'महाराज ! आपने भिखारीको अभीष्ट दान कल देनेको कहा है, इसलिए कमसे कम कल तकके लिए तो आपने कालको जीत ही लिया है।'

युधिष्ठिरको अपनी गलतीका भान हो गया।

गुण-दर्शन

एक साधु किसी आदमीके साथ कहीं जा रहे थे। रास्तेमें एक मरा हुआ कुत्ता मिला जो बिलकुल सड गया था। आदमी बोला—'महाराज ! बचकर चलिए, देखिए इस गलीज कुत्तेसे कैसी बदबू मार रही है !'

साधु बोले—'अहा ! इस कुत्तेके दाँत कैसे साफ और चमकीले है !'

अधिकार

एक आलीशान दुकानके सामने अनाजकी ढेरी लगी थी। एक बकरा आया। उसने ढेरीपर मुँह मारा। दूकानके तरुण मालिकने लाठी उठाकर बकरेके सिरपर ज़ोरसे मारी। बकरा मिमियाता हुआ भाग गया।

यह घटना देखकर एक सन्तको हँसी आ गयी। किसीने उनके हँसनेका कारण पूछा, तो बोले—'पिछले जन्ममें इस दूकानका मालिक यह बकरा ही था। ज़िन्दगी-भर सख्त मेहनत करके उसने इस दूकानकी तरक्की की थी। यह नौजवान उसीका बेटा है। मुझे हँसी इस बातपर आयी कि देखो जो एक दिन इस सारी सम्पत्तिका मालिक था उसे आज एक मुट्ठी-भर अनाजका भी अधिकार नही है! और जिस पुत्रको बडे प्यारसे पाला-पोसा वही लाठीसे मार रहा है!!'

अन्नका असर

महाभारतका युद्ध समाप्त हो गया था। शर-शय्यापर पडे हुए भीष्म-पितामह उपदेश दे रहे थे। बीचमें महारानी द्रौपदीको हँसी आ गयी।

'बेटी! तू हँसी क्यो?' पितामहने पूछा।

'मुझसे भूल हो गयी। पितामह मुझे क्षमा करें,' द्रौपदीने सकुचित होकर कहा।

'तेरी हँसी अकारण नही हो सकती। नि संकोच बता क्यो हँसी?'

'बडी अभद्रताकी बात है। फिर भी आप इजाज़त दे रहे हैं तो बताती हूँ। आप उपदेश दे रहे थे उस वक़्त मुझे यह विचार आया कि 'आज तो आप धर्मकी ऐसी उत्तम व्याख्या कर रहे है, लेकिन कौरवोकी सभामें जब दु:शासन मुझे नगी करने लगा था उस वक्त आपका यह धर्मज्ञान कहाँ चला गया था। मनमें इस बातके आते ही मुझे हँसी आ गयी। आप मुझे क्षमा करें।'

भीष्म बोले—'इसमें क्षमा करनेकी कोई बात नहीं है। मुझे धर्मज्ञान तो उस वक्त भी था, लेकिन दुर्योधनका अन्यायपूर्ण अन्न खानेसे मेरी बुद्धि मलिन हो गयी थी। पर अब अर्जुनके बाणोंसे मेरे शरीरसे उस दूषित अन्न-से बना सारा रक्त निकल गया है। इसलिए अब बुद्धिके शुद्ध होनेपर धर्म-का विवेचन कर रहा हूँ।'

चमार

राजा जनकके यहाँ विद्वानोंकी एक सभा हो रही थी। जब वहाँ अष्टावक्र आये तो उनके टेढ़े-मेढ़े शरीरकी बेढंगी आकृतिको देखकर सभाके लगभग सब लोग हँसने लगे। अष्टावक्रकी विचक्षण बुद्धिसे उनके हँसनेका कारण छिपा न रहा। बुरा न मानकर वे खुद भी जोरसे हँसने लगे।

'महाराज, आप हँस क्यों रहे हैं?'

'तुम लोग क्यों हँस रहे हो?'

'हम तो आपकी इस अटपटी आकृतिपर हँस रहे हैं।'

'और मैं इसलिए हँस रहा हूँ कि बुलाया गया था विद्वानोंकी सभामें और आ पहुँचा हूँ चमारोंकी सभामें।'

'आप विद्वानोंको चमार कहते हैं!'

'जो हड्डी-चमड़ेको ही देखे वह चमार ही तो होता है,' अष्टा-वक्र बोले।

कमी

श्रीशुकदेवजी अपने पिता वेदव्यासजीकी आज्ञासे आत्मज्ञान प्राप्त करनेके लिए राजा जनकके यहाँ आये। उनकी मनोहर मिथिला नगरीमें-से गुजरते हुए उसकी किसी चीज़को देखकर वे आकृष्ट नहीं हुए। महलके

दरवाज़ेपर पहुँचे तो द्वारपालोने उन्हें वही रोक दिया। तीन दिन तक वाहर खडे हुए धूप-शीत सहन करते रहे, किसीने वैठने तकको न कहा। चौथे दिन उन्हें छायामें विठा दिया गया। वे पूर्ववत् यहाँ भी आत्म-चिन्तन करते रहे।

वादमें उन्हें अत्यन्त सम्मानपूर्वक प्रमदावनमें पहुँचा दिया गया। वहाँ परम सुन्दरी युवतियोने उन्हे दिव्य भोजन कराया और उनके सामने हँसती-खेलती-नाचती-गाती रही। रातको सोनेके लिए आलीशान पलंग विछा दिया गया। वे ध्यान करते-करते कुछ देरके लिए सो गये, फिर उठकर ध्यानमग्न हो गये। युवतियाँ उनके ध्यानके समय भी तरह-तरहकी विनोद लीलाएँ करती रही मगर वे लवलेश विचलित नही हुए।

अगले दिन महाराज जनकने उनकी वडी आव-भगत की। वातचीत हुई।

अन्तमें राजा जनक वोले—'आप दु ख-सुख, मान-अपमान, राग-रग आदिसे पूर्ण विरक्त परमज्ञानी महात्मा हैं। वस इतनी कमी है कि आप अपनेमें कमी मानते हैं।'

इस वोधसे उन्हें पूर्ण आत्म-साक्षात्कार हो गया।

मध्यम मार्ग

सत्यकी खोजमें गौतम भरी जवानीमें राज्य-वैभव, रूपराशि यशोधरा और चाँदके-से टुकड़े राहुलको छोडकर घरसे निकल पडे। वे रोग, वुढापा और मौतपर विजय पाना चाहते थे। उन्हें दु खका कारण जानकर शाश्वत आनन्द पाना था। एक वृक्षके नीचे वैठकर तपस्या करने लगे।

एक रोज नजदीकसे ही कुछ गानेवालियाँ गाती हुई निकली जा रही थीं। उनके गानेका भाव था—'अपने सितारके तारोको ढीला मत छोड, और न इतना खीच कि वे टूट जायें।'

गौतमके कानोमें यह आवाज़ पडी कि उन्हें प्रकाश मिल गया। उन्होंने जान लिया कि ठीक तरह जीनेके लिए घोर तप और अति भोग-को छोडकर मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए।

समझौता

रोहिणी नदीके पानीके उपयोगपर शाक्यो और कोलियोमें भयकर झगडा हो गया। मारकाट और रक्तपातकी नौबत आ गयी।

विहार करते हुए महात्मा बुद्ध उधर आ निकले।

'किस बातका कलह है महाराजो ?'

'रोहिणीके पानीका झगडा है, भन्ते।'

'पानीका क्या मूल्य है, महाराजो ?'

'कुछ भी नही है, भन्ते।'

'क्षत्रियोके खूनका क्या मूल्य है, महाराजो ?'

शर्मसे लोगोकी आँखें नीची हो गयी। दोनो पक्षोने समझौता कर लिया।

सुख

विशाखाके केश और वस्त्र भीगे हुए थे। बडी रजीदा और दु.खी नज़र आती थी।

'तुम्हारी इस असाधारण स्थितिसे आश्चर्य होता है!' महात्मा बुद्धने उससे कहा।

'मेरे पौत्रका देहान्त हो गया है, भन्ते। मृतके प्रति यह शोकाचरण है', विशाखा बोली।

'विशाखे! श्रावस्तीमें इस समय जितने मनुष्य हैं, तुम उतने पुत्र-पौत्रकी इच्छा करती हो ?'

'हाँ भन्ते !'

'श्रावस्तीमें रोज कितने आदमी मरते होगे ?'

'कमसे कम एक तो हर रोज मरता ही है।'

'तो क्या किसी दिन तुम विना भीगे केश और वस्त्रके रह सकोगी ?'

'नही, भन्ते !'

'जिसके सौ प्रिय (सगे-सम्बन्धी) हैं, उसे सौ दु ख होते हैं। जिसका एक प्रिय है उसे केवल एक दु ख होता है। जिसका एक भी अपना नही है उसके लिए जगत्में कहीं भी दु ख नही है। वह सुखरूप हो जाता है। जगत्में सुखी होनेका एकमात्र उपाय यह है कि किसीको भी अपना प्रिय न माने, किसीसे ममता न रखे। अशोक और प्रसन्न होना चाहे तो कही भी सम्बन्ध स्वीकार न करे।'

गाली

एक ब्राह्मण गौतम बुद्धसे दीक्षा लेकर भिक्षु हो गया। उसका एक सम्बन्धी इससे वडा विगडा और आकर तथागतको गालियाँ देने लगा। जव थककर चुप हो गया तो तथागतने पूछा—'क्यो भाई ! तुम्हारे घर कभी अतिथि आते है ?'

'आते हैं।'

'तुम उनका सत्कार करते हो ?'

'अतिथिका सत्कार कौन मूर्ख नही करेगा ?'

'मान लो तुम्हारी दी हुई चीजें अतिथि स्वीकार न करे तो वे कहाँ जायेंगी ?'

'वे जायेंगी कहाँ, अतिथि नही लेगा तो मेरे ही पास रहेंगी।'

'तो भद्र ! तुम्हारी दी हुई गालियाँ मैं स्वीकार नही करता।'

ब्राह्मणका मस्तक लज्जासे झुक गया।

निज-बल

एक वार श्रमण महावीर वनमें ध्यानस्थ खडे थे। एक ग्वाला आकर बोला—'ज़रा देखते रहना मेरे बैल यहाँ चर रहे है, मैं अभी आया।'

तपस्वी महावीर अपनी समाधिमें लीन रहे। ग्वाला लौटकर आया तो देखता है कि वैल वहाँ नहीं है। वे चरते-चरते कही दूर निकल गये थे।

'मेरे वैल कहाँ हैं ?'

महावीर पूर्ववत् ध्यानावस्थित हैं।

ग्वाला गुस्सेमें भरकर उन्हें मारनेके लिए उद्यत हो गया। उधर इन्द्र स्वर्गसे आते है कि कहीं यह अज्ञानी श्रमण महावीरको सताने न लगे।

इन्द्रके फटकारनेपर ग्वाला चला गया। फिर इन्द्रने श्रमण महावीरसे कहा—'भन्ते ! आपके साधना-कालमे ऐसे सकटोसे आपकी रक्षा करनेके लिए आपकी पवित्र सेवामे आपके समीप रहना चाहता हूँ।'

महावीर बोले—'देवेन्द्र ! कोई तीर्थंकर किसी इन्द्रकी सहायतासे मोक्ष पाने नहीं निकलता। यह असम्भव है कि मुक्ति किसी दूसरेकी सहायतासे प्राप्त की जा सके। कैवल्य केवल निज पुरुषार्थसे मिलता है।'

सर्वव्यापक

गुरु नानक यात्रा करते हुए मक्का पहुँच गये थे। रातको वे कावेकी तरफ पैर करके सो गये। सुबह जव मौलवियोने उन्हें इस तरह सोते देखा तो गुस्सेसे लाल होकर डाँटा—'तू कौन है ? खुदाके घरकी ओर पैर पसारे पडा है ! तुझे शर्म नही आती ?'

गुरुने धीमेसे कहा—'तो जिधर खुदा न हो उधर कर दो मेरे पैर।'

सावधान

नारायण बचपनसे ही विरक्त-सा रहता। ज्ञान, ध्यान, तपमें उसका समय बीतता। माँ पुत्र-वधूका मुँह देखनेके लिए उतावली थी। वह योग भी आ गया।

बारह वर्षका किशोर नारायण बरातियों-सहित धूम-धाम और गाजे-बाजेके साथ विवाह-मण्डपमें पहुँचा।

मंगलाष्टक शुरू हुए। ब्राह्मणोंने कहा—'शुभ मंगल, सावधान।'

नारायणने मन-ही-मन इसका अर्थ लगाया—संसारकी दुःखदायिनी बेडी तुम्हारे पैरोंमें पडने जा रही है, इसलिए सावधान!

नारायण तत्काल उठकर भाग निकला। वही नारायण वर्षोंकी कठोर तपस्याके बलसे 'रामदास' और फिर 'समर्थ' बन गया।

अहंकार

सामनगढका किला बन रहा था। श्री शिवाजी महाराज उसका निरीक्षण करने आये। वहाँ बहुत-से मजदूरोंको काम करते देखकर उन्हें यह अहकार भाव हुआ कि 'मेरी बदौलत इतने लोगोंकी रोजी चलती है।' सद्गुरु समर्थ इस बातको जान गये। वे वहाँ आ पहुँचे।

'वाह, वाह, शिवबा! इस स्थानका भाग्योदय और इतने जीवोंका पालन तुम्हारे ही कारण हो रहा है।'

सद्गुरुके श्रीमुखसे यह सुनकर श्री शिवाजी महाराजको धन्यता प्रतीत हुई। बोले—'यह सब आपके ही आशीर्वादका फल है।'

बने हुए मार्गमें एक बडी शिला पडी देखकर सद्गुरुने पूछा—'यह शिला यहाँ बीचमें क्यों पडी है?'

उत्तर मिला—'रास्ता बन जानेपर इसे तुडवा डाला जायेगा।'

श्री समर्थ बोले—'नही, नहीं कामको हाथो-हाथ कर डालना चाहिए, वरना जो काम पीछे रह जाता है, वह हो नही पाता।'

फौरन् कारीगरोको बुलाया गया। शिला टूटी तो सबने देखा कि शिलाके अन्दर पानीसे भरा एक गड्ढा निकला जिसमें एक जीवित मेंढक बैठा हुआ था। उसे देखकर सद्गुरु बोले—'वाह, वाह शिवबा, धन्य हो तुम! इस शिलाके अन्दर भी तुमने पानी रखवाकर इस मेढकके जीनेका इन्तजाम कर रखा है!'

सुनकर शिवाजी महाराजके दिलमें एक बिजली-सी कौध गयी। अपने अहकारका पता लग गया। उन्होने गुरुजीके चरणोमे गिरकर अपराधकी क्षमा माँगी।

क्षमा

पैठण नगरमे एक पठान गोदावरी-स्नान करके आनेवालोको तग किया करता था।

श्री एकनाथ महाराजको भी वह बहुत कष्ट देता था और लोग तो कुछ बुरा-भला कहते भी थे, मगर एकनाथजी कुछ कहते ही नही थे कभी।

एक दिन जब एकनाथजी स्नान करके आ रहे थे तो पठानने उनके ऊपर कुल्ला कर दिया। वे शान्त भावसे फिर स्नान करने लौट पडे। जब स्नान करके उधरसे गुजरे तो पठानने उनपर फिर कुल्ला कर दिया। वे उसी तरह फिर नहाने चल दिये। मगर पठान अपनी दुष्टतासे बाज न आया—उसने उनपर इस तरह एक सौ आठ बार कुल्ला किया और हर बार एकनाथजीको स्नान करना पडा।

अन्तमें सन्तकी क्षमाकी विजय हुई। पठानको अपने कामपर शर्म आयी। वह एकनाथजीके पैरोंपर गिर पड़ा—'आप खुदाके सच्चे बन्दे हैं। मुझे माफ कर दें। आइन्दा मैं कभी किसीको तकलीफ नहीं दूँगा।'

सन्त बोले—'इसमें माफी माँगनेकी क्या बात है। आपकी कृपासे आज मुझे एक सौ आठ बार गोदावरीके स्नानका पुण्य प्राप्त हुआ।'

संकीर्ण दृष्टि

एक राजकुमारका धनुष खो गया। सैनिकोंने कहा—'हुजूर, हुक्म फरमाइए। हम लोग ढूँढकर लायें?' राजकुमारने कहा—'नहीं भाई, क्या जरूरत है! वह इसी देशके किसी शख्सके पास होगा। देशकी चीज आखिर देशके ही किसी आदमीके पास है न!'

इस बातको जब महात्मा कन्फ्यूशसने सुना तो कहा—'राजकुमारकी दृष्टि संकीर्ण है, नहीं तो वे कहते—चलो, क्या हुआ, एक आदमीकी चीज किसी आदमीके ही पास है न!'

—चीनी काव्य-संग्रह

गर्व-खर्व

जब परमेश्वरने देखा कि इन्द्रधनुषको अपने रंगका गर्व हो गया है तो उसने एक मोर-पंख उसकी ओर उड़ाया। उसे देखकर इन्द्रधनुषने जो सर नीचा किया सो आज तक नीचा है!

—मराठी मासिक 'वसन्त'

संगीन जुर्म

न्यूयार्कके एक मशहूर मेयर ला गार्डियाको—जो अपनी सहृदयता और सुप्रबन्धके लिए बहुत प्रसिद्ध है—पुलिस अदालतके मुकदमोंसे बड़ी दिलचस्पी थी; क्योंकि वहाँ उन्हें नगरकी वास्तविक स्थितिका पता मिलता था। इसीलिए वे अकसर पुलिसके मुकदमोंकी अध्यक्षता किया करते थे। एक दिन पुलिसने एक चोरपर मुकदमा चलाया कि उसने एक रोटी चुरायी है। मुलजिमने अपने बचावमें सिर्फ एक ही जुमला कहा—'मेरा परिवार भूखा था, इसलिए मैं चोरी करनेपर मजबूर था।' मेयरने फैसला दिया—'चूँकि मुलजिमने चोरी की है, इसलिए मैं उसपर दस डालर जुर्माना करता हूँ।' और फौरन् अपनी जेबसे दस डालर निकालकर मुलजिमको दे दिये—'यह रहा तुम्हारा जुर्माना।' फिर उन्होंने उत्तप्त भावसे हाज़िरीनसे कहा—'लेकिन साथ ही अदालतमें हाज़िर हर शख्सपर मैं आधा डालर जुर्माना करता हूँ, क्योंकि वह एक ऐसे समाजमें रहनेका संगीन जुर्म करता है जिसमें एक बेकस इनसानको रोटी चोरी करनी पड़ती है।'

—'हाफमैन'के संस्मरणोंसे

मतिमन्द

एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण किसी सेठके यहाँ गीतापाठके लिए जा रहा था। रास्तेमें एक नदी पड़ती थी, उसके किनारे एक घड़ियाल बैठा मिला। बोला—'महाराज, पहले मुझे गीता सुनाइए, फिर सेठजीको।' यह कहते हुए उसने भेंट स्वरूप मोतियोंका एक हार ब्राह्मण देवताके सामने रख दिया। फिर क्या था! ब्राह्मण गीता सुनाने लगा। यह क्रम रोज चलने लगा।

जब गीतापाठ सम्पूर्ण हुआ, तो घडियालने ब्राह्मणको मोतियोंका एक घडा दक्षिणामें दिया—'पण्डितजी, अगर आप मुझे त्रिवेणीमें छोड आयें तो ऐसे पांच घडे आपको और दूँगा।' ब्राह्मणने घडियालकी बात मान ली और उसे त्रिवेणी पहुँचा दिया। घडियालने वायदेके मुताबिक मोतियोंके पाँच घडे दिये। लेकिन जब ब्राह्मण खुशी-खुशी वापस चलने लगा तो उसने देखा कि घडियाल उसकी तरफ व्यंग्यसे मुसकरा रहा है। पूछनेपर घडियालने बताया—'आप अवन्तिकामें जाकर मनोहर धोबीके गधेसे मिलिए। वह आपको इसका मतलब बतलायेगा।'

अवन्तिका पहुँचकर ब्राह्मण गधेसे मिला। गधेने कहा—पूर्व जन्ममें मैं राजाका सेवक था। राजा एकबार त्रिवेणी-स्नानको गये। त्रिवेणीके दर्शनसे वे इतने आनन्दित हुए कि उन्होंने राजपाट छोडकर वहीं ईश्वर-भजनमें बाकी जिन्दगी बितानेका संकल्प कर लिया। मुझपर महाराजका बडा स्नेह था। इसलिए अनुग्रहके साथ बोले—'इच्छा हो तो यहीं हमारे साथ रहो, तुम्हारी भी उम्र सौके करीब पहुँच रही है, वर्ना ये हजार मुद्राएँ लेकर घर लौट जाओ।' मैं मूढ़ था। धन-वैभवके व्यामोहमें लौट आया। तुमने भी यही ग़लती की। बुढापेमें घडियाल-जैसे क्षुद्र जीवने भी आत्मशान्तिके लिए अपना इन्तज़ाम कर लिया। लेकिन तुम मनुष्य और फिर मनुष्योंमें श्रेष्ठ ब्राह्मण होकर भी धनकी तृष्णामें अभीतक दर-दर भटक रहे हो! तुम्हारी यह मतिमन्दता देखकर ही घडियाल हँसा था!'

—स्वामी प्रणवानन्द

स्वघात

एक बार एक राजाने राजशिल्पीको बुलाकर हुक्म दिया कि एक ऐसा भवन बनाओ जो खूबसूरती और सहूलियतके लिहाजसे राज्य-भरमें

बेनजोर हो।' भवन-निर्माणमें अन्दाजन् खर्च हो सकनेवाली धनराशि भी शिल्पीको दे दी गयी। इतनी दौलत अपने कब्जेमे देखकर शिल्पीकी नीयत बिगड गयी। उसने सोचा क्यो न घटिया और नकली सामग्रीसे ही भवन बना दूँ।

भवन तैयार हो गया। महाराज बहुत खुश हुए। भवन उद्घाटनका बडा उत्सव मनाया गया। समारोहमें महाराजने ऐलान किया—'आज मेरी एक बडी पुरानी अभिलाषा पूर्ण हुई है। राजशिल्पीकी योग्यता और राज्यभक्तिको मै पुरस्कृत करना चाहता हूँ। पुरस्कार तैयार है। मैं राज्यकी इस सबसे खूबसूरत इमारतको ही राज्यशिल्पीको इनाममें देता हूँ।'

हमारे ही छल क्या हमे जीवनमें इसी तरह नही छला करते ?

—राजगोपालाचारी

जैण्टिलमैन !

जो आदमी समाजसे जितना ले अगर उतना ही उसे लौटा दे तो वह एक मामूली भद्र आदमी है।

जो समाजसे जितना ले उससे कही ज्यादा उसे लौटा दे तो वह एक विशिष्ट भद्र आदमी है।

और जो अपनी सारी जिन्दगी समाजकी सेवामे अर्पित कर दे और बदलेमें समाजसे कुछ भी लेनेकी इच्छा न रखे वह एक गैर-मामूली भद्र पुरुष है।

मगर आजका भद्र पुरुष तो समाजको सिर्फ लूटने-खसोटनेकी ही कोशिश करता रहता है। देनेके बारेमें भूलकर भी नही सोचता !

—जार्ज बर्नार्ड शा

जिन्दगीकी प्याली

लाओत्ज़े, बुद्ध और कन्फ्यूशसकी आत्माएँ स्वर्गमें मिलीं। सवाल था—'जीवनका स्वाद कैसा है ?' उसी समय एक अप्सरा हाथमें प्याला लिये आ पहुँची—'भगवन्, यह आपके लिए जीवनका प्याला लायी हूँ। चखिए इसका स्वाद।'

सबसे पहले लाओत्ज़ेने एक घूँट लिया। सहर्ष बोले—'वाह, बड़ा मीठा है !' तब बुद्धने पीकर विषण्ण भावसे कहा—'ओह ! बहुत कड़वा है।' तब कन्फ्यूशसने लिया और खाली करके रख दिया—'दरहकीक़त यह न मीठा है न कड़वा और न बेस्वाद। जैसा पीनेवाला वैसा इसका स्वाद होता है। लेकिन एक बात तय है कि खुद पिये बगैर ज़िन्दगीकी प्यालीका जायका नहीं जाना जा सकता।'

—चीनी कथा

मानव तन

एक मछुआ था। सुबहसे शाम तक नदीमें जाल डालकर मछलियाँ पकड़नेकी कोशिश करता रहा। लेकिन एक भी मछली जालमें न फँसी। ज्यों-ज्यों सन्ध्या-काल नज़दीक आता गया उसकी निराशा गहरी होती गयी। भगवान्का नाम लेकर उसने एक बार और जाल डाला। पर मछलियाँ इस बार भी न आयीं। हाँ एक वज़नी पोटली उसके पाँवसे अटकी। मछुएने पोटली उठा ली। टटोला—'हाय, ये भी पत्थर हैं !' बड़ा झुँझलाया। मन मारे नावमें चढ़ा।

ठण्डी-ठण्डी हवामें ज्यों-ज्यों नाव बढ़ती गयी, उसके दिलमें नयी आशाओंका संचार होने लगा—'कल दूसरे किनारेपर जाल डालूँगा। सबसे छिपकर ''' उधर कोई नहीं जाता 'वहाँ बहुतेरी मछलियाँ पकड़ी

जा सकती हूँ ......।' मन यूँ चंचल था तो हाथ कैसे निश्चल रहते ? हाथसे वह उस पोटलीके 'पत्थर' एक-एक करके नदीमे डालता जा रहा था। पोटली खाली हो गयी, सिर्फ एक 'पत्थर' बचा, जो उसके हाथमे था। इत्तिफाकसे उसकी नजर उसपर गयी। देखा, फिर देखा गौरसे! जोरसे मुट्ठी बाँध ली—यह तो नीलम था! मछुएने अपनी छाती पीट ली!

संसारकी आशा-निराशामें पागलकी तरह उलझे हुए आदमीको भी एक दिन यह जीवन-रत्न खोकर इसी तरह पछताना पडता है!

—रमण महर्षि

मायावी संसार

[गुरु वशिष्ठका एक अद्भुत रूपक]

एक शून्य नामका शहर है। उसमें तीन राजकुमार रहते थे, जिनमें दो तो अभी पैदा ही नही हुए थे और एक गर्भमें भी नही आया था। वे आफतमें पड गये। दुःखी होकर सोचने लगे। तय किया कि कही जाकर धन कमाना चाहिए। चलते-चलते थककर तीन पेडोके नीचे आराम करने लगे। वे तीन वृक्ष ऐसे थे जिनमे दो तो उपजे ही नही थे और एकका बीज भी नही बोया गया था। उन्हीके अमृतके समान सुस्वादु फल खाये। फिर आगे बढे तो बहुत सुन्दर, निर्मल, शीतल जलवाली तीन नदियाँ उन्हें दिखाई पडीं। वे नदियाँ ऐसी थी कि दोमें तो पानी ही नही था, और एक सूख गयी थी। तीनोंने उन नदियोमें बडे आनन्दसे जलक्रीडा की और जल पिया। फिर चलते-चलते जब शाम हो गयी तो उन्हें एक भविष्य-नगर दिखाई दिया। वे उस नगरमें घुसे तो उसमे तीन मकान मिले,

जिनमे दो तो अभी बने ही नही थे और तीसरेमे एक भी दीवार नही थी। वहाँ रहकर उन्होने तीन ब्राह्मणोंको न्यौता दिया, जिनमें दोके तो शरीर ही नही थे और तीसरेके मुँह ही नही था। उन्होने तीन थालियोमें भोजन किया, जिनमें दोमें तो तली ही नही थी और तीसरी चूर्ण-रूप थी। उस भविष्य-नगरमें वे तीनो बालक आनन्दपूर्वक अपना जीवन विताते रहे।

सभ्यता

तीन कुत्ते साथ-साथ घूमने निकले। एकने कहा—'इस 'श्वान-युग' में हमें कितना आराम है! जल, थल, नभ किसीकी भी सैर हम बेरोक-टोक कर सकते है।'

दूसरा बोला—'हमारी खूबसूरती भी बढ गयी है। कभी पानीमें अपनी परछाईं देखो तो पता चले!'

तीसरेने कहा—'सबसे ज्यादा ताज्जुबकी बात तो यह है कि इस युगमें कितना स्थिर विचार साम्य है।'

कि, इतनेमे ही कुत्ता पकडनेवाला आता दिखाई पडा। फिलफौर तीसरा कुत्ता गलीकी तरफ़ भागता हुआ चिल्लाया—'भागो जल्दी! सभ्यता हमारे पीछे पडी है।'

—खलील जिब्रान

सबसे दु:खी प्राणी

'ससारमे सबसे दु:खी प्राणी कौन है?' बेचारी मछलियाँ! क्योकि उनके दु:खके आंसू पानीमें धुल जाते हैं, किसीको दिखते नही। इसलिए वे तमाम सहानुभूति और स्नेहसे वंचित रह जाती है। सहानुभूतिके अभावमे रज-सम दुःख भी गिरिवत् हो जाता है।'

—खलील जिब्रान

दयाभाव

एक बार हजरत अली नमाज पढ रहे थे। एकाएक एक दुष्टने आकर उनपर तलवारसे वार करना चाहा, कि मसजिदके लोगोने यह देखकर उसे पकडकर अलीके सामने पेश किया। उसी वक्त एक आदमी अलीके लिए शरबतका गिलास लेकर आया। उन्होने बंधे हुए अपराधीकी ओर करुण दृष्टिसे देखते हुए कहा—'भाई, यह शरबत इस गरीबको दे दो, दौड-धूपसे बेचारा बहुत थक गया होगा !'

साधना

शिष्य—'रोजाना जिन्दगीमें आत्म-साक्षात्कारकी साधना आप कैसे करते हैं ?'

गुरु—'मुझे जब भूख लगती है तब खाता हूं, और जब थकता हूं तब आराम करता हूं। बस यही मेरी साधना है।'

शिष्य—'यह तो सभी करते है।'

गुरु—'नही, सभी ऐसा नही करते—सौमे एक भी शायद ही करता हो।'

शिष्य—'कैसे ? साफ समझाइए।'

गुरु—'जब लोग खाने बैठते है, तो सिर्फ हाथ-मुँहसे खाते हैं। मनसे नहीं—मन कही और भटकता रहता है। सोते हैं तो शरीरसे सोते हैं, मनमे नहीं। शरीर और मनके बीचकी यह दरार ही तो साधनका विक्षेप है। मैं यह दरार नहीं पडने देता।'

सन्त ज्ञानेश्वर

ज्ञानेश्वरके संन्यासी पिताने गुरुकी आज्ञासे गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया। वे सन्यासीके पुत्र थे। वे अपने भाइयों निवृत्तिनाथ और सोपान-

देव और छोटी वहन मुक्तावाईके साथ आलन्दीसे चलकर पैठण आये। उन्हें शास्त्रज्ञ ब्राह्मणोंसे शुद्धिपत्र लेना था।

एक दुष्टने उन्हें छेडा—'इस भैंसेका नाम भी ज्ञानदेव है?'

'हाँ, है तो। भैंसे और हममें अन्तर क्या है? नाम और रूप तो कल्पित हैं। आत्मतत्त्व एक ही है। भेदकी कल्पना ही अज्ञान है।' ज्ञानदेव बोले।

तव उस दुष्टने भैंसेकी पीठपर चावुक मारने शुरू कर दिये।

चावुक तो पड रहे थे भैंसेपर, पर मारके निशान उभरकर आ रहे थे ज्ञानेश्वरकी पीठपर।

यह देख वह दुष्ट आदमी ज्ञानेश्वरके चरणोंमें गिरकर क्षमा माँगने लगा—'मैं अज्ञानी हूँ, मुझे क्षमा करें।'

'तुम भी ज्ञानदेव हो क्षमा कौन किसे करेगा? किसीने किसीका अपराध किया हो तो क्षमाकी वात आये। सबमें एक ही प्रभु व्यापक हैं।'

ज्ञानेश्वर महाराजकी एकात्म भावना अखण्ड थी।

सबमें भगवान्

महाराष्ट्रके कुछ सन्त त्रिवेणीसे काँवरोंमें गंगाजल लिये श्रीरामेश्वरकी यात्रा कर रहे थे।

रास्तेमें देखा कि एक गधा रेतीले मैदानमें पडा हुआ सख्त गरमीके मारे प्यासा तडप रहा था।

साधुओंको उसपर दया आयी। पर उपाय क्या था? आस-पास दूर तक कोई जलाशय न था जहाँसे पानी लाकर उसे पिलाते। गंगाजल तो रामेश्वरमें भगवान् शंकरके अभिषेकके लिए था।

एकाएक सन्त एकनाथजी अपने कलशका जल गधेको पिलाने लगे। किसीने कहा—'यह क्या ! रामेश्वरके अभिषेकके लिए लाया जल आप गधेको'·· ···।'

एकनाथ बोले—'कहाँ है गधा ? श्री रामेश्वर ही तो यहाँ मुझसे जल माँग रहे हैं। मैं उनका ही अभिषेक कर रहा हूँ।'

अमर जीवन

एक धनी युवकने ईसामसीहसे विनती की, 'हे देव ! मुझे ईश्वरीय जीवन प्राप्त करनेका उपाय बताइए। दुनियाकी चीज़ोंसे मुझे शान्ति नही मिलती।'

ईसा बोले—'वत्स ! तुमने मुझे 'देव' शब्दसे सम्बोधित किया ! देव तो केवल परमात्मा ही है। मैं तो उसके कृपाराज्यका एक मामूली सेवक हूँ—तुम अमर जीवन प्राप्त करना चाहते हो तो जाओ अपनी सब चीजें बेच दो और अपनी सारी सम्पत्ति गरीबोंको बाँट दो। यह तो मुमकिन है कि ऊँट सुईके नकुएमें-से निकल जाये, पर यह गैरमुमकिन है कि धनी आदमी ईश्वरके राज्यमें दाखिल हो जाये।'

फूट

एक शिकारीने चिडियोंको फँसानेके लिए अपना जाल बिछाया। उसके जालमें दो पक्षी फँसे, लेकिन उन्होंने फौरन् सलाह कर ली और जालको लेकर उडने लगे। शिकारी दीवानावार उनके पीछे दौडने लगा।

पास ही एक ऋषि बैठे हुए यह तमाशा देख रहे थे। उन्होंने शिकारी-को बुलाकर कहा—'तुम फिजूल क्यों दौड रहे हो ? पक्षी तो जाल लेकर आसमानमें उडे जा रहे हैं !'

शिकारी बोला—'महाराज ! अभी इन पक्षियोंमें एका है। वे मिल-

कर एक तरफ उड रहे हैं इसलिए जाल लिये जा रहे है। लेकिन कुछ देर बाद इनमें झगडा हो सकता है। मै उसी उम्मीदमें इनके पीछे दौड रहा हूँ।'

शिकारीका अन्दाजा ठीक निकला। 'किस जगह उतरा जाये' इस बातपर दोनोमें मतभेद हो गया। दोनो अपनी मरज़ीकी जगहकी तरफ उडने लगे। फिर उनसे जाल न सँभला। आखिर गिर पड़े।

(मानव-जाति भी इन दिनो 'दो तरफ' जा रही है। काल-व्याध घात लगाये बैठा है !)

दोस्त

एक शिकारी एक तालाबके किनारे पक्षियोको फँसानेके लिए जाल बिछाया करता था। एक बार हंसोकी पक्ति उस तरफ आयी। हंसराज जालमे फँस गया। उसके वफादार मन्त्रीको छोडकर बाक़ी सब हस उड गये।

सराज बोला—'तुम भी उड जाओ। फिजूल जान देनेसे क्या फायदा उठाओगे ?'

मन्त्रीने जवाब दिया—'मैं यहाँसे चला जाऊँ तो भी अमर तो हो नही जाऊँगा। मैं तो यहीं रहकर प्राण देकर भी तुम्हें बचानेकी कोशिश करूँगा।'

जब शिकारी आया तो उसने देखा कि एक हंस जालके बाहर भी डटा बैठा है। शिकारीके पूछनेपर स्वतन्त्र हसने बताया—'मैं अपने मालिकके बगैर नही जा सकता।'

शिकारी—'तू चला जा, मै तुझे नही पकडना चाहता।'

हस—'नहीं, तू मुझे खा ले या बेच डाल, पर मेरे राजाको छोड दे !'

इसपर शिकारीका दिल पिघल गया और उसने हंसराजको छोड दिया।

दयामयी

श्री रामकृष्ण परमहंसके गलेमे नासूर हो गया था। एक भक्तने मशवरा दिया—'अगर आप मनको एकाग्र करके कहे, 'रोग चला जा! रोग चला जा!' तो निश्चय ही रोग चला जायेगा।'

परमहस बोले—'जो मन सच्चिदानन्दमयी माँका स्मरण करनेके लिए मिला है। उसे मै हाड-माँसके पिंजडेमें लगाऊँ?'

फिर भी शिष्योने आग्रह किया—'आप माँसे प्रार्थना करें कि वह आपका रोग मिटा दे।'

श्रीरामकृष्ण बोले—'माँ सर्वज्ञ है, समर्थ है और दयामयी है। उन्हें जो मेरे कल्याणके लिए उचित लगता है, सो कर ही रही है। उनकी व्यवस्थामे हाथ डालनेका छिछोरापन मुझसे नही होगा।'

स्वावलम्बन

बंगालके एक छोटे स्टेशनपर गाडी खडी हुई। एक उजले-पोश युवकने 'कुली! कुली!' पुकारना शुरू किया, हालाँ कि सामान उसके पास कुछ ज्यादा नही था। कुली तो नही मिला, मगर एक अधेड आदमी मामूली देहातियोंके-से कपडे पहने उसके पास आ गया। युवकने उसे कुली समझ लिया। बोला—'तुम लोग बडे सुस्त होते हो। ले चलो इसे जल्दी।'

उस आदमीने सामान उठा लिया और युवकके पीछे-पीछे चल दिया। घर पहुँचकर वह सामान रखवाकर मजदूरी देने लगा। वह आदमी बोला—'धन्यवाद! इसकी ज़रूरत नही है।'

'क्यो?' युवकने ताज्जुबसे पूछा। उसी वक्त युवकके बडे भाई घरमें-से निकले और उन्होने उस आदमीको प्रणाम किया। जब युवकको मालूम हुआ कि जिनसे वह सामान उठवाकर लाया है वे बंगालके प्रतिष्ठित विद्वान् श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हैं, तो वह उनके पैरोपर गिर पडा।

विद्यासागर बोले—'मेरे देशवासी फिजूलका अभिमान छोड़कर समझें कि अपना काम अपने हाथों करना गौरवकी बात है और स्वावलम्बी बनें, यही मेरी मज़दूरी है।'

स्वामी दयानन्द

स्वामीजी शुरूमें सिर्फ एक लगोटी रखते थे। एक दिन किसीने आकर कहा—'महाराज! आपके पास एक ही लगोटी है। मैं एक और लगोटी लाया हूँ।' दयानन्द बोले—'अरे, मुझे तो यह अकेली लंगोटी बोझ हो रही है, तू एक और ले आया! जा, ले जा, भाई, इसे ले जा!

कायमगजमें किसीने कहा—'आपके पास पात्र नहीं है। कमण्डलु तो होना चाहिए।' हँसकर बोले 'हमारे हाथ भी तो पात्र है।'

फर्रुखाबादमें एक स्त्री अपने मरे हुए बालककी लाश लेकर पाससे गुजरी। लाश मैले-कुचैले कपड़ोंसे लपेटी हुई थी। स्वामीजीने कहा—

'माई, इसपर सफेद कपड़ा क्यों नहीं लपेटा?'

'मेरे पास सफेद कपड़ा या उसके लिए पैसे कहाँ, महाराज!' वह रोती हुई बोली।

स्वामीजीकी आँखोंमें आँसू उमड़ आये। बोले—'हा! राज-राजेश्वर भारतकी यह दुर्दशा कि आज उसके बच्चोंके लिए कफन तक नहीं!'

अनूपशहरमें किसीने स्वामीजीको विष दे दिया। उनके मुसलमान भक्त सैय्यद मुहम्मद तहसीलदारको पता चला तो जहर देनेवालेको पकड़ मँगाया। दयानन्दके दरबारमें अपराधी पेश किया गया। महाराजने कहा—'इसे छोड़ दो। मैं दुनियामें लोगोंको कैद कराने नहीं, छुड़ाने आया हूँ।'

जीवन-चरित

किसीने श्री गुरुदत्त विद्यार्थीसे कहा—'आप स्वामी दयानन्दजी सरस्वतीके घनिष्ठ सम्पर्कमें रहे हैं। आप उनका एक जीवन-चरित क्यों नहीं लिख डालते ?'

'उनका जीवन-चरित लिखनेकी मैं कोशिश कर रहा हूँ।'

'कबतक पूरा होगा ?'

'मैं उसे कागजपर नहीं अपने स्वभावमें अंकित कर रहा हूँ,' श्री गुरुदत्तजी बोले।

सहनशीलता

एक बार महात्मा गान्धी चम्पारनसे बेतिया रेलके तीसरे दर्जेमें जा रहे थे। रातको किसी स्टेशनसे एक किसान उसी डिब्बेमें चढ़ा। महात्माजीको धक्के देता हुआ बोला—'उठकर बैठो! तुम तो ऐसे पसरे पड़े हो जैसे गाड़ी तुम्हारे ही बापकी है।'

महात्माजी उठकर बैठ गये। पास ही किसान बैठ गया। कुछ देर बाद इत्मीनानसे गाने लगा—

'धनधन गाँधीजी महाराज दुखीका दुःख मिटाने वाले।'

महात्माजी उसका गीत सुनकर मुसकराते रहे।

बेतिया स्टेशनपर महात्माजीके स्वागतके लिए हजारों लोग आये हुए थे। गाड़ीके स्टेशनपर पहुँचते ही आसमान जयकारोंसे गूँजने लगा। अब किसानको अपनी भूलका पता लगा। वह गान्धीजीके पैरोंपर गिर पड़ा और फूट-फूटकर रोने लगा। महात्माजीने उसे उठाया और आश्वासन दिया।

रामचरित-मानस

कुछ मित्रोने गान्धीजीको लिखा कि, 'रामचरित-मानसमें स्त्री-जातिकी निन्दा है, वालि-वध, विभीषणके देश-द्रोह, जाति-द्रोहकी प्रशंसा है। काव्य-चातुर्य भी उसमें कुछ नही, फिर आप उसे सर्वोत्तम ग्रन्थ क्यो मानते हैं ?'

इसके जवावमें उन्होने लिखा—'आप सरीखे कुछ समीक्षक और मिल जायें तो रामायणको 'दोषोका पिटारा' ही वना दें। इसपर मुझे एक वात याद आती है। एक चित्रकारने अपने आलोचकोको जवाव देनेके लिए एक वडे सुन्दर चित्रको प्रदर्शनीमें रखा और उसके नीचे लिख दिया—'इस चित्रमें जिसको जहाँ कही भूल या दोष दिखाई दे, वहाँ अपनी कलमसे निशान लगा दे।' नतीजा यह हुआ कि चित्र निशानोंमे भर गया। लेकिन वह तसवीर दर-असल वडी ही कलापूर्ण थी। ठीक वैसी ही हालत आपने रामायणकी की है। यूँ तो वेद, कुरान और वाइविलके भी आलोचकोका अभाव नही है। पर जो गुणदर्शी हैं वे उनमें दोष नही देखते। रामचरित-मानसको सर्वोत्तम इसलिए नही कहता कि कोई उसमें एक भी दोष नही निकाल सकता, वल्कि इसलिए कि उससे करोडो लोगोको शान्ति मिलती है। 'मानस' का हर पृष्ठ भक्तिसे भरपूर है। वह अनुभवजन्य ज्ञानका भण्डार है।'

मै खून नही पी सकता !

महात्मा गान्धीजीने कहा—'मैंने गुरु नही वनाया, लेकिन मुझे कोई गुरु मिले है तो वे हैं रायचन्द भाई।'

ये रायचन्द भाई (श्रीमद् राजचन्द्र) वम्बईके एक जैन जौहरी थे। उन्होंने एक व्यापारीसे सौदा किया। यह तय हो गया कि अमुक तारीख

तक अमुक भावमें इतना जवाहरात वह व्यापारी देगा। जिसकी लिखा-पढी भी हो गयी।

संयोगकी बात, जवाहरातके मूल्य इतने बढ गये कि अगर वह व्यापारी वायदेके मुताबिक अदायगी करे तो उसका घर तक नीलाम हो जाये।

रायचन्द भाईको जवाहरातके बाज़ार-भावका पता चला तो वे उस व्यापारीको दूकानपर पहुँचे। व्यापारी बोला—'मैं आपके सौदेके लिए खुद चिन्तित हूँ। चाहे जो हो, घाटेके रुपये आपको ज़रूर दूँगा, आप चिन्ता न करें।'

रायचन्द भाई बोले—'मैं चिन्ता कैसे न करूँ? जब तुमको चिन्ता लग गयी है तो मुझे भी चिन्ता होनी ही चाहिए। हम दोनोंकी चिन्ताका कारण यह लिखा-पढी है। इसे खत्म कर दिया जाये तो दोनोंकी चिन्ता मिट जाये।'

व्यापारी बोला—'ऐसा नही। आप मुझे दो दिनका समय दें, मैं रुपये चुका दूँगा।'

रायचन्द भाईने लिखा-पढीके कागज़को टुकडे-टुकडे करते हुए कहा—'इस लिखा-पढीसे तुम बँध गये थे। बाज़ार-भाव बढनेसे मेरा चालीस-पचास हज़ार रुपया तुमपर लेना हो गया। लेकिन मैं तुम्हारी हालत जानता हूँ। ये रुपये मैं तुमसे लूँ तो तुम्हारी क्या दशा होगी? रायचन्द दूध पी सकता है, खून नही पी सकता।'

व्यापारी कृतज्ञतासे रायचन्द भाईके पैरोंपर गिर पडा।

क्षमा-दान

स्वामी उग्रानन्दजी बडे सहिष्णु और सबमें भगवान्को देखनेवाले थे। एक बार वे किसी गाँवके बाहर एक पेडके नीचे ब्रह्मानन्दकी मस्तीमें पडे

हुए थे। उसी रात उस गाँवके किसी किसानके बैलकी चोरी हो गयी। लोग चोरकी तलाशमें निकले। ढूँढते-ढूँढते वे स्वामीजीके पास पहुँच गये। उन्होंने स्वामीजीको चोरोंका साथी समझकर खूब मारा। उनके मुँहसे खून तक बहने लगा। मगर स्वामीजी बिलकुल शान्त रहे। लोगोंने स्वामीजीको रात-भर एक कोठरीमें बन्द रखा। सुबह होनेपर उन्हें थानेमें ले गये। थानेदार स्वामीजीको अच्छी तरह जानता था और उनका भक्त था। स्वामीजीको आता देख वह भागा हुआ आया और उनके चरणोंमें गिरकर प्रणाम किया। यह देखकर गाँववाले बहुत घबराये। थानेदारने सिपाहियोंको हुक्म दिया—'मारो इन दुष्टोंको, स्वामीजीको कैसे पकड़कर लाये।' किसान लोग थर-थर काँपने लगे। जब सिपाही उन्हें पकड़ने बढ़े तो स्वामीजीने उन्हे रोका और थानेदारसे कहा—'देख! जो तू मेरा प्रेमी है तो इन्हें बिलकुल कष्ट न दे और इन्हें मिठाई मँगाकर खिला।' थानेदारने बहुत-कुछ कहा, मगर स्वामीजी नहीं माने। उन्होंने थानेदारसे मिठाई मँगवाकर उन्हें खिलवायी और गाँवको सकुशल लौट जाने दिया।

घट-घटवासी

उपासनी महाराज एक ब्राह्मण थे। श्मशानके पास किसी टूटे-फूटे मन्दिरमें रहते थे। साईं बाबाके भक्त थे। अपने हाथसे भोजन बनाकर रोज मसजिदमें बाबाके लिए ले जाते थे। साईं बाबाके भोजन करनेके बाद ही अन्न-जल ग्रहण करते थे।

एक दिन साईं बाबाने उनसे पूछा—'तुम्हारे पास और लोग भी आते हैं उस मन्दिरमें?'

'वहाँ कोई नहीं आता, बाबा।'

'अच्छा कभी-कभी मैं आता रहूँगा।'

सख्त धूप पड रही थी। महाराज भोजनकी थाली लेकर बाबाके पास जा रहे थे। रास्तेमें उन्होंने भूखसे व्याकुल एक कुत्ता देखा। महाराजने सोचा गुरुको भोजन करानेके बाद ही इसे खिलाना उचित है। वे आगे बढ रहे थे कि एकाएक विचार बदला। लेकिन कुत्ता गायब हो गया था।

'तुम्हें इतनी कडी धूपमें आनेको क्या जरूरत थी, मैं तो रास्तेमें ही खडा था।' साईं बाबाके इस कथनसे महाराजको कुत्तेकी याद आ गयी, वे पश्चात्ताप करने लगे।

दूसरे दिन भोजनकी थाली लेकर महाराज ज्यों ही मन्दिरसे बाहर निकले कि दीवारके सहारे खडा हुआ एक शूद्र दिखा। वह गिडगिडाने लगा, लेकिन महाराजको गुरुके पास पहले पहुँचना था।

'तुमने आज फिर फिजूल तकलीफ की मैं तो मन्दिरके पास ही खडा था।' साईं बाबाने अपने प्रिय शिष्यकी आँखें खोल दी।

'कुत्ते और शूद्र—सबमें परमात्माका वास है। सबके प्रति सद्भाव रखकर यथोचित कर्तव्यका पालन परम श्रेयस्कर है। भगवान् घट-घटमें परिव्याप्त है। उन्हें पहचानो, जानो, मानो।' साईं बाबाने आशीर्वाद दिया।

नर्तकी

सौन्दर्यकी मूर्ति वासवदत्ता मथुराकी सर्वश्रेष्ठ नर्तकी थी। एक रोज उसने खिडकीसे बाहर देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर युवा भिक्षु पीत चीवर ओढे, भिक्षापात्र लिये रास्तेसे जा रहा है। नर्तकी उसपर मोहित हो गयी। जल्दीसे जीनेसे उतरकर दरवाजेपर आयी।

'भन्ते!' नर्तकीने भिक्षुको पुकारा।

'भद्र !' भिक्षु आकर मस्तक झुकाये उसके सामने खड़ा हो गया और अपना भिक्षापात्र आगे बढा दिया।

'आप ऊपर पधारें। यह मेरा भवन, मेरी सब सम्पत्ति और खुद मैं अब आपकी हूँ। मुझे आप स्वीकार करें।'

'मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।'

'कब ?'

'वक्त आनेपर !' कहते हुए भिक्षु आगे बढ गया।

शहरसे बाहर रास्तेपर एक स्त्री जमीनपर पडी थी। कपड़े मैले-कुचैले और फटे हुए, सारे शरीरमे घाव जिनसे बदबू उड़ रही थी। यह औरत थी वासवदत्ता ! अपने दुराचारसे इस भयंकर रोगका शिकार हो गयी थी। सम्पत्ति नष्ट हो गयी थी। अब वह निराश्रित मार्गपर पड़ी थी।

एकाएक एक भिक्षु उधरसे निकला और उसके पास आकर बोला— 'वासवदत्ता! मैं आ गया हूँ।'

'कौन ?' उस नारीने बडे कष्टसे उसकी तरफ देखनेको कोशिश की।

'भिक्षु उपगुप्त।' भिक्षुने वही बैठकर उसके घाव धोने शुरू कर दिये।

'तुम अब आये ? अब मेरे पास क्या धरा है। मेरा यौवन, सौन्दर्य, धन आदि सभी कुछ तो नष्ट हो गया'। नर्तकीकी आँखोसे आँसू बह निकले।

'मेरे आनेका समय तो अभी हुआ है।' भिक्षुने उसे धर्मका शान्तिदायी उपदेश देना शुरू किया। ये भिक्षु ही देवप्रिय सम्राट् अशोकके गुरु हुए।

बाहुबलि

सम्राट् भरतकी दिग्विजयमें सिर्फ इतनी कमी रह गयी थी कि उनके छोटे भाई पोदनपुर-नरेश बाहुबलिने उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की

थी। बाहुवलिके पास सन्देश भेजा गया तो उन्होने उत्तर दिया—'महासम्राट् पिता श्री ऋषभदेव महाराजने मुझे यह राज्य दिया था। मैं अपने बडे भाईका सम्मान करता हूँ, पर वे इस राज्यपर कुदृष्टि न डालें।'

भरतको तो चक्रवर्ती बनना था। वे अपनी दिग्विजयको अपूर्ण नही रहने देना चाहते थे। रणभेरी बजने लगी। चतुर मन्त्रियोने सम्मति दी—'यह तो भाई-भाईकी लडाई है सम्राट्! फिजूलके नर-सहारसे क्या फायदा? आप दोनो ही दृष्टि-युद्ध, जल-युद्ध और मल्ल-युद्ध करके हार-जीतका फैसला कर लें।'

दोनोने यह बात मान ली। दृष्टि-युद्ध और जल-युद्धमे बाहुबलि जीत गये। फिर दोनो भाई अखाडेमे उतरे। जब इसमें भी जीतनेके भरतको लक्षण न दिखे तो उन्होंने अपने पितासे प्राप्त अमोघ अस्त्र 'चक्ररत्न' का अपने छोटे भाईपर प्रयोग कर दिया। लेकिन 'चक्ररत्न' कुटुम्बियोपर नही चला करता, इसलिए वह बाहुबलिके पास पहुँचकर लौट आया।

बाहुबलिने अपनी प्रचण्ड भुजाओसे भरतको अपने सिरसे भी ऊपर उठा लिया और जमीनपर पटकने ही वाले थे कि एकाएक ज्ञानका उदय हुआ। वैराग्य हो गया। बाहुबलिने धीरेसे भरतको सामने खडा कर दिया और बोले—'भाई, क्षमा करना। इस राज्य-वैभवके मदसे अन्धा होकर मैं बडे भाईका अपमान कर बैठा।' यह कहते हुए बाहुबलि मल्लशालासे निकलकर सीधे वनको चल दिये और घोर तपमे लीन हो गये।

लीला

एक बार यूनानके बादशाह बीमार पडे। कोई इलाज माफ़िक नही आ रहा था। अन्तमे हकीमोने कहा कि अमुक लक्षणोवाले आदमीका कलेजा मिले तो कुछ उम्मीद हो सकती है।

राजसेवक चौतरफा दौड़ाये गये—आखिर एक लड़केको ले ही आये। उसके गरीब माँ-बापने काफी धन लेकर अपने लख्ते-जिगरको वधके लिए दे दिया था।

काजीने फतवा दे दिया कि 'बादशाहकी जान बचानेके लिए किसीकी जान लेना गुनाह नहीं है।'

लड़का बादशाहके सामने खड़ा था। हकीम अपनी तैयारी करके बैठ गये। जल्लादने तलवार उठायी। उस वक्त लड़का आसमानकी तरफ देखकर हँस पड़ा। बादशाहने इशारेसे जल्लादको रोककर लड़केसे पूछा—'लड़के! तू हँसा क्यों?'

लड़का बोला—'माँ-बाप जो कि सन्तानकी रक्षाके लिए प्राण देते हैं, उन्होंने मारे जानेके लिए बेच दिया, काजी जो न्यायमूर्ति कहलाता है, उसने एक बेकसूरकी हत्याका फतवा दे दिया। बादशाह जो प्रजाका रक्षक है अपनी निर्दोष प्रजाके एक बालककी हत्या करवा रहा है। नितान्त असहाय अवस्थाको पहुँचकर मैं दीन-दुनियाके मालिककी ओर देखकर हँसा कि 'प्रभो! संसारकी लीला तो देख ली, अब तेरी लीला देखनी है। जल्लादकी उठी तलवारका तू क्या करेगा!'

'मुझे माफ कर बेटा! यह तलवार अब फिर नहीं उठेगी।' बादशाहने क्षमा माँगी।

प्रेम

एथेन्समें दार्शनिक विद्वानोंकी एक 'महफिल' जमी। चर्चाका विषय रखा गया 'प्रेम'।

फ़ेडरसने कहा—'देवोंका देव है। वह सबसे बढ़कर है। सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। यह वह चीज़ है जो मामूली आदमीको वीर बना देती

है। अगर मुझे ऐसी सेना दी जाये जिसमें सिर्फ प्रेमी-ही-प्रेमी हों तो मैं निश्चय ही विश्व-विजय कर लूँ।'

पासनियस बोला—'बात बिल्कुल ठीक है, फिर भी आपको पार्थिव प्रेम और दिव्य ईश-प्रेमका फर्क तो मंजूर करना ही पड़ेगा। सामान्य प्रेम, रूपमोह, चमड़ीके सौन्दर्यपर लुब्ध मनकी यह दशा होती है कि यौवनके अन्त होते-न-होते उसके पंख जम जाते हैं और वह उड़ जाता है। लेकिन परमात्म-प्रेम सनातन होता है और उसकी गति निरन्तर विकासोन्मुख ही रहती है।'

सुकरातसे प्रार्थना किये जानेपर वे बोले—'प्रेम ईश्वरीय सौन्दर्यकी भूख है। प्रेमी प्रेमके द्वारा अमरत्वकी तरफ बढ़ता है। विद्या, पुण्य, यश, उत्साह, शौर्य, न्याय, श्रद्धा और विश्वास ये सब उस सौन्दर्यके ही रूप हैं। आत्मिक सौन्दर्य ही परम सत्य है। और सत्य वह मार्ग है जो परमेश्वर तक पहुँचा देता है।'

सुकरातके इस कथनका प्लेटो (अफलातून) पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उसी दिनसे उनका शिष्य हो गया। यही प्लेटो आगे चलकर यूनानका सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक कहलाया।

गर्व

यूनानमें एक जमींदार था, उसे अपनी सम्पत्ति और जागीरका बड़ा गर्व था। एक बार सुकरातके सामने वह अपने वैभवकी शान छाँटने लगा। कुछ देर तक तो सुकरात चुपचाप सुनते रहे। बादमें उन्होंने दुनियाका एक नकशा मँगाया। नकशा फैलाकर वह जमींदारसे बोले—'आप इसमें अपना यूनान देश देखते हैं?'

'यह रहा यूनान,' जमींदारने नकशेपर अँगुली रखकर बताया।

'और अपना ऐटिका प्रान्त ?' सुकरातने पूछा ।

कठिनाईसे कुछ देरमें जमीदार उस छोटे प्रान्तको ढूँढ सका ।

उससे फिर पूछा गया—'इसमें आपकी जागीर कहाँ है ?'

'भगवन् ! नकशेमें इतनी छोटी जागीर कैसे बतायी जा सकती है ?' जमीदारने जवाब दिया ।

अब सुकरातने कहा—'भाई ! इतने बडे नकशेमें जिसके लिए एक बिन्दु भी नहीं रखा जा सकता उस जरा-सी जमीनपर तुम गर्व करते हो ! और समूचे ब्रह्माण्डके सामने तुम्हारी जागीर और तुम कहाँ हो और कितने हो ? इतनी क्षुद्रतापर इतना गर्व !'

सभ्यता

फ्रान्सका बादशाह हैनरी एक बार अपने अंगरक्षको और ऊँचे अफसरोंके साथ कही जा रहा था । रास्तेमें एक भिखारीने अपनी टोपी उतारकर और सिर झुकाकर उसे नमस्कार किया । हैनरीने भी अपनी टोपी उतारकर, सिर झुकाकर भिखारीको नमस्कार किया । यह देखकर एक अफसरने कहा—'श्रीमान् ! एक भिखारीका आप इस तरह अभिवादन करें, यह क्या मुनासिब है ?'

हैनरीने सरल भावसे कहा—'फ्रान्सका बादशाह क्या एक भिखारीके बराबर भी सभ्य नही ?'

पवित्र अन्न

गुरु नानक घूमते हुए एक गाँवमें रुके । एक लुहार मक्काकी दो रोटियाँ लेकर आया । उस गाँवका जमीदार भी उत्तम पकवान बनवाकर लाया । उन्होंने जमींदारके पकवानोको छोड़कर लुहारकी रोटियाँ खा लीं ।

जमींदारको दु:ख हुआ। उसने अपने लाये हुए भोजनके स्वीकार न किये जानेका कारण पूछा। गुरु नानकदेवने एक हाथमें लुहारकी रोटियोंमें-से बचा हुआ एक टुकडा लिया और दबाया तो उससे दूधकी बूँदें टपकी। फिर जमींदारकी लायी हुई मिठाईका एक टुकडा दबाया तो उससे खूनकी बूँदें निकली।

गुरु नानकने बताया—'लुहारने मेहनत करके कमाया है। इसलिए वह शुद्ध अन्न है। उससे निर्मलता बढेगी। तुम्हारा अन्न दूसरोंको सताकर, उनका हक मारकर, लाया गया है। इसलिए यह अपवित्र रक्तान्न है। इस अन्नसे पापवृत्तियाँ प्रबल होगी।'

नामदेव

'अरे नामू! तेरी धोतीमें खून कैसे लग रहा है?'

'यह तो माँ, मैंने कुल्हाडीसे पैरको छीलकर देखा था।' चमडी छिली हुई देखकर माँ बोली—'नामू! तू बडा मूर्ख है। कोई इस तरह अपने पैरको छीलता होगा! घाव पक जाये या सड जाये तो पैर कटवाने तककी नौबत आ जाती है।'

'तब पेडको भी कुल्हाडीसे चोट लगती होगी। उस दिन तेरे कहनेसे मैं पलासके पेडकी छाल काटकर लाया था न? मैंने सोचा कि अपने पैरकी भी छाल उतारकर देखूँ। पलासके पेडको कैसा लगा होगा यह जाननेके लिए मैंने ऐसा किया माँ!'

नामदेवकी माँ रो पडी। बोली—'बेटा नामू! मालूम होता है तू एक दिन महान् साधु होगा। पेडों और दूसरे जीवोंमें भी जान है। चोट लगनेपर जैसे हमें दु:ख होता है वैसे ही उन्हें भी होता है।'

बडा होनेपर वही नामू प्रसिद्ध भक्त नामदेव हुए।

एकनाथ

पैठणमें कुछ दुष्टोंने घोषणा की कि 'जो एकनाथको क्रोध दिला देगा उसे दो सौ रुपये इनाम दिया जायेगा।' एक ब्राह्मण नौजवानने बीड़ा उठाया। वह एकनाथ महाराजके घर पहुँचा। उस समय एकनाथजी पूजा कर रहे थे। वह सीधा पूजाघरमें जाकर उनकी गोदमें जा बैठा। उसने सोचा कि इस तरह अशुद्ध हो जानेपर एकनाथजीको क्रोध जरूर आयेगा। लेकिन उन्होंने हँसकर कहा—'भैया! तुम्हे देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मिलते तो बहुत-से लोग हैं, पर तुम्हारा प्रेम तो विलक्षण है।' वह देखता ही रह गया। समझ गया कि इन्हें क्रोध दिलाना बहुत मुश्किल है, मगर दो सौ रुपयेके लोभके मारे उसने अगले दिन फिर कोशिश की। भोजनके वक्त जा पहुँचा। उसका आसन भी एकनाथजीके पास ही लगाया गया। भोजन परोसा गया। घी परोसनेके लिए एकनाथजीकी पत्नी गिरिजाबाई आयी। उन्होंने ज्यों ही झुककर ब्राह्मणकी दालमें घी डालना चाहा, त्यों ही वह लपककर उनकी पीठपर चढ़ गया।

एकनाथजीने कहा—'देखना, ब्राह्मण कहीं गिर न पड़े!' गिरिजाबाई-ने मुसकराते हुए कहा—'मुझे बेटा हरिको पीठपर लादे काम करनेका अभ्यास है। इस बच्चेको मैं कैसे गिरने दूँगी!' इससे तो ब्राह्मण युवककी सारी आशा टूट गयी। वह एकनाथजीके चरणोंमें गिरकर क्षमा माँगने लगा।

अन्त

एथेन्समें सोलन नामक एक महान् दार्शनिक रहता था। एक बार वह लीडियाके राजा कारूँके यहाँ पहुँचा। कारूँ बहुत धनवान् था। उसे अपनी सम्पत्तिका बड़ा गर्व था। उसने सोलनको अपनी अतुल धनराशि

दिखलाकर यह कहलाना चाहा कि उससे बढकर दुनियामें और कोई सुखी नहीं है। पर सोलनके दिलपर उसके वैभवका कोई असर नही पडा। उसने सिर्फ यही कहा कि, 'संसारमें सुखी वही कहा जा सकता है जिसका अन्त सुखमय हो।' कारूँको इससे नागवार खातिर हुआ और उसने सोलनको विना किसी सत्कारके अपने यहाँसे बिदा कर दिया।

कालान्तरमें कारूँने पारसके राजा साइरसपर चढाई कर दी। वहाँ वह हारकर गिरफ्तार हो गया। साइरसने उसे ज़िन्दा जला दिये जानेका हुक्म दे दिया। उस वक़्त उसे सोलन याद आया। वह 'सोलन! सोलन! सोलन!' चिल्लाने लगा। जब साइरसने इसका तात्पर्य पूछा तो उसने सोलनकी वार्ते सुना दी। इसका साइरसपर बडा प्रभाव पडा। उसने कारूँको छोड दिया।

महल

एक मस्त फकीर एक महलमें घुस गया और इत्मीनानसे आराम करने लगा।

वादशाह आया। उसने फकीरसे झिडककर पूछा—

'तुम यहाँ किसकी इजाज़तसे आये ?'

'धर्मशालामें आनेके लिए किसीकी इजाज़तकी ज़रूरत होती है क्या ?' फकीर बोला।

'यह धर्मशाला नही, मेरा महल है!'

'अच्छा, तुमसे पहले यहाँ कौन रहता था ?'

'मेरे पिता।'

'उनसे पहले ?'

'उनके पिता।'

'वह मकान जिसमे एकके वाद दूसरा आता है और चला जाता है वह धर्मशाला नही तो क्या है ?'

नम्रता

ऐटम युगके प्रवर्तक अलबर्ट आइन्स्टीन संसारके सबसे महान् वैज्ञानिक थे।

इज़राइलके प्रेसीडेण्ट डॉक्टर चैम वैज़मैनके मरनेपर आइन्स्टीनसे प्रेसीडेण्ट पद स्वीकार करनेको प्रार्थना की गयी। लेकिन उन्होंने वहाँकी सरकारके इस प्रस्तावको अस्वीकार करते हुए कहा—'इसके लिए आपका बडा आभारी हूँ, मगर मैं इस पदके योग्य नही हूँ, क्योकि जन-सेवा-कार्य या राजनीतिक क्षेत्रमें काम करनेके लिए मैं अपनेको ज़रा भी दक्ष या कुशल नही मानता।'

दुःख

हकीम लुक़मान महान् तत्त्वज्ञानी थे। बचपनमें वे गुलाम थे। उनके मालिकने एक बार उन्हें कडवी ककडी खानेको दी। मालिकने सोचा था कि लुक़मान इसे चखते ही फेंक देगा, मगर लुकमान तो बिना मुँह बनाये सारी ककडी खा गये।

'तू ऐसी कडवी ककडी कैसे खा सका?'

'मेरे उदार स्वामी! आप मुझे रोज़ स्वादिष्ट चीजें प्रेमसे खिलाते है। और भी तरह-तरहसे सुख भोगता हूँ। एक दिन आपके हाथसे कडवी ककडी मिली तो आनन्दसे क्यो न खाऊँ?' लुकमान बोले।

वह आदमी समझदार और दयालु था। उसने लुकमानका बडा आदर किया और बोला—'तुमने मुझे सबक दिया है कि जो परमात्मा हमें तरह-तरहके सुख देता है उसके हाथसे अगर कभी दुःख भी मिले तो उसे खुशीसे भोगना चाहिए। आजसे तुम्हें गुलामीसे आज़ाद करता हूँ।'

ग़नीमत

सन्त उसमान हैरी किसी गलीसे जा रहे थे। एक मकानकी छतसे किसीने बिना देखे थाली-भर राख फेंक दी। वह हैरीके सिरपर गिरी। झाड-झूडकर हाथ जोडकर प्रार्थना करते हुए बोले—'दयामय प्रभो! तुझे धन्यवाद!'

एक आदमीने यह देखकर पूछा—'इसमें ईश्वरको धन्यवाद देनेकी क्या बात है?'

बोले—'मैं तो आगमें जलाये जाने लायक हूँ। लेकिन उस रहीम और करीमने सिर्फ राखसे ही निपटा दिया!'

साधु

एक साधुसे हज़रत इब्राहीमने पूछा—'सच्चे साधुका लक्षण क्या है?'

साधुने जवाब दिया—'मिला तो खा लिया, न मिला तो सन्तोष कर लिया।'

हज़रत इब्राहीम हँसे—'यह तो हर कुत्ता करता है।'

साधुने कहा—'तब आप ही साधुका लक्षण बतायें।'

इब्राहीम बोले—'मिला तो बाँटकर खाया और न मिला तो खुश हुआ कि दयामय भगवान्‌ने कृपा करके उसे तपस्याका सुअवसर प्रदान किया।'

मुझे देखो!

हाजी मुहम्मद एक मुसलमान सन्त थे। वे साठ बार हज कर आये थे और पाँचो वक्तकी नमाज़ पढ़ा करते थे। एक दिन उन्होंने सपना देखा—

एक फरिश्ता स्वर्ग और नरकके बीच खडा है। वह लोगोंको कर्मानुसार स्वर्ग या नरक भेज रहा है। जब हाजी मुहम्मद सामने आये तो उसने पूछा—

'तुमने क्या शुभ कर्म किये हैं ?'

'मैंने साठ बार हज किया है।'

'सच है; मगर नाम पूछे जानेपर तुम गर्वसे 'मैं हाजी मुहम्मद हूँ' कहते रहे हो। इस गर्वके कारण तुम्हारा हज करनेका पुण्य नष्ट हो गया। और कोई अच्छा काम किया हो तो बताओ।'

'मैं साठ सालसे पाँचो वक्तको नमाज पढता रहा हूँ।'

'तुम्हारा वह पुण्य भी नष्ट हो गया। एक दिन बाहरके धर्मजिज्ञासु तुम्हारे पास आये थे। तुमने उन्हें दिखानेकी गरजसे उस दिन और दिनोंसे ज्यादा देर तक नमाज पढी थी। इस दिखावेके भावकी वजहसे तुम्हारी वह साठ बरसकी तपस्या नष्ट हो गयी।'

इसके बाद हाजीजीकी आँख खुल गयी। उन्होंने गरूर और नुमाइशसे हमेशाके लिए तौबा कर ली।

सेवक

हज़रत इब्राहीम बलखके बादशाह थे। उन्होंने एक गुलाम खरीदा। अपनी स्वाभाविक उदारतासे उन्होंने गुलामसे पूछा—

'तेरा नाम क्या है ?'

'जिस नामसे आप मुझे पुकारें।'

'तू क्या खायेगा ?'

'जो आप खिलायें।'

'तुझे कपड़े कैसे पसन्द हैं ?'

'जो आप पहना दें।'

'तू क्या काम करेगा ?'

'जो आप करायें ।'

'तू क्या चाहता है ?'

'हुजूर ! गुलामको अपनी चाह क्या !'

बादशाह तख्तसे उठकर बोले—'तुम मेरे उस्ताद हो । तुमने मुझे सिखा दिया कि प्रभुके सेवकको कैसा होना चाहिए ।'

भक्त

मुहम्मद सैयद एक बडे सन्त थे । वे नितान्त निष्परिग्रही थे । दिगम्बर रहते थे । शाहजहाँ इन्हे बहुत मानता था । दाराशिकोह तो इनका भक्त ही था । वे अकसर एक गीत गाया करते थे, जिसका भाव है—

'मैं सच्चे सन्त भक्त फुरकनका शिष्य हूँ । मैं यहूदी भी हूँ, हिन्दू भी, मुसलमान भी । मसजिद और मन्दिरमें लोग एक ही परमात्माकी उपासना करते हैं । जो कावेमें संगे-असवद है वही दैरमें बुत है ।'

औरंगजेब दाराका शत्रु था । वह सैयद साहबसे भी चिढता था । उसने उन्हें पकडवा मँगाया । धर्मान्ध मुल्लाओंने उन्हें धर्म-द्रोही घोषित कर सूलीकी सजा सुना दी । पर सैयद साहबको इससे बडी खुशी हुई । वे सूलीकी बात सुनकर आनन्दसे उछल पडे ! सूलीपर चढते हुए बोले— 'आह ! आजका दिन मेरे लिए बडे सौभाग्यका है । जो शरीर प्रियतमसे मिलनेमें बाधक था वह इस सूलीकी बदौलत छूट जायेगा । मेरे दोस्त ! आज तू सूलीके रूपमें आया । तू किसी भी रूपमें क्यों न आवे मैं तुझे पहचानता हूँ ।'

आचरण

एक आदमीने अपने लडकेको किसी महात्माके सामने पेश करते हुए कहा—'महाराज, यह गुड बहुत खाता है । किसी तरह इसकी यह आदत छुडाइए ।'

महात्माने कहा—'पन्द्रह दिन बाद इसे मेरे पास लाना, तब उपाय करूँगा।'

पन्द्रह दिन बाद लडका फिर लाया गया। महात्माजीने प्यारसे कहा—'बेटा' अब गुड़ कभी न खाना।' उसी दिनसे लडकेने गुड खाना छोड़ दिया।

एक रोज लडकेके पिताने महात्माजीसे कहा—'अब वह गुड कतई नही खाता। आपके उपदेशने जादूका-सा काम किया। लेकिन कृपया इस बातका रहस्य बताइए कि आपने वह उपदेश उसी दिन न देकर पन्द्रह दिन बाद क्यो दिया ?' महात्माने हँसकर कहा—'भाई, जो स्वयं आचरण न करे उसे उपदेश देनेका अधिकार नही है। उसके उपदेशका असर नहीं होता। उस वक्त मै खुद गुड़ खाता था। स्वय त्यागके दृढ हो जानेके बाद मैंने उसे त्यागका उपदेश दिया।'

असाधु

एक साधु किसी नदीके किनारे ध्यानावस्थित थे। पास ही एक धोबी कपड़े धो रहा था। दोपहरको खाना खाने घर जाते वक्त धोबीने साधुसे कहा—'अरे ओ गुमसुम! जरा मेरे गधेको देखते रहना। मैं अभी आया रोटी खाकर घण्टा-भरमें।'

धोबी लौटा तो एक गधा कम पाया। वह चरते-चरते किसी नीची जगह चला गया था और नजर नही आता था।

धोबीने साधुको ललकारा। बुरा-भला कहा। गाली-गलौज दी। भिड भी पडा। साधुमे जब बरदास्त न हुआ तो उसे भी ताव चढ आया। अब क्या था! दोनोंमें गुत्थमगुत्थ होने लगी। धोबी बलवान् था। उसने साधु-को पछाड दिया और सीनेपर चढ बैठा।

साधुने शिकायत-भरे लहजेमे पुकारा—'मैं इतने दिनोसे तपस्या करता रहा हूँ। पर आज विपत्तिके समय कोई देव तक मेरी रक्षाको नही आ रहा।'

एक आवाज आयी—'देव तो रक्षाको आया है, मगर उसे यह नही मालूम हो रहा कि साधु कौन है और धोबी कौन।'

सिद्धि

एक साधक था। साधन करनेसे उसे पानीपर चलनेकी सिद्धि प्राप्त हो गयी। वह गुरुके पास दौड़ा आया—

'महाराज! मुझे जलपर चलनेकी सिद्धि प्राप्त हो गयी!!'

महात्मा बोले—'इसमें क्या हुआ? यह काम तो मल्लाह एक पैसेसे कर देता है। क्या तुमने इतनी तपस्या इस तुच्छ शक्तिको पानेके लिए ही की थी? तप केवल भगवत्-प्राप्तिके लिए होना चाहिए।'

नींद

एक तपस्वी सारी रात भजन करते रहते थे। किसीने पूछा—'आप रातको कुछ देर सो भी क्यो नही लेते?'

महात्मा बोले—'जिसके नीचे नरकाग्नि जल रही हो और ऊपर जिसे दिव्य राज्य बुला रहा हो, उसे नींद कैसे आ सकती है?'

बलि

स्वर्ग-प्राप्तिकी लालसासे एक राजा यज्ञ कर रहा था। यज्ञमें बलि देनेके लिए एक बकरा लाया गया। वह अपनी होनीका आभास पाकर बेहद मिमिया रहा था। राजाने विनोदसे अपने मन्त्रीसे पूछा—'यह बकरा क्या कह रहा है?'

मन्त्री—'यह आपसे कुछ अर्ज कर रहा है।'

राजा—'क्या कह रहा है ?'

मन्त्री—'यह कहता है कि मुझे स्वर्ग नही चाहिए। मैंने स्वर्ग जानेको आपसे कब इच्छा प्रकट की थी ? मैं तो घास खाकर ही सन्तुष्ट हूँ, स्वर्गके दिव्य भोग मुझे नहीं चाहिए। अगर यज्ञमें बलि दिये जानेपर प्राणी स्वर्ग चला जाता है तो तुम अपने बाप, माँ, स्त्री, लड़के, लड़कियोंकी या खुद अपनी बलि देकर स्वर्ग क्यों नही चले जाते ?'

राजा बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसने बकरेको छोड़ दिया और यज्ञ बन्द करा दिया।

ईश-प्राप्ति

एक साधकने अपने सद्गुरुसे पूछा—'प्रभु-प्राप्तिका उपाय क्या है भगवन्! मुझे साधना करते-करते इतने दिन हो गये मगर सफलता नही मिली।'

गुरु उस वक्त चुप रह गये। लेकिन एक दिन नदीमें स्नान करते वक्त उन्होंने उसे पानीमें धर दबाया। कुछ देर बाद वह छटपटाकर बाहर निकला। गुरुने पूछा—'पानीसे निकलनेकी कैसी आतुरता थी तुम्हारे दिलमे ? जब भवजलसे बाहर निकलकर प्रभुसे मिलनेके लिए यूँ ही व्याकुल हो उठोगे तभी प्रभु-प्राप्ति हो जायेगी।'

चोर

वृन्दावनके सन्त खारिया बाबा एक दिन अपनी मस्तीमें पड़े हुए थे कि दो चोर आ गये। पूछने लगे—'तुम कौन हो ?'

'तुम कौन हो ?'

'हम चोर है ।'

'हम भी चोर है ।'

'तो तुम भी हमारे साथ चोरी करने चलो ।'

'चलो ।'

तीनो चले । एक घरमें घुस गये । चोरोने सामान बांधते हुए कहा—

'तुम भी बांधो ।'

'तुम ही बांधो', महात्मा बोले ।

इधर सामान बँधा, उधर महाराजकी नजर एक ढोलकपर पड गयी । फिर क्या था ! मौज आ गयी—उठाकर लगे जोरोसे बजाने ।

जाग पड गयी । 'चोर-चोर' का हल्ला मचने लगा । चोर तो भाग गये, मगर बाबाकी ढोलक दमादम बजती रही । लोगोने बिना देखे-भाले उन्हें पीटना शुरू कर दिया । बड़ी मार पडी । यहांतक कि लोहू-लुहान हो गये । मगर उन्होने किसीको पीटनेसे रोका नही और लगातार ढोलक पीटते रहे । आखिर बेहोश होकर जा पडे । तब कही लोगोने पहचाना—'अरे ये तो ग्वारिया बाबा हैं !'

'महाराज' आप यहाँ कैसे आ गये ?'

'आया कैसे ! श्यामसुन्दरने कहा—चलो चोरी करने । मैंने कहा चलो । उनके साथ चला आया । यहाँ ढोलक देखकर मेरी इच्छा बजाने-की हो गयी ।' यह कहकर वो हँस पडे ।

भजनका वजन !

किसी गांवमें एक बूढा और उसकी बुढिया रहती थी । दोनो बिल-कुल अपढ और बडे सीधे स्वभावके थे । उन्हे गिनती तो बीस तक आती थी, पर कच्ची-कच्ची । जब वे भजन करने बैठते तब एक-एक सेर गेहूँ या चना तौलकर अपने-अपने सामने रख लेते । 'राम' कहते जाते और

एक-एक दाना अलग रखते जाते। जब सब दानोंको अलग कर लेते तो समझते कि 'एक सेर भजन हुआ !' इसी तरह कभी दो सेर कभी तीन सेर भजन करते। कभी पाँच सेर भी !

बहुमत

एक पेडपर एक उल्लू बैठा था। अचानक एक हंस भी उडता हुआ आकर उस वृक्षपर बैठ गया।

हंस—'उफ ! कैसी गरमी है ! सूरज आज बडे प्रचण्ड रूपसे चमक रहा है।'

उल्लू—'सूरज ? सूरज क्या चीज़ है ? कहाँ है सूरज ? इस वक़्त गरमी है यह तो ठीक है, पर वह तो अँधेरा बढ जानेपर हो जाती है।'

हंसने समझानेकी कोशिश की—'सूरज आसमानमे है। उसकी रोशनी दुनियामें फैलती है, उसीसे गरमी भी फैलती है।'

उल्लू हँसा—'तुमने रोशनी नामकी एक और चीज़ बतलायी ! तुम्हें किसने बहका दिया है ? तुम यह क्या अवस्तुओंकी चर्चा कर रहे हो !'

हंसने समझानेकी बहुतेरी कोशिश की मगर बेकार। आखिर उल्लू बोला—'अच्छा चलो उस वटवृक्ष तक, वहाँ मेरे सैकडो अक्लमन्द जाति-भाई रहते है। उनसे फैसला करा लो।'

हंसने उल्लूकी बात मान ली। दोनो उल्लुओंके समुदायमें पहुँचे, उस उल्लूने कहा—'यह हंस कहता है कि आसमानमें इस वक़्त सूरज चमक रहा है। उसकी रोशनी दुनियामें फैलती है, उसीसे गरमी भी फैलती है।'

तमाम उल्लू हँस पडे—'क्या वाहियात बात है ! भाई, न सूरज कोई चीज़ है न रोशनी कोई वस्तु। इस बेवकूफ़ हंसके साथ तुम तो बेवकूफ़ न बनो !'

सब उल्लू उस हंसको मारने झपटे। गनीमत यह थी कि उस वक्त दिन था, इसलिए हंस सही सलामत बचकर उड गया।

हंमने मनमें सोचा—'बहुमत सत्यको असत्य तो कर नही सकता। लेकिन जहाँ उल्लुओका बहुमत हो वहाँ किसी समझदारके लिए सत्यको उनके गले उतार सकना बडा मुश्किल है।'

आजादी

एक रोज़ किसी दुबले-पतले भेडियेकी एक मोटे-ताज़े कुत्तेसे मुलाकात हो गयी।

भेडियेने कुत्तेसे उसकी तुन्दी और ताज़गीका रहस्य पूछा। कुत्ता बोला—'मेरा मालिक मुझे अच्छे-अच्छे पौष्टिक खाने खिलाता है। तुम भी मेरे साथ रहो तो तुम भी ऐसे हो जाओ।'

भेडिया—'तुम्हें अपने मालिकका क्या काम करना पडता है ?'

कुत्ता—'सिर्फ घरकी रखवाली करना।'

भेडियेने इस कार्यके लिए अपनेको समर्थ माना और कुत्तेके यहाँ चलनेको रज़ामन्द हो गया।

दोनो शहरकी तरफ आ रहे थे कि भेडियेकी नज़र कुत्तेकी गरदनपर पड़ी। उसने पूछा—'तुम्हारी गरदनपर यह निशान कैसा है ?'

कुत्ता—'यह तो पट्टेका निशान है। दिनमे मेरा मालिक मुझे बाँध देता है ताकि लोगोको तंग न करूँ। रातको घरकी रखवालीके लिए छोड देता है। तुम रहोगे तो तुम्हें भी ऐसा पट्टा पहनना पडेगा।'

भेडिया उलटे पैरो फिरने लगा—'मुझे जगलमें आज़ाद रहकर रूखा-सूखा खाना मंज़ूर है; पर तुम्हारे मालिकका बंधुआ होकर मोटा-ताज़ा बनना मंज़ूर नहीं।'

'मिले खुश्क रोटी जो आजाद रहकर !
गुलामी के हलवे से हरचन्द बढ़कर !!'

भावना

एक स्त्री किसी साधुसे प्रार्थना करती हुई बोली—'महाराज, आज कृपा करके हमारे घर पधारकर हमे कृतार्थ कीजिए।'

साधु उसके यहाँ गया। स्त्रीने उसके लिए एक कटोरीमें दूध डाला, मगर जब दूध डालते वक़्त हँडियाकी सारी मलाई कटोरीमें गिरी तो स्त्रीके मुँहसे बेसाख्ता 'अरे-अरे!' निकल पडा। फिर भी उसने उसमें शक्कर मिलाकर दूध साधुके आगे सरका दिया।

साधु ज्ञान-उपदेशकी बाते करता रहा, मगर उसने दूध न पिया। स्त्री समझती रही कि शायद दूध अभी बहुत गरम है इसलिए नही पी रहे। जब चर्चा खत्म हुई तो साधु यूँ ही चलने लगा।

'महाराज, दूध तो पीजिए!'

'नही। तुमने इसमें मलाई और शक्करके अलावा एक और चीज़ भी मिला दी है, इसलिए मैं इस दूधको नहीं पी सकता।'

'और क्या मिला दिया है, महाराज?'

'अरे-अरे!' जिस दूधमें 'अरे, अरे!' मिला हुआ है, मैं उसे नही पी सकता।'

संगति

एक कुत्ते और एक बिल्लीमे बडी दोस्ती थी। दोनों प्रेमसे साथ रहते। एक रोज़ वे एक साधुसे मिलने आये, और विनोदमें एक दूसरेकी शिकायत करने लगे।

कुत्ता बोला—'महाराज, यह बिल्ली बड़ी बदमाश और चालाक है। बडी ही बुरी है। यह मरकर अगले जन्ममें क्या बनेगी?'

बिल्ली बीचमें ही बोल उठी—'और महाराज, यह कुत्ता महा खराब है, हमेशा भौंकता या गुर्राता रहता है। यह मरकर क्या बनेगा?'

साधु कहने लगे—'अच्छा होता कि ये सवाल मुझसे न पूछे जाते। खैर जब पूछते ही हो तो सुनो—यह बिल्ली निरन्तर तुम्हारा संग करती है इससे तुममें इसकी आदतें और स्वभाव लगातार आता रहता है। इसलिए तुम अगले जन्ममें बिल्ली बनोगे। और बिल्ली बाई, चूँकि तुम सदा कुत्तेके साथ रहती हो और यूँ उसके गुण-दोष ग्रहण करती रहती हो, इसलिए तुम अगले जन्ममें कुत्ता बनोगी।'

वीर

एक बार दो राजपूत नौकरीके लिए बादशाह अकबरके दरबारमें गये। अकबरने उनकी खूबियाँ पूछी। उन्होंने कहा—'हम वीर हैं।' बादशाहने पूछा कि तुम्हारी वीरताका सबूत क्या है? यह सुनते ही दोनोंने म्यानोंसे अपनी-अपनी बिजली-सी तलवारें खींच ली और उन्हें एक-दूसरेके सीनेके पार कर दिया! और यूँ बादशाहको अपनी वीरताका सबूत दे दिया।

शान्ति और अशान्ति

एक कमरेके अन्दर हर तरफ बहुत-से छोटे-छोटे दर्पण लगे हुए थे। उसमें एक कुत्ता घुस आया। हर दर्पणमें कुत्ता देख-देखकर भौंकने लगा। और भौंक-भौंककर क्लेश और दुःखसे मर गया।

उसी कमरेमें कभी एक सुन्दर राजकुमार आया। वह हर दर्पणमें अपनी मनोहर छवि देख-देखकर आनन्द मनाता रहा।

दुनियामें बुरा आदमी हर तरफ बुराई देखकर दुःखी होता है, अच्छा आदमी हर चीज़में अच्छाई देखकर सुखी होता है, और अगर वह प्रभुमय है तो हर वस्तुको प्रभुमय देखता है।

कल्पना

एक आदमी बहुत भूखा था, मगर उसे कुछ खानेको नही मिल रहा था। आखिर उसे एक तदबीर सूझी। वह एक जगह आँखें बन्द करके बैठ गया और कल्पना करने लगा कि उसके सामने गरमागरम चटपटी मसालेदार कढी है और वह उसे दबादब खाये जा रहा है और उसका मुँह जलता जा रहा है। इस कल्पनाकी कढीसे मुँह जलनेके कारण वह 'सी-सी' भी करता जा रहा था।

इतनेमें एक आदमी उधरसे गुज़रा। उसने पूछा—'भाई, यह 'सी-सी' क्यो कर रहे हो ?'

'कल्पनाकी गरम-गरम कढी खा रहा हूँ।' आगन्तुक बोला—'अगर कल्पनाका ही आहार लेना है तो कढी सरीखी मामूली चीज़ क्यों खाते हो, बढिया-बढिया मिठाइयाँ क्यो नही खाते ?'

उद्धार

एक सन्त हमेशा लोगोका भला करनेमें लगे रहते थे, तो भी कुछ दुष्टात्मा उन्हें अकारण कष्ट दिया करते थे।

एक रोज़ एक दुर्जन उनके पास आकर यद्वा-तद्वा बकने लगा। सन्तने उसे प्रेमपूर्वक समझानेका प्रयत्न किया; मगर वह तो गालियाँ देने लगा।

कुछ देर बाद सन्त अपने घरकी ओर चले तो वह आदमी भी गाली देता हुआ उनके पीछे-पीछे चलने लगा। जब घर आ गया तो सन्त बोले—'भाई, अब तू मेरे घर ही रह, ताकि गालियाँ देनेके लिए तुझे चलकर न आना पडे।'

वह आदमी सचमुच सन्तके घर रहनेके लिए तैयार हो गया। वहाँ रहकर सन्तका उच्च जीवन देखकर वह बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसके बाद तो वह वहाँ रहकर सन्तकी सेवा भी करने लगा।

एक दिन सन्त बोले—'भाई, अब तू अपने घर जा।'

'नहीं, मुझे यही रहने दीजिए', आदमीने जवाब दिया।

सन्त कहने लगे—'भले रह, पर एक शर्तपर कि जब मैं कुछ बुरा काम करूँ तू मुझे गाली दिया करना।'

सुनकर आदमीकी आँखोमें आँसू आ गये।

शम्स तबरेज़

हिन्दुस्तानमें शम्स तबरेज़ नामक एक महान् साधु था। वह ईश्वरके दिव्य स्वरूपके अलावा किसी और हस्तीका कायल नही था। वह प्रभुमय था और प्रभुरूपसे विचरता था।

एक रोज़ किसीने एक मरा हुआ लडका उसके सामने लाकर रख दिया और उसे ज़िन्दा कर देनेकी प्रार्थना की।

शम्स तबरेज़ बोले—'क़ुम बिस्मिल्लाह।' (उठ खुदाके नामसे)। पर लडका ज़िन्दा न हुआ। उन्होने फिर दुहराया—'क़ुम बिस्मिल्लाह।' लेकिन लडकेमें जान न लौटी। उन्होने फिर कहा—'उठ खुदाके नामसे।' मगर वह नही उठा। तब शम्स तबरेज़ बोले—'कुम बिइज़्नी' (उठ मेरे हुक्मसे)।

लडका जीकर उठ खडा हुआ।

चाँदी

एक दिन एक कंजूस दौलतमन्द किसी ज्ञानीके पास आया। ज्ञानी उसे एक शीशेकी खिडकीके पास ले गया।

ज्ञानी—'इसमें-से देखकर बताओ क्या नज़र आता है।'

कंजूस—'लोग।'

ज्ञानी तब उसे एक दर्पणके सामने ले गया।

'अब क्या दिखाई देता है ?'

'मैं अपने-आपको देख रहा हूँ !'

'देखो', ज्ञानी बोला, 'खिड़कीमें भी काच है और दर्पणमें भी काच है। लेकिन दर्पणके काचमें ज़रा चाँदी लगी हुई है और ज्योंही चाँदी आयी कि तुम औरोंको देखना बन्द कर देते हो और सिर्फ खुदको देखने लगते हो।'

महँगे भोग

एक जंगली गधेने एक पालतू गधेको आरामसे बढ़िया-बढ़िया खाने खाते देखा। वह उसके सौभाग्यपर उसे मुबारकबादियाँ देने लगा। लेकिन कुछ देर बाद उसने देखा कि उसकी पीठपर भारी बोझा लदा हुआ है और पीछेसे एक आदमी उसे एक डण्डेसे मारता हुआ हाँक रहा है। वह बोला, 'अब मैं तुम्हें बधाइयाँ नहीं दे सकता, क्योंकि मैं देखता हूँ कि डटकर मालमलीदा उड़ानेकी तुम्हें भारी क़ीमत चुकानी पड़ती है।'

वाग्भट

एक शिकारी शेरके आने-जानेके रास्तेकी जानकारी प्राप्त कर रहा था। उसने जंगलके एक निवासीसे पूछा—'शेरकी माँद कहाँ है ?'

'माँद क्या, मैं तुम्हें शेर ही दिखाये देता हूँ—देखो वह खड़ा है तुम्हारे पीछे।'

सुनते ही शिकारी डरके मारे पीला पड़ गया और उसकी घिग्घी बँध गयी।

कायर प्रलाप करते हैं, शूरवीर करके दिखाते हैं।

तोहफ़ा

यूनानका राजा सिकन्दर महान् जब भारत-विजयकी इच्छासे चला तो उसने अपने गुरु अरस्तूसे पूछा—

'आपके लिए भारतसे क्या लाऊँ ?'

अरस्तू बोले—

'मेरे लिए वहाँसे ऐसा गुरु लाना जो मुझे ब्रह्मज्ञान दे सके।'

शान्ति

एक सख्त गरम दिन एक शेर और एक रीछ किसी छोटे तालाबपर पानी पीने आये। पहले पानी कौन पिये इसपर दोनो जानकी बाजी लगाकर लडने लगे। साँस लेनेके लिए क्षण-भर रुके तो देखा कि कुछ गिद्ध उनमें-से किसीके मरनेपर खानेके इन्तज़ारमें बैठे हैं। इस नज़ारेको देखकर उन्होंने लडना बन्द कर दिया। बोले—'गिद्धो और कौओंसे खाये जानेसे यह बहतर है कि हम दोस्त बन जायें।'

मजनूँ

किसीने मजनूँको इत्तिला दी कि 'अल्लाह मियाँ आपसे मिलने आये हैं।'

मजनूँ बोला—'उनसे कह दो कि लैला बनकर आना चाहें तो मिल सकते हैं, वर्ना मुझे फ़ुर्सत नही है।'

मौत

एक बूढा कमज़ोर लकडहारा लकडियोका एक भारी गट्ठा सिरपर लिये जा रहा था। कष्टसे दुःखी होकर उसने वह गट्ठा सिरसे फेंक दिया

और बिलखकर कहने लगा—'इससे तो मौत आ जाती तो अच्छा था !'

उसका यह चाहना था कि मौत आकर खड़ी हो गयी ! 'मैं हाज़िर हूँ। बता तूने मुझे क्यों याद किया है ?'

मौतको देखकर बूढा भयसे थर-थर कांपने लगा। बोला—'मैंने तुझे सिर्फ इसलिए बुलाया है कि यह बोझा उठाकर मेरे सिरपर रख दे।'

अहंकार

भरत चक्रवर्ती छह खण्ड जीतकर जब वृषभाचल पर्वतपर अपना नाम लिखने गये, तब उन्हें अभिमान हुआ कि मैं ही ऐसा चक्रवर्ती हुआ हूँ जिसका इस पर्वतपर नाम रहेगा। लेकिन पहाड़पर पहुँचनेपर उन्होंने देखा कि वहाँ तो उनसे पहले बेशुमार चक्रवर्ती आ-आकर अपना नाम लिख गये हैं। नया नाम लिखनेको जगह तक न थी। यह देखकर उनका गर्व खर्व हो गया। आखिर एक नाम मिटाकर अपना नाम लिखा।

दीक्षा

एक बालक एक धर्मगुरुके पास दीक्षा लेने गया। गुरुने इसके लिए उसके पिताकी अनुमति चाही। बालकने मांसे आकर कहा—'मां अपने स्वेच्छाचारी जीवनको छोड चुकी थी और अपने पुत्रका भी कल्याण चाहती थी। बोली—बेटा, उनसे कहना कि मेरे पिताका नाम तो मेरी मांको भी नही मालूम।'

बालकने मांका सन्देश गुरुको सुना दिया। गुरुने उसकी मांकी सत्य-वादितासे प्रभावित होकर सहर्ष दीक्षा दे दी।

एक वेश्या-पुत्रको दीक्षा देनेके कारण गुरुकी आलोचनाएँ होने लगीं।

गुरुने समझाया—'घृणा पापसे करना चाहिए, पापीसे नहीं। धर्म पतित-पावन है। वह पापीसे पापीका उद्धार कर सकता है। वेश्या भी अपने पापोका प्रायश्चित्त कर तपोबलसे पवित्र बन सकती है। फिर यह तो निर्दोष बालक है। अगर पाप किया भी है तो इसकी माँने किया है, उसका दण्ड इसे क्यों मिले?'

सेवा

हजरत मुहम्मद मसजिदमें नमाज पढ़ने जाते तो रास्तेमें एक बुढिया उनपर कूड़ा डालकर रोज तंग किया करती। हजरत यह उपसर्ग शान्त-भावसे सहकर ईश्वरसे प्रार्थना करते कि उसे सद्‌बुद्धि दे।

एक दिन मुहम्मद साहबने देखा कि बुढ़ियाने कूडा नहीं डाला। वे उसके यहाँ गये। मालूम हुआ कि वह बीमार है। वे अपना सब काम छोड़कर उसकी तीमारदारी करने लगे। बुढियाने जब उन्हें यूँ सेवा करते देखा तो वह शर्मसे पानी-पानी हो गयी और उनके धर्ममें दीक्षित हो गयी।

पाठ

कौरव और पाण्डव जब बचपनमें पढा करते थे तो एक दिन उन्हें पढाया गया—'सच बोलो। क्रोध न करो।'

अगले दिन सिवाय युधिष्ठिरके सबने यह पाठ फरफर सुना दिया।

गुरुजी बोले—'युधिष्ठिर, तू बडा मन्दबुद्धि है। तू इतना छोटा पाठ भी याद करके न ला सका!'

युधिष्ठिर बोले—'गुरुजी, मैं अपनी मन्दबुद्धिपर लज्जित हूँ। पर एक दिनमें तो क्या जिन्दगीके आखिर तक भी अगर इस सबकपर चल सका तो अपनेको भाग्यवान् समझूँगा।'

नासिरुद्दीन

सुलतान नासिरुद्दीन बडा धर्मनिष्ठ और स्वावलम्बी था। वह राजकोषसे कुछ भी न लेकर हाथसे किताबोंकी नकलें तैयार करके गुज़र करता था। रसोई भी बेगमको खुद बनानी पडती थी। एक रोज़ उसने बादशाहसे प्रार्थना की—'खाना पकानेमें मेरी उँगलियाँ झुलसती हैं, एक नौकरानी तो रख दीजिए।' बादशाह बोले—खज़ानेपर मेरा कोई अधिकार नहीं, वह तो प्रजाकी सम्पत्ति है। और मेरी हाथकी सीमित कमाईमें नौकरानी कैसे रखी जा सकती है?'

हरीच्छा

अत्याचारी रोमन सम्राट् नीरोका ज़माना था। तब एग्रीपीनस नामका एक सत्यवादी, निर्भीक वीर रहता था। वह बडा ही सहनशील और आनन्दी स्वभावका था।

कई दिनके बाद उसे खाना नसीब हुआ। अपने मित्रके साथ बैठकर खाना शुरू ही करनेवाला था कि दरवाज़ा खोलकर नीरोके सिपाही घुस आये।

सिपाहियोंकी टुकडीका सरदार बोला—'एग्रीपीनस! सम्राट् नीरोने तुम्हे सज़ा दी है।'

'काहेकी? मौतकी?'

'नहीं, देशनिकालेकी।'

'शुक्र है खुदाका। पर ज़रा ठहर सकोगे? मैं खाना खा लूँ।'

'मुझे अफसोस है! नीरोका हुक्म है कि तुम्हें फौरन अफरीका भेज दिया जाये।'

'तो चलो, अफरीका चलकर जीमेंगे। यही ईश्वरकी मर्ज़ी होगी।' एग्रीपीनस हँसते हुए बोला।

कच्चा-पक्का

सन्त-मण्डलीके साथ ज्ञानेश्वर महाराज भक्त गोरा कुम्हारके घर आये। नामदेव भी साथ थे। ज्ञानेश्वरने गोरासे कहा—'तुम कुशल कुम्भकार हो। शरीर भी तो मिट्टीका बरतन ही है। बताओ तो हममें-से कौन-सा बरतन कच्चा है?'

गोराने पिटनी लेकर नम्बरवार सब सन्तोको ठोकना शुरू कर दिया। सब सन्त मार खाकर भी शान्त रहे। जब नामदेवकी बारी आयी तो वे बिगड़ उठे। गोरा बोले—'यह बरतन कच्चा है।'

इस अपमानसे नामदेव बड़े दुखी हुए। उन्होने प्रार्थनामें प्रभुसे इसकी शिकायत की।

जवाब आया—'अभी तुझमें भेद-भाव है, इसलिए अभी तू कच्चा ही है। शिवालयमें सन्त विठोबा खेचरसे ज्ञान प्राप्त कर।'

नामदेव विठोबाके पास गये। विठोबा अपने पैर शिवकी पिण्डीपर धरे सो रहे थे। यह देखते ही नामदेवको बड़ी अश्रद्धा हुई। कह बैठे—'आप बड़े सन्त कहलाते हैं और शंकरकी पिण्डीपर पैर रखते हैं!'

विठोबा—'तो मेरे पैर उठाकर उस जगह रख दो जहाँ शिव-पिण्डी न हो।'

नामदेवने उनके पैर हटाकर अन्यत्र रखे। मगर वहाँ भी शिव-पिण्डी उनके पैरोंके नीचे दीख पडी। वह उनके पैर उठा-उठाकर अलग रखते जाते मगर शिव-पिण्डी उनके पैरोके नीचे ही रहती। यह देखकर नामदेव असमंजसमें पड़ गये। विठोबा खेचरके चरण पकड़कर इसका रहस्य पूछा। विठोबाने उन्हें अद्वैतका बोध कराया। नामदेवकी द्वैत-बुद्धि मिट गयी। अब वह भी 'पक्के बरतन' बन गये।

सबका ईश्वर एक

पेरिसमें, एक झोपडेमें, इब्राहीम अपनी बीवी और बच्चोंके साथ रहता था। अगरचे वह गरीब था मगर धर्मात्मा और उदार था। उसका घर शहरसे दस मील दूर था। आने-जानेवाले यात्री उसके यहाँ अक्सर ठहरा करते थे। इब्राहीम उनकी मुनासिब मेहमानवाज़ी करता था। जब यात्री परिवारवालोंके साथ भोजन करने बैठते, तब इब्राहीम खानेसे पहले एक प्रार्थना बोलता और ईश्वरका आभार मानता। उसके मेहमान भी प्रार्थनामें शामिल होते।

यह क्रम कुछ अरसे तक चलता रहा। लेकिन सब दिन समान नही होते। कुछ वर्षोंके बाद इब्राहीम बहुत ग़रीब हो गया। फिर भी उसने यात्रियोंका स्वागत करना बन्द न किया। वह और उसके परिवारवाले एक बार भोजन करते और दूसरी वक्तका खाना यात्रियोंके लिए रख छोडते। इससे इब्राहीमको बडा आनन्द होता, मगर साथ ही उसे यह अभिमान होने लगा कि वह बडा पुण्यात्मा है। वह अपने धर्मको भी दुनियाका सबसे बडा धर्म मानने लगा।

एक रोज़ एक थका-माँदा बूढा आदमी इब्राहीमके यहाँ आया। बेचारा बहुत कमज़ोर था। कमर कमानकी तरह झुकी हुई थी और कमज़ोरीके कारण उसके क़दम भी सीधे नही पडते थे। उसने इब्राहीमका दरवाज़ा खटखटाया। इब्राहीमने उसका स्वागत किया और आरामसे बैठाया। थोडी देरके बाद बूढा बोला—'बेटा, मैं बडी दूरसे आया हूँ, बहुत भूखा हूँ।'

इब्राहीम उठा और खाना लाया। खाना शुरू करनेसे पहले इब्राहीमने, हस्ब-मामूल, अपनी प्रार्थना पढी। उसकी स्त्री और बच्चोंने प्रभुके आभार-प्रदर्शनमें भी भाग लिया। इब्राहीमने देखा कि वह बूढा उनके साथ प्रार्थनामें शामिल नही हुआ। इसलिए उसने उससे पूछा—'क्या तुम हमारे

ईश्वरमें विश्वास नही करते ? तुमने हमारे साथ प्रार्थना क्यो नही बोली ?'

बूढेने जवाब दिया—'हम अग्निकी पूजा करते हैं।'

यह सुनकर इब्राहीम भडक उठा। उसने चिल्लाकर कहा—'अगर तुम्हें मेरे ईश्वरमें विश्वास नहीं है, और मेरी प्रार्थना बोलनेसे इनकार है, तो तुम इसी वक्त घरसे निकल जाओ।'

इब्राहीमने बिना खाना खिलाये बुड्ढेको घरसे निकाल दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया। लेकिन ज्यो ही उसने ऐसा किया कि कमरेमें प्रकाशकी एक ज्योति फैली और एक फरिश्ता प्रकट हुआ। और इब्राहीम-से बोला—'यह तुमने क्या किया ? ईश्वर इस ग़रीब बूढे आदमीका सौ वर्षसे भरण-पोषण करता रहा है मगर तुम धर्मात्मा बननेपर भी उसे सिर्फ इसलिए खाना न खिला सके कि वह अन्य धर्मावलम्बी है। दुनियामे कितने ही धर्म हों लेकिन ईश्वर एक है और वह सबका पिता है।'

यह कहकर फरिश्ता गायब हो गया। इब्राहीमको अपनी मूर्खताका ज्ञान हुआ। वह बूढेके पीछे भागा और उससे माफी मांगी। क्षमा करते हुए बूढेने कहा—'शायद तुमने अनुभव कर लिया कि ईश्वर एक है।' इब्राहीम यह सुनकर दंग रह गया, क्योंकि फरिश्तेने भी उससे यही बात कही थी।

भ्रम

एक युवकने बी० ए० पास किया। नौकरी मिली। शादी की। बीमा करवाया।

एक साधुने उससे पूछा—'अभी तो तुम्हारी उम्र छोटी है, इतनी जल्दी बीमा क्यो कराया ?'

युवक बोला—'महाराज ! जिन्दगीका क्या ठिकाना ! शायद कुछ हो गया तो मेरी पत्नीको कष्ट न हो इसलिए बीमा करवाया है ।'

इसपर साधुने कहा—'तब तू रोज भगवान्‌का नाम स्मरण करता रह ।'

युवक बोला—'उसके लिए अभी बहुत वक्त है । बुढापेमें देखूँगा ।'

यह सुनकर साधुको हँसी तो आयी मगर चुप रहा ।

भगवान्‌के भगवान् !

एक बार नारद ऋषि द्वारका आये । उन्हें रोक तो थी ही नहीं, अन्दर तक चले गये । पर कहीं भगवान् कृष्ण न दिखे । आखिर उन्होंने रुक्मिणीसे पूछा—'यजमान कहाँ हैं ?'

'पूजामें बैठे हुए हैं ।'

यह सुनकर नारद हैरतमें पड़ गये । सोचने लगे कि त्रिभुवनके ऋषि, मुनि, सन्त, सिद्ध, योगी, त्यागी, भोगी सब जिसको भगवान् मानकर पूजते हैं वह किसकी पूजा करता है ! नारद देवघरमें दाखिल हुए । देखते हैं कि भगवान् भक्तोंकी मूर्तियोंके सामने ध्यानावस्थित बैठे हुए हैं !

सुखी कौन ?

एक गाँवमें एक ब्रह्मचारी रहता था । हनुमान्‌के मन्दिरमें रहता, लगोटी लगाता, भिक्षा माँगता और उपासना, भजन, नामस्मरण करता हुआ आनन्दसे दिन गुजारता था ।

एक दिन एक बडा रईस उस मन्दिरमें आया । उसके नौकर-चाकर और ठाठ-बाट देखकर ब्रह्मचारीको लगा कि यह बडा सुखी आदमी होना चाहिए । उसने उससे पूछा । रईस बोला—'मैं सुखी कहाँ ! मेरे कोई बालबच्चा नहीं है । अमुक गाँवमें जो धनवान् रहता है उसके चार लडके हैं । वह है सच्चा सुखी ।'

ब्रह्मचारी उस श्रीमन्तके यहाँ गया। वह बोला—'अरे, मैं काहेका सुखी! मेरे लडके मेरी आज्ञा नही मानते। पढे-लिखे भी नही है। दुनियामें विद्याका मान है। उस गाँवमें जो विद्वान् रहता है वह है सच्चा सुखी।' ब्रह्मचारी उस विद्वान्के पास गया। उसने कहा—'मुझे सुख कहाँ! तमाम हड्डियाँ सुखाकर मैंने विद्या पढी, पर मुझे पेट भरने लायक भी नही मिलता। अमुक गाँवमें जो नेता रहता है सुखी तो वह है।' ब्रह्मचारी उस नेताके पास गया। नेता बोला—'मुझे सुख कैसे हो? मेरे पास धन है, विद्या है, कीर्ति है, बालबच्चे हैं। सब है, पर लोग मेरी वडी निन्दा करते हैं। यह मुझे सहन नहीं होता। उस गाँवमें हनुमान्के मन्दिरमें रहनेवाला, भिक्षा माँगकर भगवान्के भजन-उपासनामें मस्त रहनेवाला एक ब्रह्मचारी है। सचमुच सुखी आदमी कोई है तो वह है।' ब्रह्मचारी अपना ही वर्णन सुनकर शर्माया और अपनी जगह लौट आया और पूर्ववत् सुखसे रहने लगा।

द्रौपदी

युधिष्ठिर द्रौपदीको जुएमें हार गये। दुर्योधनने उसे सभामे लानेका हुक्म किया। दु शासन उसे सभामें खीचकर लाया और आज्ञा पाकर उसे नगी करने लगा! सारी सभा चुपचाप तमाशा देखती रही। द्रौपदीने धर्मराज युधिष्ठिरसे कहा—'आप मेरी रक्षा करें।' धर्मराज बोले—'सत्य मेरा व्रत है। उसे छोडकर मैं तेरी रक्षा नही कर सकता।' उसने भीमसे कहा। भीम बोले—'क्या करूँ! यह धर्मराज मुझे कुछ करने नही देते। इनकी आज्ञाका उल्लंघन मै कैसे करूँ?' उसने अर्जुनकी तरफ देखा। अर्जुन गरदन झुकाये वैठे रहे। नकुल व सहदेव भी यूँ ही रह गये। तब उसने भगवान्को पुकारा और उन्होंने उसकी लाज रखी।

इस घटनाके कुछ अर्से बाद एक रोज द्रौपदीने कृष्णसे पूछा—'कृष्ण! वस्त्रहरणके वक्त तू आने ही वाला था तो मेरी इतनी विडम्बना होने तक रुका क्यों रहा?' कृष्णने जवाब दिया—'मैं तो तेरी मददको आया हुआ था। लेकिन तेरा ध्यान मेरी तरफ़ नहीं था। तू अपने रक्षणके लिए पाण्डवोंपर आस लगाये थी। जब मुझे पुकारा तो मैंने तत्काल अपना काम शुरू कर दिया।'

दुनिया

एक साधुने चार वृद्धजन बुलाये और उनसे दुनियाका अनुभव पूछा—

पहला—'अरे दुनिया बडी मक्कार है! हरएक किसी-न-किसी तरहके छलसे अपना उल्लू सीधा करनेमें लगा हुआ है।'

दूसरा—'क्या कहें! आज दुनियामें इतनी अनीति बढ गयी है कि किसीका भी विश्वास नहीं किया जा सकता।'

तीसरा—'दुनियामें सब स्वार्थके सगे हैं।'

चौथा—'इस दुनियामें सुख व समाधान बिलकुल नहीं।'

सबकी सुनकर साधु बोला—'तो चलो भाई, हम सब सन्यास ले लें। ऐसी दुनियामें लगे रहनेसे क्या फायदा?···' आगे साधु क्या कहता है यह सुननेके लिए एक भी बुड्ढा न ठहरा!

दुनियाका सुख

एक आदमी जंगलमें-से जा रहा था। उसने एकाएक शेरकी दहाड़ सुनी। वह भागा। थोडी दूर भागनेपर उसे एक मदोद्धत हाथी दिखा जो उसकी तरफ लपककर आने लगा। आदमी बेचारा आडे रस्ते दौडने

लगा। पर घास वडी उगी हुई थी इसलिए रास्ता साफ न दिखनेके कारण वह कुएँमें जा गिरा। उसमें पानी ज्यादा नही था, पर वहाँ एक भयकर साँप था। उसे देखकर आदमी एक पेडकी जडके सहारे ऊपर चढने लगा और किनारेपर उगे हुए एक वृक्षकी डालको पकडकर लटक गया। एक सफेद और एक काला चूहा उस डालको काट रहे थे। नीचे साँप मुँह फाडे उसके गिरनेकी वाट देख रहा था। उस वृक्षपर मधु-मक्खियोका एक छत्ता था, जिससे कभी-कभी एक बूँद शहद टपकता था और उस आदमीकी नाकपर पडता था जिसे चाटकर वह सुख अनुभव करता था।

ऐसा है दुनियाका सुख!

खोटा वेदान्त

एक न्यायाधीश था। वह वडा भक्त था। एक बार एक चोर उसके सामने लाया गया। चोरने अपना जुर्म कवूल किया। सजा देनेसे पहले न्यायाधीश वोला—

'तुझे और कुछ कहना हो तो कह सकता है।'

चोर गम्भीर होकर कहने लगा—'जज साहव! आज आपके सामने खडा रहनेमें मुझे वडा आनन्द हो रहा है। मैंने सुना है कि आप बडे भक्त हैं। मुझे सिर्फ यही कहना है कि मैंने अपने वश चोरी नहीं की। भगवान्ने मुझे जैसी प्रेरणा दी वैसा मैंने किया। उसकी इच्छासे मेरे हाथो चोरी हुई है। इसलिए मुझे दोषी न ठहरायें।'

चोरकी वात सुनकर कचहरीवाले देखते-के-देखते रह गये।

लेकिन न्यायाधीश पक्का निकला। उसने फैसला दिया—'चोरका कहना मुझे पूरी तरह मान्य है। जिस भगवान्ने उसे चोरी करनेकी प्रेरणा

दी वही भगवान् मुझे उसे सज़ा देनेकी प्रेरणा कर रहा है। जैसे चोरी भगवान्की इच्छासे हुई वैसे ही सजा भी भगवान्की इच्छासे दी जा रही है। एक वर्ष, सख्त क़ैद।'

चिन्ता

चिन्ता बडी विलक्षण है। एक आदमीको लडकेकी शादीकी चिन्ता थी। कुछ दिनो वाद शादी हो गयी। तब इस वातकी चिन्ता लग गयी कि वहूका वर्तन अच्छा नही है। फिर इस वातकी चिन्ता लगी कि उसके वच्चा नही होता। कुछ समयमें उसके बच्चा हो गया लेकिन उस बच्चेको फिट आने लगे, इसलिए इसकी चिन्ता हो गयी। आखिर कुछ काल वाद वच्चेको फिट आना बन्द हुआ तो बुड्ढेको फिट आने लगे। उसकी चिन्ता करते-करते मर गया।

भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित
लेखककी अन्य कृतियाँ

१. ज्ञानगगा [पहला भाग] ६)
संसारकी श्रेष्ठ सूक्तियोका
सग्रह ।

२ ज्ञानगंगा [दूसरा भाग] ६)
ससारकी श्रेष्ठ सूक्तियोका
सग्रह ।

३. हास्य-मन्दाकिनी [प्रेसमे]
ससारके शिष्ट हास्य, व्यग्यो
और मजाकोका उत्कृष्ट
सग्रह ।